खण्ड-307, अंक-9
शुक्रवार, 31 ज्येष्ठ, शक संवत् 1896
(21 जून, 1974 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 307 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

1974

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, 21 जून, 1974

विधान सभा की बैठक, सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में, अध्यक्ष, श्री वासुदेव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य 389

अंगने लाल, श्री
अजीजुर्रहमान, श्री
अजीत प्रताप सिंह, श्री
अजीत सिंह, श्री
अठई राम, श्री
अनवार मोहम्मद, श्री
अनिरुद्ध राय, श्री
अबुल फैंज शाह, श्री
अब्दुल बाकी, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल रहमान खां नशतर, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
अवधेश कुमार, श्री
आगा जैदी, श्री
आनन्द स्वरूप, श्री
आबिद अली, श्री
आशाराम यादव, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
इन्द्रमोहनी, श्रीमती
इन्द्रलाल, श्री
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री (जिला जौनपुर)
ओम प्रकाश सिंह, श्री (जिला मिर्जापुर)
ओम प्रकाश, श्री (जिला मुरादाबाद)
ओम प्रकाश, श्री (जिला शाहजहांपुर)
कन्हैयालाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
का० मु० मुहीउद्दीन, श्री
काली चरन, श्री
काशीनाथ मेहरोत्रा, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशी प्रसाद, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृपा शंकर, श्री
कृष्ण दत्त, श्री (उर्फ बालराज)
कृष्णवीर सिंह, श्री
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्णा राय, श्री
केदार नाथ अग्रवाल, श्री
केशरी लाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
कैलाश सिंह, श्री
क्रान्ति कुमार, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
खूब चन्द, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा प्रसाद, श्री
गंगा सिंह, श्री

गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गया सिंह, श्री
गायत्री देवी, श्रीमती
गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गिरिजा शंकर पाठक, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपीनाथ कामेश्वरपुरी, श्री
गोरेलाल शाक्य, श्री
गोविन्द प्रसाद गैरोला, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री (जिला अल्मोड़ा)
गोविन्द सिंह, श्री (जिला टिहरी गढ़वाल)
गौरी शंकर, श्री (एडवोकेट)
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्द्र नारायण सिंह, श्री
चन्द्रपाल सिंह, श्री
चन्द्र भान आजाद, श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह, डाक्टर
चेतराम गंगवार, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जंग बहादुर, श्री (अतरौलिया, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, श्री (मेंहनगर, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, श्री (जिला बाराबंकी)
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदीश, श्री
जगदीश अवस्थी, श्री
जगदीश नरायण त्रिपाठी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
[illegible]र बाजपेयी, श्री
[illegible] आजमी, श्री
जमुना प्रसाद बोस, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराम [illegible]तम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
जुगल किशोर, श्री
झाम लाल अहिरवार, श्री
झिलमिट, श्री
तीरथ राम कोहली, श्री
तेजनरायन त्रिवेदी, श्री
तेज बहादुर, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
त्रिवेनी, श्री
दधीच सिंह, श्री
दया राम भास्कर, श्री
दर्लसिंह यादव, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनरायन बन महन्थ, श्री
दीपनारायण पाण्डेय, श्री
दुर्योधन, श्री
दुलारा देवी, श्रीमती
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
धर्मपाल सिंह, डाक्टर (जिला फर्रुखाबाद)
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
धीरेन्द्र सहाय, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजीर अहमद, श्री
नजुराम, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हे लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नारायण हरी शर्मा, श्री
नियाज हसन खां, श्री

निसार अहमद अंसारी, श्री
पुरुषोत्तम, श्री (जिला मिर्जापुर)
पुरुषोत्तम लाल, श्री (उर्फ राजा जी)
पूरन चन्द्र, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारेलाल, श्री (जिला अलीगढ़)
प्यारे लाल, श्री (जिला एटा)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्रकाश नारायण गुप्ता, डाक्टर
प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभु नारायण, श्री
प्रभू दयाल, श्री
प्रियदर्शी जेटली, श्री
प्रेम दत्त, श्री
फजलुररहमान, श्री
फरजन्द अली, श्री
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री
बंशीधर, श्री
बच्चा पाठक, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बलवान सिंह, श्री
बल्देव, श्री
बांके लाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू सिंह, श्री
बालकृष्ण सनवाल, श्री
बृजपाल सिंह, श्री
बेचन राम, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ यादव, श्री
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भारत सिंह चौहान, श्री
भीष्म, श्री
भृगुनाथ, श्री
भूपसिंह केन, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मनोराम, श्री
मंजूर अली खां, श्री (उर्फ शम्मू खां)
मन्ना लाल, श्री
मन्नी लाल, श्री
मलखान सिंह, श्री (जिला जालौन)
मलखान सिंह सैनी, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महावीर प्रसाद, श्री
महाबीर सिंह, श्री
महेन्द्र सिंह, श्री
महेश सिंह, श्री
माखन लाल मिश्र, श्री
माता प्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मान बहादुर सिंह, श्री
मुन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मुमताज मोहम्मद खां, श्री
मुलतान सिंह, श्री
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मुहम्मद मसूद, श्री
मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मूल चन्द, श्री
मेघनाथ सिंह, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहन सिंह, श्री
मोहम्मद अयूब, श्री
मोहम्मद असलम, श्री
मोहम्मद रफी खां, श्री
मोहम्मद शकील अहमद, श्री
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यशपाल सिंह, श्री
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ ललन जी)
रघुनाथ, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री

रघुबीर, श्री
रघुबीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)
रघुराज सिंह, श्री (जिला देवरिया)
रणंजय सिंह, राजा
रफीउल्ला, श्री
रमा, कुमारी
रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राघवेन्द्र सिंह, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राजपाल, श्री
राजबहादुर, श्री
राजबहादुर चन्द, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राम मंगल पाण्डेय, श्री
राजेन्द्र कुमार गर्ग, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद दौनेरिया, श्री
राजेन्द्र शाह, श्री
राजेन्द्र सिंह, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राधा चरण, श्री
राम अधार, श्री
राम औतार सिंह भदौरिया, श्री
रामगरीब, कैप्टेन
रामचन्द्र बक्श सिंह, श्री
राम जनम राय, श्री
राम जी, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
रामजीलाल सेन, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
राम देव यादव, श्री
राम नाथ, बाबा
राम नारायण पाठक, श्री
राम निहोर, श्री
राम पति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
राम पाल सिंह, श्री
राम पाल सिंह यादव, चौधरी
राम पूजन पटेल, श्री
राम प्यारे तिवारी, श्री
राम प्रकाश यादव, श्री
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री
राम बचन, श्री
राम बाबू, श्री
राममूर्ति, श्री
राम रतन सिंह, श्री
रामरति बिन्द एडवोकेट, श्री (जिला वाराणसी)
रामरती देवी, श्रीमती (जिला फैजाबाद)
राम रेखा यादव, श्री
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लखन, श्री (जिला बस्ती)
राम लाल राही, श्री
राम शिरोमणि दुबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
राम समुझ तिवारी, श्री
राम सुन्दर पाण्डेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम सेवक यादव, श्री
राम स्वरूप भारतीय, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रामायण राय, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
राव मुश्ताक, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूप राम, श्री
रेवती रमण सिंह, श्री (उपनाम मणी जी)
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी नरायन, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लालन शर्मा, श्री
लालू राम, श्री
लोकपति, श्री
विक्रम सिंह, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विमल प्रसाद, श्री
विश्राम, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वीर सिंह सेंगर, श्री
वीरेन्द्र कुमार, चौधरी
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर, श्री

वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शत रुद्ध प्रकाश, श्री
शफीकुल रहमान बर्क, श्री
शान्ति देवी, श्रीमती
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिव कुमार पाण्डेय, श्री
शिव कुमारी दुबे, श्रीमती
शिव कैलाश, श्री
शिवचरन लाल, श्री
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिव प्रसाद, श्री (जिला आगरा)
शिव प्रसाद, श्री (जिला आजमगढ़)
शिव लाल, श्री
शिव शंकर सिंह, श्री
शिव सम्पत्ति, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम मिश्रा, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा देवी, श्रीमती
श्रीनारायण, श्री (उर्फ भुलई भाई)
श्रीपाल सिंह, कुंवर
श्रीश चन्द्र, श्री
सच्चिदानन्द, श्री
सत्तार अहमद, श्री
सत्यपाल मलिक, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय, श्री
सत्यवीर सिंह, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सन्तोष कुमारी पाठक, श्रीमती
सरस्वती टम्टा, श्रीमती
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री
सलाहउद्दीन, श्री (उर्फ नब्बन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदराज सिंह, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल, श्री
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री
सुलतान सिंह, श्री
सैयद मुर्तजा अली खां, नवाब
सोहन लाल, श्री (जिला बदायूं)
सोहन लाल, श्री (जिला रामपुर)
सोहन लाल धुसिया, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिकेवल, श्री
हरिराम, श्री
हरीश कुमार गंगवार, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम सिंह, श्री
हुब राज, श्री
हेमराज, श्री

प्रश्नोत्तर

शुक्रवार 21 जून, 1974

अल्प-सूचित तारांकित प्रश्न

ग्राम लक्ष्मनपुर सुसेला (जिला गोंडा) में गेस्ट्रो एन्ट्राइटिस से मृत्यु

**1—श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)—

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि ग्राम लक्ष्मनपुर, सुसेला, सेक्षिया विकास क्षेत्र तरबगंज, जिला गोंडा में 5 व्यक्तियों की मृत्यु (कालरा हैजा) अप्रैल-मई, 1974 में हो गई ? यदि हां, तो उक्त क्षेत्र में कालरा रोके जाने हेतु विभाग ने क्या प्रयत्न किये ?

श्रम मंत्री (श्री राजमंगल पांडेय)--

जी नहीं, इन ग्रामों में कोई मृत्यु हैजे से नहीं हुई। लक्ष्मणपुर ग्राम में 2 मृत्युएं गैस्ट्रो-इण्ट्राइटिस के कारण अवश्य हुई।

उक्त क्षेत्रों में गैस्ट्रोएण्ट्राइटिस एवं हैजे की रोकथाम के प्रयोजन से पर्याप्त संख्या में हैजा निरोधक टीके लगाये गए तथा कुंओं में कीटाणु नाशक दवायें डाली गईं।

श्री त्रिवेणी सहाय---

क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जो 2 आदमी मरे वह गांव में मरे या अस्पताल में मरे ? यदि ,अस्पताल में मरे तो किस डाक्टर ने उनको देखा ?

श्री राज मंगल पांडेय--

मान्यवर इसका विवरण मेरे पास नहीं है। लेकिन जहां तक मुझे पता है वह गांव में मरे हैं।

श्री त्रिवेणी सहाय--

यह व्यवस्था का प्रश्न है। जो 2 व्यक्ति मरे इसकी रिपोर्ट इनको कैसे मिली ? यह जानकारी दें। इसकी जानकारी मंत्री जी को होनी चाहिये थी।

श्री अध्यक्ष--

सूचना होनी चाहिए लेकिन है नहीं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)--

माननीय मंत्री जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि गोंडा में 2 व्यक्ति बीमारी से मरे और इसमें भी विवाद हुआ कि 2 मरे या 5 व्यक्ति मरे। वहां का हेल्थ आफिसर अयोग्य व्यक्ति है। क्योंकि वह न तो दौरे पर जाता है और न अपनी डायरी भरता है। क्या मान्यवर मंत्री जी को पता नहीं है कि कितने आदमी हैजे से मरे तथा कितने चेचक से। हेल्थ आफिसर ने कब-कब विजिट किया ?

श्री राजमंगल पांडेय--

मान्यवर पहले पहल मुझे 20 अप्रैल को इत्तिला मिली।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

मान्यवर मेरा कहना है कि वहां का डाक्टर दौरा नहीं करता है और डायरी भी नहीं भरता तो क्या सरकार इसकी जांच करायेगी ?

श्री अध्यक्ष--

आपकी जो सूचना है कि वह अधिकारी कर्तव्यहीन था और वह दौरा नहीं करता है तो इसकी जांच मंत्री जी करा लें।

श्री राज मंगल पाण्डेय--

यदि त्रिपाठी जी के पास कोई इत्तिला है तो मुझे यदि देंगे तो हम जांच करा लेंगे।

श्री त्रिवेणी सहाय--

मान्यवर जो निरोधक टीके लगे और कुओं में दवा छिड़की गई तो क्या मंत्री जी बतायेंगे कि कितने टीके लगाये गये और कितने कुओं में दवा छिड़की गई ?

श्री अध्यक्ष---

दो की मृत्यु यह मानते हैं और 5 की आप मानते हैं।

श्री त्रिवेणी सहाय---

मान्यवर मेरा प्रश्न यह नहीं है । वैसे तीन गांव सभाओं में तीन आदमी मरे हैं । मैं तो यह प्रश्न कर रहा था कि निरोधक टीका कितनों को लगाया गया है और कितने कुओं में दवा डाली गई है ? क्या यह निरोधक टीका उनके मरने के बाद लगाया गया है ?

श्री अध्यक्ष---

मरने के बाद कैसे लगाया जा सकता है।

श्री त्रिवेणी सहाय---

मेरे कहने का तात्पर्य यह था कि उस गांव में लोगों को जो टीका लगा क्या उन व्यक्तियों के मरने के बाद लगा ?

श्री राजमंगल पाण्डेय---

जिस गांव में यह व्यक्ति मरा है वह 369 की बस्ती है जिसमें से 305 के टीके लगाये गये।

श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)---

क्या माननीय मंत्री जी इस बात को देखते हुये कि इस जिले में चेचक का बड़ा भारी प्रकोप है, जो नया हेलीकाप्टर खरीदा है उस पर स्वयं जाकर इस स्थान पर जाकर जांच करेंगे ? क्योंकि चुनाव के समय तो गये थे, जहां अब ऐसी विभीषिका फैली हुई है, क्या वहां नहीं जा कर देखेंगे ?

श्री अध्यक्ष---

यह तो व्यंगात्मक है।

श्री राम नारायण पाठक (जिला कानपुर)---

क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जब से सरकार बनी है तब से कितने सरकारी अस्पतालों का और कहां-कहां निरीक्षण किया है ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

श्री वीरेन्द्र वर्मा (जिला मुजफ्फरनगर)---

मान्यवर मेरी भी इस प्रश्न में दिलचस्पी है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी---

मंत्री जी तो अस्पताल में ही रहते हैं, विजिट करने की जरूरत ही नहीं है ।

शहरी सम्पत्ति की बिक्री पर रोक

**2---श्री हरीश चन्द्र खण्डेलवाल (जिला पीलीभीत) (अनुपस्थित)---

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि शहरी सम्पत्ति की बिक्री पर लगी रोक हटाने का प्रश्न शासन के विचाराधीन है ? यदि हां, तो यह रोक कब तक हटा ली जायेगी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

राजस्व मंत्री (श्री स्वामी प्रसाद सिंह)--

शहरी सम्पत्ति की बिक्री पर लगी रोक की वर्तमान मियाद सितम्बर 30, 1974 तक है। इस पाबन्दी को उक्त तिथि से पूर्व हटाने का प्रश्न नहीं उठता।

तारांकित प्रश्न

जिला कानपुर के ग्राम सिड़मरा में एलोपैथिक अस्पताल की स्थापना

*1--चौधरी रामपाल सिंह यादव (जिला कानपुर)--

क्या स्वास्थ्य मन्त्री कृपया बतायेंगे कि तत्कालीन संविद सरकार के समय स्वास्थ्य मन्त्री ने कानपुर जिले के सिड़मरा ग्राम में एलोपैथिक अस्पताल के खोले जाने के सम्बन्ध में आदेश दिया था? यदि हां, तो अब तक अस्पताल की व्यवस्था न किये जाने का क्या कारण है और कब तक इसके पूरा हो जाने की सम्भावना है?

श्री राजमंगल पांडेय--

ऐसे कोई आदेश उपलब्ध नहीं है। इस वर्ष प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों में ग्रामीण एलोपैथिक अस्पतालों की स्थापना की कोई योजना नहीं है।

चौधरी रामपाल सिंह यादव--

क्या माननीय मन्त्री जी यह बतायेंगे कि प्रदेश में मैदानी इलाकों में जब कभी भी एलोपैथिक के अस्पताल खोलेंगे तो क्या सिड़मरा ग्राम में खोलने की व्यवस्था करेंगे और स्थापित करेंगे?

श्री राजमंगल पाण्डेय--

इस प्रश्न का उत्तर आ चुका है कि इस वर्ष एलोपैथिक अस्पताल खोलने का प्रश्न विचाराधीन नहीं है। अगले साल के लिये अभी से क्या कहा जा सकता है।

चौधरी रामपाल सिंह यादव--

क्या माननीय मन्त्री जी बतायेंगे कि इस बार इस वर्ष क्यों नहीं एलोपैथिक अस्पताल पूरे प्रदेश में खोल रहे हैं, उसके कौन-कौन से कारण हैं? इसका उत्तर दिलवाइये।

श्री अध्यक्ष--

बजट भाषण में भी उत्तर है और यहां भी उत्तर दिया जा चुका है और वही आप दोहराना चाहते हैं, इससे अगले सवालों का नुकसान होगा।

श्री राजमंगल पाण्डेय--

कई कारण हैं। पहला कारण तो आर्थिक स्थिति है। दूसरा कारण यह है कि जो अस्पताल हैं उन्हीं का सुदृढ़ीकरण कर रहे हैं जिससे कि रोगियों का अच्छा उपचार हो सके। इन्हीं अस्पतालों में दवाएं देकर, डाक्टर और वैद्य देकर सुदृढ़ीकरण कर रहे हैं। इसलिए नये अस्पतालों को रोकना पड़ रहा है।

श्री राम नारायण पाठक--

मान्यवर, मन्त्री जी ने कहा कि जो अस्पताल हैं उन्हीं की अच्छी देखरेख कर रहे हैं। मैंने पूछा था कि नई सरकार बनने के बाद मन्त्री जी कितनी बार खुद अस्पतालों का निरीक्षण करने गये?

श्री अध्यक्ष—

यह प्रश्न इससे कहां उठता है। आप अनावश्यक सवाल पूछते हैं। आप शासक दल में है। चिट्ठी लिखकर उनसे पूछ लें।

कानपुर के चकबन्दी अधिकारी श्री आर० एन० गुप्ता के विरुद्ध शिकायतें

*2—चौधरी रामपाल सिंह यादव—

क्या राजस्व मन्त्री कृपया बतायेंगे कि कानपुर जिले में नियुक्त चकबन्दी अधिकारी, आर0 एन0 गुप्ता जिला कानपुर में इस नियुक्ति के पूर्व भी रह चुके हैं? यदि हां, तो कितनी अवधि तक रहे? क्या यह भी सही है कि आर0 एन0 गुप्ता की इस बार पुनः कानपुर में नियुक्ति पर डी0 डी0 सी0 ने असहमति प्रकट की थी? यदि हां, तो इस असहमति और कानपुर में बार-बार नियुक्त करने का क्या कारण है और क्या यह भी सही है कि जब से यह डेरापुर तहसील में नियुक्त किये गये हैं, इनके विरुद्ध रिश्वत खोरी और मनमानी की अनेक शिकायतें हैं? यदि हां, तो सरकार द्वारा इसमें क्या कार्यवाही की जा रही है?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी हां। श्री आर0 एन0 गुप्ता, चकबन्दी अधिकारी जिला कानपुर में अपनी वर्तमान नियुक्ति के पूर्व भी दिनांक 23-10-64 से 24-6-67 तक रहे। यह सही नहीं है कि श्री आर0 एन0 गुप्ता की इस बार कानपुर में पुनः नियुक्ति पर उप संचालक चकबन्दी ने असहमति प्रकट की थी। कानपुर जिले में प्रथम नियुक्ति के पांच वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् ही श्री गुप्ता को उसी जिले में नियुक्त किया गया है जो शासन की सामान्य नीति के प्रतिकूल नहीं है। डेरापुर तहसील में श्री गुप्ता के विरुद्ध रिश्वतखोरी तथा मनमानी के केवल दो शिकायती पत्र प्राप्त हुए थे जो अज्ञात व्यक्तियों द्वारा दिये गये थे तथा जांच के पश्चात् उनमें अंकित आरोप निराधार पाये गये थे। अतः श्री गुप्त के विरुद्ध किसी प्रकार की कार्यवाही किये जाने का प्रश्न नहीं उठता है।

चौधरी रामपाल सिंह यादव—

क्या माननीय मन्त्री जी बतलायेंगे कि सी0 ओ0 श्री गुप्ता के विरुद्ध मनमानी और रिश्वतखोरी के जो दो पत्र प्राप्त हुए थे तो उन पर कौन से आरोप थे और कब किस ने उनकी जांच की ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, पहला जो शिकायती पत्र था उसमें किसी का नाम नहीं है। लिखा है आपका विश्वास पात्र एक कृषक, झिझक तारीख भी इसमें नहीं है। इसकी जांच एस0 ओ0 सी0 साहब ने 3/4 को की। दूसरा जो शिकायती पत्र है उसमें भी किसी का नाम नहीं है और तारीख भी नहीं है। एक अधिवक्ता प्रार्थी का नाम है। इसकी भी जांच एस0 ओ0 सी0 ने की।

चौधरी राम पाल सिंह यादव—

आरोप क्या थे?

श्री अध्यक्ष—

रिश्वतखोरी तथा मनमानी, यह लिखा हुआ है।

चौधरी रामपाल सिंह यादव—

कौन-कौन से आरोप थे यह बतलायें। कहीं कोरे कागज की तो जांच नहीं करवा ली।

श्री अध्यक्ष---

यह तो आपका सुझाव है ।

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)---

रिश्वतखोरी और मनमानी के आरोप हैं । शिकायती पत्र में रिश्वतखोरी और मनमानेपन की जो शिकायत है उसको पढ़कर मन्त्री जी बतलायेंगे कि वह क्या है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

पहली दरखास्त में यह है कि रात में गुप्ता जी के घर में दो चार दलाल बैठे थे । प्रार्थी से 500 रुपया मांगा गया और धमकी दी गयी । 500 रुपया मांगा गया । प्रश्नकर्त्ता का नाम नहीं है तो किससे इंक्वायरी की जाय ?

दूसरा प्रार्थना-पत्र जो है, उसमें नाम नहीं है । अगर विधायक महोदय नाम बतला दें, तो जांच की जा सकती है ।

चौधरी रामपाल सिंह यादव---

कानपुर जिले में चकबन्दी में व्यापकरूप से भ्रष्टाचार है और इन्हीं सी0 ओ0 क्षेत्र के सर्किल में एक ए0 सी0 ओ0 मि0 गुप्ता को 500 पये लेते हुए लखनऊ की सी0 आई0 डी0 द्वारा गिरफ्तार किया गया है, तो जब भ्रष्टाचार वहां ऐसी सीमा पर पहुंच गया है, तो इसको रोकने के लिये क्या मन्त्री जी कोई उपाय करेंगे?

श्री अध्यक्ष---

यह तो जनरल सवाल है । आपने एक व्यक्ति के ऊपर प्रश्न किया । जब उस व्यक्ति के ऊपर से जो दोष है, उसको खिसकते हुए देख रहे हैं, तो सामान्य स्थिति का फायदा लेते हुए ऐसा प्रश्न करें तो यह ठीक नहीं है ।

श्री हरीश कुमार गंगवार---

इस बात को देखते हुए कि कानपुर जिले की चकबन्दी के सम्बन्ध में भ्रष्टाचार की शिकायत आये दिन इस सदन में प्राप्त होती रहती है और इस बात को देखते हुए कि यह व्यक्ति 3 साल और भी यहां रह चुके हैं और दुबारा फिर से वहां पोस्ट किये गये हैं, तो सरकार इस व्यक्ति को वहां से हटाने की कृपा करेगी?

श्री अध्यक्ष---

आप ऐसा प्रश्न [illegible] नहीं कर सकते हैं क्योंकि हो सकता है कि वह व्यक्ति निरपराध हो । जो व्यक्ति आपके [illegible] आरोप का यहां जवाब नहीं दे सकता है, उसको नहीं लाया जा सकता है ।

श्री राम सेवक यादव---

मान्यवर, मैं माननीय मन्त्री जी से जानना चाहता हूं कि इन आर0 एन0 गुप्ता, सी0 ओ0 के अधीनस्थ किसी ए0 सी0 ओ0 के खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायत मिली और उन्होंने क्यों ध्यान नहीं दिया और बाद में वह रंगे हाथ पकड़े गये?

श्री अध्यक्ष---

यह दूसरा प्रश्न है ।

श्री रामसेवक यादव

सी० आई० डी० के जरिये पकड़ा गया था। मन्त्री जी को जानकारी निश्चित रूप से होगी, मान्यवर।

श्री अध्यक्ष---

यह दूसरा प्रश्न कर रहे हैं। यह इससे सम्बद्ध नहीं है।

श्री केशरी लाल (जिला कानपुर)---

मान्यवर, मैं मन्त्री जी से जानना चाहता हूं कि जिस एस० ओ० सी० से इस सी० ओ० की जांच कराई जा रही है उनके खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायत थी और उसी आधार पर उनका ट्रांसफर किया गया है, तो क्या भ्रष्ट आदमी के द्वारा जांच करायेंगे ?

श्री अध्यक्ष---

यह तो दूसरा सवाल हो गया, एस० ओ० सी० के खिलाफ बात हो गयी।

इन्फैक्शन्स डिजीज, अस्पताल लखनऊ का नगरपालिका द्वारा सरकार को हस्तान्तरण

*3---श्री भीखा लाल (जिला उन्नाव) (अनुपस्थित)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इन्फैक्शंस डिजीज अस्पताल, लखनऊ नगरपालिका द्वारा कब सरकार को हस्तान्तरित किया गया था? क्या यह सही है कि हस्तान्तरण के इकरारनामें पर सरकार द्वारा अभी तक हस्ताक्षर नहीं किये गये हैं?

श्री राजमंगल पांडेय---

हस्तांतरण दिनांक 1 मई, 1966 को हुआ। हस्तांतरण के इकरार नामे पर अभी तक सरकार द्वारा हस्ताक्षर नहीं हुए हैं।

*4---श्री फिरंगी प्रसाद विशारद---

[निरस्त]

जनपद, गोरखपुर में उपल वृष्टि से रबी की फसल को क्षति तथा शासन द्वारा तकावी का वितरण

*5---फिरंगी प्रसाद विशारद (जिला गोरखपुर)---

क्या सरकार को ज्ञात है कि जनपद गोरखपुर में माह मार्च, 1974 में घनघोर उपलवृष्टि हुई है? यदि हां, तो निर्वाचन क्षेत्रानुसार किन-किन गांवों की खड़ी रबी की फसल की 50 प्रतिशत या इससे अधिक क्षति हुई है तथा शासन ने राहत कार्य हेतु क्या कार्यवाही की अथवा करने जा रही है?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

जी हां, खड़ी रबी की फसल को 50 प्रतिशत या उससे अधिक क्षति वाले निर्वाचन क्षेत्रानुसार गांवों की सूची संलग्न है। सहायता कार्य हेतु शासन द्वारा एक लाख रुपया आपदा तकावी तथा पचास हजार रुपया निःशुल्क सहायता हेतु आवंटित किया गया। भू-राजस्व आदि में नियमानुसार छूट/स्थगन भी स्वीकृत किया जायगा।

(देखिये सत्थी 'क' आगे पृष्ठ 1035-1038 पर)

श्री फिरंगी प्रसाद विशारद---

माननीय मन्त्री जी के उत्तर से संबंधित क्या माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि उनकी रिपोर्ट के आधार पर सदर में 20 गांव, फरेंदा तहसील में 72 गांव और महाराजगंज तहसील में 212 गांव की संख्या दी है । शेष तो क्या इस रिपोर्ट को देखते हुये और मेरी जानकारी के आधार पर मन्त्री जी बांसगांव तहसील की इस ओले की दृष्टि से प्रभावित होने के सम्बन्ध में जांच करायेंगे और जो राहत-कार्य कम हुआ है, उसको बढ़ाने की कृपा करेंगे?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

बांसगांव के सम्बन्ध में जांच करा लूंगा । रिपोर्ट से नहीं मालूम होता कि वहां कोई क्षति हुई है और सहायता का में लिये कोई कमी पड़ेगी तो फिर भेज दूंगा ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)---

लगभग 350 गांवों में ओले से क्षति हुई है और 50 पैसे से 80 पैसे तक क्षति हुई है लेकिन राहत कार्यों के लिये वहां 1 लाख रुपया भेजा गया है तो उस 1 लाख पये में क्या राहतें पहुंचाई गयी और कोई टेस्ट वर्क चालू किया गया या नहीं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

इसकी सूचना की आवश्यकता होगी वहां क्या-क्या राहत कार्य हो रहा है ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी---

क्या राहत कार्य वहां किया गया इसके लिये सूचना की क्या आवश्यकता है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

एक गांव के राहत कार्य का प्रश्न है । उसे मंगा लूंगा ।

श्री फिरंगी प्रसाद विशारद---

राजस्व सम्बन्धी वसूली स्थगित करने की बात आपने कही है तो क्या आज की तारीख के पूर्व कोई कार्यवाही आपने की है और यदि नहीं की है, तो क्या उसके लिये आदेश जारी कर देंगे?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

जिलाधिकारियों को पहले से यह आदेश है कि जहां इस तरह से हो वहां अपने आप स्थगन कर दें । नहीं किया है तो माननीय सदस्य कहेंगे तो फिर से आदेश भेज दूंगा । वैसे स्थगन हो गया होगा और माननीय सदस्य को उसकी जानकारी नहीं होगी ।

देहरादून के जौनसार बाबर क्षेत्र के संबंध में हिमांचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश सरकार के मध्य सीमा विवाद

*6—श्री ऊदल (जिला वाराणसी)---

क्या वन मन्त्री को यह जानकारी है कि हिमांचल प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश में उत्तर काशी के नैटवाड़गांड़े एवं जौनसार बावर देहरादून की कई हजार एकड़ चारागाह एवं कीमती वनों पर अवैध ढंग से कब्जा कर लिया है ? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई ?

वन मन्त्री (श्री अजीत प्रताप सिंह)---

हिमांचल प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश में उत्तर काशी के नैटवाड़गाड अथवा अन्य किसी भी वन क्षेत्र में अवैध अधिकार नहीं किया है ।

जिला देहरादून के जौनसार क्षेत्र (खत देवधार) के सम्बन्ध में हिमांचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के मध्य सीमा विवाद चल रहा है। इस विवाद को निपटाने के लिये दोनों प्रदेशों के राजस्व अधिकारियों का संयुक्त रूप से कई बार विचार विमर्श भी हो चुका है एवं स्थानीय निरीक्षण भी किया जा चुका है परन्तु दोनों पक्ष अभी तक एकमत नहीं हो पाये हैं। इसी कारण दोनों प्रदेशों की सीमा के बीच स्तम्भों का निर्माण नहीं हो पाया है। जब तक सीमा विवाद तय नहीं हो जाता तब तक इस निष्कर्ष पर पहुंचना सम्भव नहीं है कि हिमांचल प्रदेश ने उत्तर प्रदेश के जौनसार बावर क्षेत्र की कितनी भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर रखा है।

श्री ऊदल—

वन मन्त्री बतलाने की कृपा करेंगे कि यह कितना एकड़ भूमि के सम्बन्ध में विवाद है।

श्री अजीत प्रताप सिंह ——

लगभग 200 से 250 एकड़ के बीच में है।

श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)—

जब दोनों पक्ष अभी तक एकमत नहीं हैं और ऐसी स्थिति है तो इसके लिये माननीय मन्त्री ने क्या हल ढूढ़ा है और इसका निर्णय कौन करेगा ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

हम तो इतना ही कह सकते हैं कि सन् 66 में दोनों प्रांतों के वन अधिकारियों की एक मीटिंग हुई थी देहरादून में, उसके बाद कोई मीटिंग नहीं हुई। इसको तय करने के लिए हम फिर प्रयास करेंगे।

श्री ऊदल—

इस प्रश्न पर विचार करने के लिए दोनों सरकार के राजस्व विभाग के अधिकारी कई बार मिले लेकिन उनका एक निश्चित मत नहीं बन सका तो क्या इस मामले को किसी पंच के सुपुर्द करने की कृपा करेंगे ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

अभी ो ऐसा कोई विचार नहीं है।

श्री वीरेन्द्र वर्मा—

मान्यवर, माननीय मन्त्री जी ने कहा कि हिमांचल प्रदेश और उत्तरकाशी के बीच भूमि का कोई झगड़ा नहीं है। तो क्या वे बताने की कृपा करेंगे कि कोई बाउन्डरी पिलर्स उन दोनों के बीच में स्थापित होगा जो बाउन्डरी को डिमारकेट करता है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह——

अगर कोई झगड़ा नहीं है तो अवश्य ही कोई न कोई बाउन्डरी होगी।

श्री हरीश कुमार गंगवार——

मन्त्री महोदय ने कहा कि कोई नाजायज कब्जा नहीं है। मैं उनसे स्पष्ट रूप से यह पूछना चाहता हूं कि जो यह दो-ढाई सौ एकड़ का विवाद है उस पर इस समय उत्तर प्रदेश का कब्जा है या हिमांचल प्रदेश का कब्जा है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

हिमांचल प्रदेश का कब्जा है।

श्री गोविन्द सिंह नेगी—

माननीय मन्त्री जी ने कहा कि डिमारकेशन नहीं है तो क्या मन्त्री जी के पास इस बात की सूचना है कि जौनसार-भाबर जो जिला देहरादून का क्षेत्र है उसमें फारेस्ट सेटिलमेंट हो चुका है और उसके बीच डिमारकेशन हो चुका है लेकिन हिमांचल प्रदेश उसको नहीं मान रहा है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

यह रिजर्व फारेस्ट नहीं है। डिप्टी कमिश्नर के अन्तर्गत आता है।

श्री राम नारायण पाठक—

क्या मन्त्री जी ने विवादग्रस्त क्षेत्र का दौरा किया है ? यदि हां, तो कब ?

श्री अध्यक्ष—

आपको इसी में दिलचस्पी रहती है कि किस मन्त्री ने कहां दौरा किया !

श्री जगदीश अवस्थी (जिला कानपुर)—

क्या मन्त्री जी यह बतायेंगे कि किन-किन मदों पर हिमांचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बीच मुख्यतया मतभेद है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

इसके लिये सूचना की आवश्यकता होगी।

जिला मिर्जापुर को सूखा क्षेत्र घोषित करने की मांग

*7—श्री सूबेदार प्रसाद (जिला मिर्जापुर) (अनुपस्थित)—

क्या राजस्व मन्त्री कृपया बतायेंगे कि जनपद मिर्जापुर को इस वर्ष 1974 में सूखा क्षेत्र घोषित किया गया है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी नहीं, क्योंकि इस प्रकार की औपचारिक घोषणा कभी नहीं की जाती, फिर भी हर प्रकार की सहायता की व्यवस्था जिस हद तक आवश्यक है, की जा रही है।

उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा राज्यों के विवाद ग्रस्त अन्तर्राज्जीय मामले को केन्द्रीय सरकार को सुपुर्द करने का प्रस्ताव

*8—श्री कल्याण सिंह (जिला अलीगढ़) तथा श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि दिनांक 1 मई, 1974 से दिनांक 10 मई, 1974 के मध्य हरियाणा सरकार का कोई ऐसा प्रस्ताव उत्तर प्रदेश सरकार को प्राप्त हुआ है जिसमें उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा राज्यों के विवादग्रस्त अन्तर्राज्जीय मामलों को केन्द्रीय सरकार को सौंपे जाने का उल्लेख है ? यदि हां, तो प्रस्ताव किस तिथि को प्राप्त हुआ और वह प्रस्ताव क्या है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

हरियाणा सरकार का 1-5-74 से दिनांक 10-5-74 के मध्य ऐसा कोई प्रस्ताव उत्तर प्रदेश सरकार को प्राप्त नहीं हुआ है।

श्री कल्याण सिंह—

अध्यक्ष महोदय, आपको मालूम है कि उत्तर प्रदेश और हरियाणा के बीच में अन्तर्राज्जीय मामले पर विवाद है जो कि केन्द्रीय सरकार को सौंपा गया है। हो सकता है जिस तिथि को मैंने पूछा है उस तिथि के मध्य हरियाणा सरकार से उत्तर प्रदेश सरकार को कोई प्रस्ताव न आकर किसी आस-पास की तिथियों में आया हो। तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि वे कौन-कौन से मामले हैं जिनके ऊपर विवाद चल रहा है और वह कब से चल रहा है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

माननीय सदस्य ने कहा कि उन तिथियों में न आया हो किसी अन्य तिथि में आया हो। तो यह जरूर है कि इन तिथियों में कोई प्रस्ताव नहीं आया है।

श्री कल्याण सिंह—

जो विवाद है वह किन मामलों पर ? ऐसा प्रस्ताव किन्हीं आगे पीछे की तिथियों में आपको प्राप्त हुआ होगा। मैं यह पूछना चाहता हूं कि आपको ऐसा प्रस्ताव प्राप्त हुआ है या नहीं ? यदि प्राप्त हुआ है तो उसमें क्या-क्या लिखा हुआ है और किन मामलों पर विवाद है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

माननीय सदस्य ने प्रश्न पूछा कि हरियाणा से प्रस्ताव आया, तो वह बात सही नहीं है। लेकिन यहां विवाद है। ऐसी बात है कि हरियाणा और उत्तर प्रदेश की जो जमुना बार्डर लाइन बनाती है उसमें जो स्ट्रीम है उसको हरियाणा बाउन्डरी नहीं मानता है। हमारे इधर के जो चार जिले हैं सहारनपुर, मेरठ बुलन्दशहर और अलीगढ़ और हरियाणा के जो जिले इस तरफ हैं वे करनाल, रोहतक और गुड़गांव हैं। इन जिलों के बीच की जो बाउन्डरी है उसके बीच का डिस्प्यूट है। हरियाणा की गवर्नमेंट का यह कहना है कि यह जो मेन स्ट्रीम जमुना की है, वह बाउन्ड्री लाइन नहीं है और एक नाला जो जमुना से आगे निकला है वह वास्तव में है। उसे वह मानते हैं। एक डिस्प्यूट यह है और दूसरा डिस्प्यूट यह है—यू० पी० का प्रस्ताव यह है कि यह बाउन्ड्री लाइन जिन-जिन जगह पर परमानेन्ट नहीं है उन सब जगह पर उसे पूरा कर दिया जाये, किन्तु हरियाणा सरकार का कहना यह है कि सिर्फ उन्हीं जगह झगड़ा तय किया जाए जहां बाउन्ड्री लाइन नहीं है और जहां झगड़ा नहीं है, न तय किया जाए, वहां तय करने की आवश्यकता नहीं है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

यह देश का दुर्भाग्य है कि एक अन्तर्राज्जीय मामले में जो झगड़ा होता है, वह दो दुश्मनों के बीच का झगड़ा —जैसा रूप खड़ा कर देता है। उसमें फायरिंग हुई और कई जानें भी गयीं। तो कितने दिनों से यह झगड़ा चल रहा है ? इसका निपटारा करने के लिए हमारी सरकार ने क्या सोचा है, जिससे कि जल्दी से जल्दी इसका निपटारा हो जाए ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

इस झगड़े के निपटारे के लिये श्री दीक्षित साहब जो केन्द्र के मन्त्री हैं, दोनों पार्टियों की तरफ से तय हो गये हैं। वहां पर दोनों पक्षों की तरफ से विवाद प्रस्तुत कर दिया गया है और अब यह उनके सुपुर्द है।

श्री कल्याण सिंह—

क्या राजस्व मन्त्री बतायेंगे कि क्या उनकी जानकारी में यह बात आई है कि हरियाणा सरकार ने जहां सीमा मिलती है, वहां पर कई बांध-बांध कर उत्तर प्रदेश की तरफ पानी बहाना शुरू कर दिया है, जिससे उत्तर प्रदेश की काफी भूमि जलमग्न हो जाएगी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

बनवाना शुरू किया था, किन्तु वह अभी पूर्ण-रूप से बन नहीं पाया है। अब उसे रोकने के लिये लिख दिया गया है।

श्री तेज सिंह (जिला बुलन्दशहर)—

जब से यह झगड़ा सेन्ट्रल के सुपुर्द कर दिया गया है और दोनों मुख्य मन्त्रियों के बीच तय हो गया है कि अब कोई कार्यवाई इस पर नहीं होगी, किन्तु उसके बाद भी वह बांध बराबर लगाया जा रहा है और लग रहा है ? क्या मंत्री जी को इसकी जानकारी है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

इसके लिये सूचना की आवश्यकता होगी।

चौधरी चरणसिंह (जिला मेरठ)—

सन् 54-55 में मुजफ्फरनगर के सामने उनकी जो सीमा पड़ती है, उसमें उन्होंने बांध बनवाया था, जिसकी वजह से जमुना का पानी हमारे उत्तर प्रदेश की तरफ आया था और बहुत से गांवों की जमीन उसने खराब कर दी थी और वह ऐसा प्रायः करते रहते हैं और कहते हैं कि यह गांव वालों ने किया जबकि उनके इंजीनियर यह सब करते हैं। क्या यह पुरानी बात आपको मालूम नहीं है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

यह जरूर है कि बार-बार वह झगड़ा करते रहते हैं और आतंक मचाते रहते हैं, यू० पी० की जमीन पर झगड़ा करने की कोशिश करते रहते हैं।

श्री रामसेवक यादव—

क्या मन्त्री जी को जानकारी है कि यह सब कार्य सरकारी स्तर पर और इंजीनियर्स स्तर पर होता है और इसकी जिम्मेदारी वहां के लोगों पर छोड़ दी जाती है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

इसकी सूचना तो नहीं है। लेकिन इसमें बड़े-बड़े लोग रहते हैं। अब मैं इस राजस्व विभाग में आया हूं। मुझे विश्वास है कि जरूर अब मेरे वक्त में यह मामला तय हो जाएगा। आप मुझ पर विश्वास रखें।

श्री कल्याण सिंह—

इस विवाद को लेकर कई बार झगड़े हो चुके हैं, कई बार उन्होंने यू० पी० की फसलें काटीं तथा पशुओं को भगा ले गये हैं। तो यह महत्वपूर्ण मामला कब सौंपा गया है केन्द्र को दोनों प्रांतों की सरकारों द्वारा और कब तक आप इसका निपटारा कर लेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

वह जवाब दे चुके हैं कि वह करेंगे अपने कार्यकाल में।

श्री सत्यपाल मलिक (जिला मेरठ)—

अभी माननीय मन्त्री जी ने जो सूचना दी है वह अधूरी है ।

श्री अध्यक्ष——

अधूरी नहीं है । यह प्रस्ताव मिला नहीं था उसका उत्तर उन्होंने दिया ।

श्री सत्यपाल मलिक——

जो उत्तर उन्होंने दिया उसी से सम्बन्धित है । क्या माननीय मन्त्री बतायेंगे कि जो जमुना का विवाद है हरियाणा के साथ मकनापुर गांव है बुलन्दशहर में, जिसको हरियाणा ने बांध बनाया है, जितना बांध मौजूद है, उस बांध से उसको खतरा पैदा हो गया, उस गांव को बचाने के लिये फैसला होने से पहले क्या उपाय किये जा रहे हैं या क्या उपाय करेगी? इसके अलावा एक और विवाद हरियाणा के और उत्तर प्रदेश की सरकार के बीच में है सहारनपुर में पुल पर टोल टैक्स के विषय में, तो कितना टोल टैक्स बकाया है हरियाणा सरकार पर?

श्री अध्यक्ष——

ये नये सवाल हैं । आप अलग से प्रश्न कर सकते हैं । विवाद भी मांग सकते हैं । लेकिन इससे पैदा नहीं होते ।

चौधरी चरण सिंह——

अब तक यह होता रहा है कि हम लोग मुद्दाअले रहे हैं । हम लोग जाते रहे हैं गवर्नमेंट आफ इंडिया के पास । माननीय राजस्व मन्त्री अब ऐसी कार्यवाही करने जा रहे हैं अपनी तरफ से जो उनको अधिकार है, हरियाणा गवर्नमेन्ट दरख्वास्त लेकर केन्द्रीय सरकार के पास जाय, क्या ऐसा विचार है?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह——

मैं चौधरी साहब को समझ नहीं पाया ।

चौधरी चरण सिंह——

मैं यह कह रहा था कि अब तक ऐसा होता रहा है कि हम शिकायत हरियाणा की लेकर केन्द्र के पास जाते रहे हैं क्या गवर्नमेन्ट कोई ऐसा कदम उठाने पर विचार कर रही है कि अब की बार हरियाणा गवर्नमेन्ट दीक्षित जी के पास जाय?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह——

यह बिल्कुल ऐसा कदम उठायेगी । सिर्फ उसके आर्बिट्रेशन के फैसले का इन्तजार है ।

मेसर्स हिन्डालको, जिला मिर्जापुर की दी गई भूमि पर लगे पेड़ों की मूल्यांकित धनराशि का भुगतान

*9——श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)——

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि मिर्जापुर स्थित बिरला के हिन्डालको कारखाने को स्थापित करने हेतु वन विभाग की भूमि दी गई थी? यदि हां, तो उक्त भूमि और भूमि पर लगे पेड़ों का मूल्यांकन कितना किया गया था और बिरला ने उक्त भूमि एवं पेड़ों के मूल्य के रूप में अब तक कितनी धनराशि अदा की है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह--

जी हां। वन भूमि का मूल्य 3,25,885 रु0 तथा उस पर खड़े पेड़ों का मूल्य 3,55,176 रु0 30 पै0 आंका गया। उक्त सम्पूर्ण धनराशि का भुगतान मेसर्स हिन्डालको द्वारा कर दिया गया है।

श्री राम अधार--

क्या माननीय मन्त्री जी बतायेंगे कि बिड़ला के हिंन्डालको कारखाने के लिये कितनी जमीन एलाट की गयी और उसमें पेड़ों की संख्या कितनी थी?

श्री अजीत प्रताप सिंह--

जमीन 1960 में 526 एकड़ उनको फैक्टरी बनाने के लिये, और वहां की फैक्टरी में जो काम करते हैं उनके आवास के लिये 245 एकड़ और 1971 में 322.35 एकड़ दी गयी, कुल उनको दी है 1 हजार 93.35 एकड़। पेड़ों की संख्या की सूचना मेरे पास नहीं है।

श्री राम अधार--

क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि इस जमीन और पेड़ों के असेसमेंट के लिये उप-अरण्यपाल नियुक्त किये गये थे या अरण्यपाल, या दोनों नियुक्त किये गये थे जिनके मूल्यांकन में क्या फर्क था या दोनों में एका था?

श्री अजीत प्रताप सिंह--

पेड़ों का मूल्यांकन अरण्यपाल ने किया था।

श्री राम अधार--

जमीन की कीमत और पेड़ों की कीमत के असेसमेन्ट के लिये उप अरण्यपाल किये गये पहले। बाद में अरण्यपाल को असेसमेन्ट दिया गया कि आप असेसमेंट कीजिये। उप अरण्यपाल ने जमीन और पेड़ों का असेसमेन्ट 25 लाख रुपये किया था बाद में बिड़ला ने दबाव डालकर असेसमेन्ट अरण्यपाल को दिलाया। मैं जानना चाहता हूं कि दोनो का अलग-अलग असेसमेन्ट है या केवल अरण्यपाल को असेसमेंन्ट की जिम्मेदारी की गयी थी?

श्री अजीत प्रताप सिंह--

हमारे पास जो सूचना है, अरण्यपाल ने किया था और मार्केट रेट से उनके दाम लिये गये थे।

श्री वीरेन्द्र वर्मा--

श्रीमन्, मन्त्री जी ने बताया कि 560 एकड़ भूमि हिंडालको को दी थी तो क्या उनके पास जानकारी है कि कितनी कृषि योग्य भूमि थी और किस हिसाब से मुआवजा दिया गया?

श्री अजीत प्रताप सिंह--

श्रीमन्, 560 एकड़ नहीं बल्कि मैंने कहा था कि 1093 एकड़ भूमि दी गई है और 1960 में 100 रुपये प्रति एकड़ की दर थी और 1971 में 5 हजार प्रति एकड़ की दर है।

श्री गोविन्द सिंह नेगी--

जब तक पूरी कीमत अदा न हो जाये तब तक उनको घुसने नहीं दिया जाता है तो बिड़ला जी ने कब पेड़ काटे और कब रकम वसूल हुई?

श्री अध्यक्ष—

यह तो व्योरे का सवाल है ।

श्री गोविन्द सिंह नेगी—

श्रीमन्, यह बता दें कि कब रकम वसूल की गई?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

किस तिथि को रकम दी गई इसकी सूचना नहीं है ।

श्री रामसेवक यादव—

मैं जानना चाहूंगा कि उनको जमीन उनकी जरूरत से ज्यादा दी गई? आमतौर से यह सिलसिला चला हुआ है कि पूंजीपति जरूरत से ज्यादा जमीन ले लेते हैं ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

उनके पास फालतू जमीन नहीं है । जितनी उनको जरूरत थी उतनी दी गई है ।

श्री रामसेवक यादव—

श्रीमन्, कितनी जमीन की आवश्यकता है इसकी जांच पड़ताल किस विभाग से होती है और क्या उस विभाग की रिपोर्ट आपके पास है?

श्री अध्यक्ष—

बिड़ला को जमीन दी गई है । अब इसकी आवश्यकता इनको कैसे मालूम होगी ।

श्री राम सेवक यादव—

श्रीमन्, कारखानों के लिये जितनी जमीन की जरूरत होती है उतनी ही दी जाती है । इसके लिये इंडस्ट्री विभाग से रिपोर्ट आती है । यदि उनके पास जानकारी हो तो दे दें ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

जितनी जमीन की आवश्यकता होगी और जितनी इंड़स्ट्री विभाग द्वारा कहा गया होग उतनी ही जमीन दी गई होगी ।

श्री शतरुद्ध प्रकाश (जिला वाराणसी)—

अध्यक्ष महोदय, बड़े शर्म की बात है । जब बिड़ला आदि का सवाल आता है और सरकार जो जवाब देती है उससे हम लोगों को संतोष नहीं होता है । जहां तक हिंडालको का सवाल है उनको पावर दे दी गई है । बिड़ला जी के सवाल पर आपको इस तरह से नहीं बोलना चाहिये । आपको जवाब देना चाहिये कि कितनी जमीन खेती के लायक थी और बिड़ला को वह क्यों दे दी गई? उप अरण्यपाल की रिपोर्ट को दबा दिया गया है और अरण्यपाल की रिपोर्ट मन्त्री को प्रस्तुत किया गया है ।

श्री अध्यक्ष—

यह तो आरोप है । लेकिन यह सवाल है कि किसानों की जमीन दी जा सकती है या नहीं ।

श्री अजीत प्रताप सिंह—

यह तो जंगल की भूमि थी ।

श्री राम अधार—

मैं जानना चाहता हूं कि किस तारीख को जमीन दी गई और फी एकड़ जमीन का मूल्य क्या आंका गया?

श्री अध्यक्ष—

यह तो उन्होंने बता दिया है कि 5000 प्रति एकड़ पर दी गई ।

श्री शिव प्रसाद गुप्त (जिला आगरा)—

क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि पेड़ों का कुल मूल्य कितना दिया गया ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

श्रीमन्, पहले ही कहा है कि पेड़ों का मूल्य 3 लाख 15 हजार 100 रुपया दिया गया है ।

श्री अध्यक्ष —

यह तो जवाब में ही दिया हुआ है ।

श्री रामसेवक यादव—

क्या माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो मुवावजा सम्बन्धी प्रतिवेदन अरण्यपाल और उप-अरण्यपाल का आया उसमें मतभेद है और है तो किस बारे में है ?

श्री अध्यक्ष—

एक ही रिपोर्ट आयी है । दूसरी नहीं है ।

श्री शिव कुमार पाण्डेय (जिला सुल्तानपुर)—

क्या माननीय मन्त्री जी यह बताने की कष्ट करेंगे कि जितनी भूमि उनको दी गयी है वह सब उन्होंने अपने उद्योग को चलाने में इस्तेमाल किया है या परती पड़ी हुई है?

श्री अध्यक्ष—

(इसकी सूचना है? वन मन्त्री जी की ओर इशारा करते हुए)

श्री अजीत प्रताप सिंह—

इसकी सूचना नहीं है ।

नायब तहसीलदारों की तहसीलदारों के पद पर पदोन्नति एवं उनकी ज्येष्ठता सूची में संशोधन

*10—श्री शिव सम्पत्ति (जिला मिर्जापुर)—

क्या राजस्व मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष 1973–74 में कितने नायब-तहसीलदार पदोन्नत करके तहसीलदार बनाए गए तथा उक्त पदोन्नति से पूर्व नायब तहसीलदारों की वरिष्ठता की सूची क्या थी तथा जो पदोन्नत किये गये उनके नाम क्या हैं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

प्रश्नगत अवधि में 41 नायब तहसीलदार पदोन्नत करके तहसीलदार बनाये गये । इनके नाम एवं इनकी प्रोन्नति के पूर्व इनकी वरिष्ठता विषयक सूचना संलग्न तालिकाओं में उपलब्ध है । प्रथम तालिका में पहले बनावी गई नायब तहसीलदारों की ज्येष्ठता सूची के अनसार उनकी वरिष्ठता लिखी गयी है । उसी ज्येष्ठता सूची के विरुद्ध दिये गये प्रत्यावेदनों पर दिनांक

19 जनवरी, 1974 को निर्णय देते हुए परिषद् ने उसमें संशोधन किया जिसके फलस्वरूप उनकी वरिष्ठता द्वितीय तालिका के अनुसार हो गई है ।

(देखिए नत्थी 'ख' आगे पृष्ठ 1039—1040 पर)

श्री शिव सम्पत्ति—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि वरिष्ठता की सूची बदलने का क्या कारण था ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, उस तालिका में गलती हो गई थी । परिषद् ने इक्जामिन किया तो गलती मिली । इसलिए उसको बदला गया ।

श्री शिव सम्पत्ति—

क्या माननीय मन्त्री जी बताने का कष्ट करेंगे कि दुद्धी के नायब तहसीलदार की अभी तक पदोन्नति नहीं की गयी है ?

श्री अध्यक्ष—

यह व्यक्तिगत प्रश्न आप कर रहे हैं ।

श्री शिव सम्पत्ति—

क्या माननीय मन्त्री जी बतायेंगे कि कोई ऐसा नायब तहसीलदार है जो 30 वर्ष से नायब तहसीलदार है और अभी तक उसकी पदोन्नति नहीं की गई है और उसके बाद के लोगों की कर दी गई है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

ऐसी सूचना नहीं है । माननीय सदस्य नाम बता दें तो मैं इक्जामिन करा लूंगा ।

श्री मधुकर दिघे (जिला गोरखपुर)—

क्या माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जिनकी पदोन्नति हुई है उनमें हरिजन कितने थे और वहां कितने सवर्ण हैं ? और जिनको पदोन्नति दी गई क्या उसमें ऐसे लोग हैं जिनके खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायत थी ?

श्री अध्यक्ष—

यह तो नया सवाल है । इसमें पूरी लिस्ट दी हुई है । 2 लिस्टें हैं । उनमें सबके नाम लिखे हुए हैं ।

श्री मधुकर दिघे—

मैं नम्बर पूछ रहा हूं ।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

लिस्ट में कौम नहीं लिखी हुई है ।

श्री राम सेवक यादव—

क्या सरकार ने अपनी नीति बनायी है कि पदोन्नति में भी हरिजनों का प्रतिशत पूरा किया जायेगा ?

श्री अध्यक्ष—

यह दूसरा सवाल हो गया । अब हम आगे चलते हैं ।

श्री हरीश कुमार गंगवार—

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न ...

श्री अध्यक्ष—

प्रश्नों में व्यवस्था नहीं होती है ।

श्री हरीश कुमार गंगवार—

आप तो माननीय मन्त्री जी के जवाब देने के पहले ही प्रश्नों का निस्तारण कर देते हैं।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्नों को चलने दिया जाये। प्रश्नों के समय बेकार समय नष्ट न किया जाये। यह भी हमारा काम है कि आवश्यक सवाल किये जायं जिससे सदन का समय बचे।

श्री हरीश कुमार गंगवार—

आप स्वयं अव्यावहारिक और अव्यवस्थित ढंग अपनाते हैं ।

श्री अध्यक्ष—

आप स्वयं अव्यवहारिक एवं अव्यवस्थित ढंग इस सदन में न अख्तियार करें ।

श्री हरीश कुमार गंगवार—

यह तो सही है लेकिन यहां पर हेडमास्टरी न करिये ।

श्री अध्यक्ष—

आप भी शिष्य न बनिये। इस तरह का जवाब सवाल सदन के लिये शोभा नहीं देता।

कुदारी राजकीय चिकित्सालय, जिला जालौन में चिकित्सक का न होना

*11—श्री मलिखान सिंह (जिला जालौन)—

क्या सरकार को ज्ञात है कि जिला जालौन में कुदारी राजकीय चिकित्सालय में गत चार माह से चिकित्सक नहीं है, और वहां पर अन्य दो स्थानों पिन्डारी तथा माधौगढ़ चिकित्सालयों में जहां कुदारी की अपेक्षा कम रोगी आते हैं, दो-दो चिकित्सक तैनात हैं ? यदि हां, तो ऐसा क्यों ?

श्री राज मंगल पांडेय—

राजकीय डिस्पेन्सरी, कुदारी में तैनात चिकित्सा अधिकारी की मृत्यु के कारण उक्त डिस्पेन्सरी में चिकित्सा अधिकारी का पद 25 दिसम्बर, 1973 से रिक्त हो गया। दिनांक 16 मई, 1974 से वहां चिकित्सक तैनात कर दिया गया है ।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पिण्डारी तथा माधोगढ़ में दो-दो चिकित्सक, चिकित्सा स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन कार्य के लिये तैनात हैं ।

हर राजकीय ग्रामीण डिस्पेन्सरी में केवल चिकित्सा कार्य हेतु एक चिकित्सक का पद स्वीकृत है । परन्तु प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो में चिकित्सकों के दो-दो पद की स्वीकृत चिकित्सा, स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन कार्य के लिये दी गई है ।

श्री मलखान सिंह—

मान्यवर, मैं आप के माध्यम से मा0 मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि जब एक चिकित्सक की मृत्यु 19 दिसम्बर को हो गई तो फिर 18 मई को दूसरे अन्य चिकित्सक की व्यवस्था क्यों नहीं की गई ?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, माननीय सदस्य को यह मालूम होना चाहिए कि यह मिडशेशन होता है दिसम्बर, उस समय बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके बच्चे या तो स्कूलों में होते हैं या बहुत परेशानियों म होते हैं। इस कारण से किसी को स्थानांन्तरित करके वहां पर नियुक्त करना चिकित्सकों क लिये असुविधा की बात थी और इसी कारण से नियुक्ति में विलम्ब हुआ।

श्री मलखान सिंह—

मान्यवर, मंत्री जी के उत्तर से संबंधित प्रश्न है। क्या मा0 मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि पिण्डारी तथा माधवगढ़ चिकित्सालयों में जो डाक्टर्स थे, उनके बच्चों का कोई प्रश्न ही नहीं उठता जबकि वे अविवाहित हैं।

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, इस जवाब में ही दिया हुआ है कि यहां पर दो डाक्टर्स होते हैं जिसमें से एक डाक्टर फेमिली प्लानिंग का काम करता है। अगर उसमें से एक डाक्टर को भेज दिया जाता तो वहां पर कोई डाक्टर नहीं रह जाता।

श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव (जिला लखनऊ)—

मान्यवर, वहां पर अन्य दो स्थानों पिन्डारी तथा माधोगढ़ चिकित्सालय में जहां कुदारी की अपेक्षा कम रोगी आते हैं, दो-दो जो चिकित्सक तैनात हैं उनमें से एक स्थानांन्तरित करके नियुक्त क्यों नहीं किया जा रहा है, जिससे कि वहां पर रोगियों की कोई कठिनाई हो?

श्री अध्यक्ष—

जब मैं किसी को बोलने या प्रश्न करने की इजाजत दूं तभी वह खड़ा हो। इस प्रकार से बिना इजाजत के खड़े होकर बोलने लगना या प्रश्न करना ठीक नहीं है। यह जनरल सवाल है।

कोंच महिला चिकित्सालय जिला जालौन के भवन की जीर्ण अवस्था

*12—श्री मलखान सिंह—

क्या सरकार को ज्ञात है कि जिला जालौन के कोंच महिला चिकित्सालय की किराये की इमारत उपयोग लायक न होने के कारण पांच वर्ष पूर्व से उपयोग में नहीं लाई जा रही है और जिसका किराया अब भी दिया जा रहा है? यदि हां, तो नई इमारत कब तक तैयार हो जायगी?

श्री राज मंगल पांडेय—

जी नहीं। प्रश्नगत भवन का केवल कुछ भाग जीर्ण अवस्था में होने के कारण उपयोग में नहीं लाया जा रहा है।

भवन का शेष भाग उपयोग में लाया जा रहा है। इसलिये भवन का किराया दिया जा रहा है।

धनाभाव के कारण इस वर्ष चिकित्सालय के भवन के निर्माण की कोई योजना नहीं है।

श्री मलखान सिंह—

माननीय मंत्री जी के उत्तर से संबंधित। मान्यवर, मेरी सूचना को सही मानकर कि उस भवन का कोई भी भाग सही नहीं है और उस भवन का कोई भी भाग उपयोग में नहीं लाया जा सकता है। क्या मा0 मंत्री जी इसकी जांच कराने की व्यवस्था करेंगे?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर,केवल दो ही कमरे वहां पर ठीक नहीं हैं बाकी पांच कमरे ठीक हैं और उसमें कार्य हो रहा है ।

श्री मलखान सिंह—

मान्यवर, मेरी यही तो प्रार्थना है। अगर उस भवन के दो कमरे को छोड़कर बाकी कमरों का प्रयोग किया जा रहा है, तो मैं यह सूचना देता हूं और मेरी सूचना को सही मानकर मा0 मंत्री जी इसकी जांच कराने की कृपा करेंगे ?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, अगर माननीय सदस्य लिखकर कुछ भेज देंगे तो अवश्य जांच करा लूंगा।

श्री मलखान सिंह—

क्या माननीय मंत्री जी मेरी सूचना को सही मानकर कि उसका उपयोग नहीं हो रहा है इसकी जांच करावाने की कृपा करेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

इस प्रश्न का उत्तर तो हो चुका है ।

*13—श्री ओम प्रकाश सिंह—

[स्पष्टीकरण हेतु हटाया गया।]

*14—श्री सरदार कुलतार सिंह—

(3रे सोमवार के लिये तारांकित प्रश्न 15 के अन्तर्गत स्थानान्तरित।)

ग्राम मदरौली, जिला शाहजहांपुर के प्रधान द्वारा ग्राम सभा की सम्पत्ति पर नाजायज कब्जा

*15—श्री राम अधार तथा श्री नन्हे लाल (जिला बाराबंकी)—

क्या राजस्व मन्त्री कृपया बतायेंगे कि उपनेता, विधान मंडल, भारतीय क्रान्ति दल उत्तर प्रदेश के पत्र के साथ श्री बुधपाल सिंह, ग्राम मदरौली, तहसील सदर, जिला शाहजहांपुर का प्रधान द्वारा गांव सम्पत्ति का अपने हित में नाजायज उपयोग करने आदि से संबंधित प्रार्थना-पत्र उन्हें दिनांक 3 मई, 1974 को प्राप्त हुआ है ? यदि हां, तो क्या इसकी जांच कराई गई और उस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी हां। प्रधान गांव सभा, मदरौली के विरुद्ध जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950 के धारा 122–बी के अन्तर्गत नाजायज कब्जा हटाने तथा क्षति पूर्ति के लिये मुकदमें दायर कर दिये गये हैं।

श्री राम अधार—

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि यह कार्यवाही कब से की गयी है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, इसके लिए सूचना की आवश्यकता होगी।

श्री राम सेवक यादव—

मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि पत्र लिखने के बाद मुकदमें दायर किये गये या उसके बाद में ? यानी प्रश्न मिलने के पूर्व या बाद में ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

इसे मैं देख लूंगा कि किस तारीख का प्रश्न था। श्रीमन् इसमें गिरदावर कानूनगो ने नाजायज कब्जे की एक रिपोर्ट 15–11–73 को दी और एक गांव की 15–4–74 को दूसरी रिपोर्ट दी। इन नाजायज कब्जों के सम्बन्ध में लेखपाल के विरुद्ध भी कार्यवाही की जा रही है।

श्री राम सेवक यादव—

मैं जानना चाहता हूं कि अब तक भी बेदखली की कार्यवाही क्यों नहीं की गयी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

एक गांव की 15–11–73 की और दूसरे गांव की 15–4–74 की होगी। 15–11–73 वाला मामला, मालूम नहीं किस स्टेज पर है। 15–4–74 पर कार्यवाही हो रही है। एस0 डी0 एम0 को लिखा है और लिगली जैसे कार्यवाही होती है, वैसे वे कर रहे हैं।

श्री राम सेवक यादव—

क्या 15–11–73 की रिपोर्ट पर भी कोई कार्यवाही हो रही है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जरूर।

श्री मधुकर दिघे—

गांव समाज की सम्पत्ति की जो लूट ग्राम प्रधान और अन्य लोक कर रहे हैं, क्या इसको देखते हुए पूरे प्रदेश में जहां-जहां इस प्रकार की लूट मची हुयी है, और जहां पर नये प्रधानों को चार्ज नहीं दिये गये हैं, उनके बारे में जांच कराने की कृपा करेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

यह प्रश्न नीति के बारे में है।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

माननीय सदस्य के विचार प्रकट करने के पूर्व ही सख्त आदेश जारी कर दिये गये हैं कि जहां पर भी अनधिकृत कब्जे हैं, उनको शीघ्र से शीघ्र हटाने की कोशिश की जाय।

बिसवां नगर, जिला सीतापुर की खेतिहर भूमि की चकबन्दी न होना

*16—श्री गया प्रसाद मेहरोत्रा (जिला सीतापुर) (अनुपस्थित)—

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि बिसवा नगर जिला सीतापुर में स्थित खेतिहर भूमि की चकबन्दी का कार्य अब तक पूरा न किये जाने का क्या कारण ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

उत्तर प्रदेश जोत चकबन्दी अधिनियम की व्यवस्था के अनुसार चकबन्दी क्रियायें उसी क्षेत्र में की जा सकती है, जिस पर उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950 लागू है। बिसवां नगरपालिका क्षेत्र के अन्दर पड़ने वाली खेतिहर भूमि पर यह अधिनियम लागू नहीं है, अतः उस क्षेत्र को चकबन्दी कराने का प्रश्न नहीं उठता।

विकास खण्ड जसपुरा, जिला बांदा के प्राइमरी हेल्थ सेन्टर का स्थानान्तरण

*श्री मोती लाल देहलवी (जिला कानपुर)--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बतायेंगे कि क्या जिला बांदा के विकास खंड जसपुरा का प्राइमरी हेल्थ सेंटर ब्लाक केन्द्र जसपुरा से 8 किलोमीटर दूर पैलानी ग्राम में स्थित है जहां पहुंचने के लिये क्षेत्र के 42 गांवों की जनता को केन नदी पार करनी पड़ती है और वहां क्षेत्र की जनता नहीं पहुंच पाती है ? यदि हां, तो क्या सरकार शीघ्र उक्त प्राइमरी हेल्थ सेन्टर को ब्लाक केन्द्र जसपुरा में स्थापित करने की कृपा करेगी ?

श्री राज मंगल पांडेय--

जी हां । प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को ग्राम पैलानी से ग्राम जसपुरा में स्थानान्तरित करने की व्यवस्था की जा रही है ।

श्री मोती लाल देहलवी--

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि वहां पर कब तक यह अस्पताल सूचारु रूप से काम करने लगेगा ?

श्री राजमंगल पांडेय--

श्रीमन् कोशिश तो हमारी यह ही है कि इस माह के अन्त तक हम कर सकें लेकिन यदि कोई कन्सट्रक्शन हो जिस में सीमेंट वगैरह के कारण जो दिक्कत है उनकी वजह से इसमें देर लग सकती है लेकिन हमारा विचार इसे जल्द से जल्द बनवाने का है ।

श्री मोतीलाल देहलवी--

जिस औचित्य को स्वीकार कर सरकार ने इस अस्पताल का स्थानान्तरण करने का निर्णय लिया है मैं जानना चाहता हूं पैलानी ग्राम में, जहां पंहुचने के लिये क्षेत्र के 42 गांवों की जनता को केन नदी पार करनी पड़ती है और असुविधा उठानी पड़ती थी और जिस असुविधा को सरकार बचा रही है तो क्या कारण थे कि इतनी असुविधा होते हुये भी वहां पर अस्पताल कायम कर दिया गया था और अभी तक चल रहा था ?

श्री अध्यक्ष--

यद्यपि परिधि के बाहर है, आप चाहें तो उत्तर दे दीजिये ।

श्री राजमंगल पांडेय--

पहले स्वास्थ्य केन्द्र पर कोई भवन उपलब्ध नहीं था । ूसरी चीज यह है कि पिलानी मौजा पिलानी दूसरे ब्लाक के क्षेत्र में आ चुका है ।

श्री मोती लाल देहलवी--

माननीय मंत्री जी का कहना है कि भवन उपलब्ध नहीं था तो क्या अब भवन उपलब्ध हो गया है ?

श्री राज मंगल पांडेय--

मैंने कहा कि पिलानी दूसरे ब्लाक की सीमा के अन्दर आ चुका है । तो जहां तक ट्रांस्फर की बात है जो ब्लाक का सेंटर है वहां पर हो रहा है ।

नोट:--तारांकित प्रश्न संख्या 17 के उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया ।

*18--श्री गोरे लाल शाक्य--

[स्पष्टीकरण हेतु हटाया गया।]

*19--श्री शिव सम्पत्ति तथा श्री सूबेदार प्रसाद--

[स्पष्टीकरण हेतु हटाया गया ।]

अतारांकित प्रश्न

तहसील बांसी, जिला बस्ती में बाढ़ अथवा अतिवृष्टि से क्षतिग्रस्त घरों को बनाने हेतु अनुदान

*1 --श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला बस्ती तहसील बांसी में घर गिराही (गिरे हुये घर) बनवाने के लिये गत जनवरी से मार्च, 1974 तक कितना रुपया और किस-किस व्यक्ति को बांटा गया तथा वह धन किस आधार पर बांटा गया ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह--

तहसील बांसी जिला बस्ती में गत जनवरी से मार्च, 1974 तक कुल 1,595 व्यक्तियों को 91.590 रु0 तथा दिसम्बर, 1973 में 131 व्यक्तियों को 8,410 रु0 अर्थात् कुल 1,726 व्यक्तियों को एक लाख रुपया गृह निर्माण अनुदान हेतु वितरित किया गया । प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 40 रु0 की तथा अधिक से अधिक 100 रु0 की सहायता दी गयी। यह धन ऐसे निर्धन व्यक्तियों को दिया गया जिनका घर बाढ़ अथवा अतिवृष्टि से आंशिक अथवा पूर्णरूप से क्षतिग्रस्त हो गया था और जिनके पास एक एकड़ से कम भूमि थी। विवरण की सूची बहुत लम्बी है, उसे अध्यक्ष महोदय के कक्ष में देखा जा सकता है।

राजस्व परिषद् में हरिजन कर्मचारी

2--श्री शिव सम्पत्ति--

क्या राजस्व मंत्री कृपया बतायेंगे कि राजस्व परिषद् में प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ श्रेणी में पृथक-पृथक कुल कितने कर्मचारी हैं तथा उनमें हरिजन वर्ग के कितने हैं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह--

राजस्व परिषद् कार्यालय में प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ श्रेणी के क्रमशः 21, 13 तथा 141 कर्मचारी हैं । इन में प्रथम श्रेणी के एक द्वितीय श्रेणी में शून्य चतुर्थ श्रेणी 27 कर्मचारी हरिजन वर्ग के हैं ।

राबर्टसगज तथा दुद्धी तहसील, मिर्जापुर में तेन्दू बीड़ी पत्ती के बकाये ठेकेदार

3--श्री सूबेदार प्रसाद--

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि मिर्जापुर के राबर्ट सगंज तथा दुद्धी तहसील के अन्तर्गत जनवरी, 1971 से मार्च, 1974 तक कितने तेंदू बीड़ी पत्तों के ठेकेदार (टेंडर होल्डर) बकायेदार हैं ?

श्री अजीत प्रताप सिंह--

मिर्जापुर के राबर्ट संगंज तथा दुद्धी तहसील के अन्तर्गत जनवरी, 71 से मार्च, 74 तक 2(दो) तेंदू बीड़ी पत्ती के ठेकेदार (टेंडर होल्डर) बकायेदार हैं ।

---

*छापी नहीं गयी ।

मुहल्ला गुलड़-घट्टी, रामनगर, जिला नैनीताल में अग्निकांड से पीड़ित परिवारों को सहायता

4—श्री मोहम्मद रफी खां (जिला शाहजहांपुर)—

क्या सरकार यह बतलाने की कृपा करेगी कि नैनीताल जिले के रामनगर कस्बे के मुहल्ला गुलड़-घट्टी में मई, 1974 के पहले हफ्ते में कोई आग लगी थी ? यदि हां, तो उसमें जिन लोगों का नुकसान हुआ उनके नाम व पूरे पते क्या हैं ? और सरकार ने उन पीड़ित लोगों को क्या सहायता अब तक दी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी हां, 2 मई, 1974 को अग्निकांड हुआ । 33 प्रभावित परिवारों को जिनके नाम व पते संलग्न सूची में दिये हुए हैं, प्रति परिवार 100 रु0 की दर से कुल 3,300 रु0 अहेतुक सहायता वितरित की गयी

(देखिये नत्थी 'ग' आगे पृष्ठ 1041 पर)

विकास क्षेत्र मेंहदावल से मरियावां तथा बघौली, जिला बस्ती में अग्निकांड से पीड़ित परिवारों को सहायता

5—श्री चन्द्रशेखर सिंह (जिला बस्ती)—

क्या राजस्व मंत्री कृपया बतायेंगे कि बस्ती जिले के विकास खंड में मेहदावल, सेमरियावां तथा बघौली में माह मार्च तथा अप्रैल, 1974 में किन-किन ग्रामों में आग लगी तथा इससे जन धन की कितती हानि हुई एवं सरकार द्वारा इस संबंध में क्या सहायता दी गई?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

विवरण संलग्न तालिका में दिया हुआ है।

[देखिये नत्थी 'घ' आगे पृष्ठ 1042 पर]

6—श्री दल सिंह यादव—

[4थे गुरुवार के लिये अतारांकित प्रश्न संख्या 9 के अन्तर्गत स्थानान्तरित)

जिला मिर्जापुर के लिये शैयायुक्त चिकित्सालय की स्वीकृति का प्रस्ताव

7—श्री ओम प्रकाश सिंह (जिला मिर्जापुर)—

क्या स्वास्थ्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि मिर्जापुर जनपद में कितने शैय्यायुक्त चिकित्सालय है और जनपद में कहां-कहां नये शैय्या युक्त चिकित्सालय निर्माण के लिये स्वीकृत हैं और कितने प्रस्तावित हैं ?

श्री राज मंगल पांडेय—

मिर्जापुर जनपद में 45 शैय्यायुक्त चिकित्सालय हैं । जनपद में केवल निम्नलिखित चार स्थानों पर शैय्यायुक्त चिकित्सालय निर्माण हेतु स्वीकृत हैं ।

1—मडिहान,
2—विन्ध्याचल,
3—राबर्ट्सगंज,
4—फोन।

जनपद में 5 अस्पताल निर्माण हेतु प्रस्तावित हैं ।

जिला गोंडा में नये प्राइमरी हेल्थ सेन्टर

8--श्री राजेन्द्र प्रसाद चौधरी (जिला गोंडा)---

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि गोंडा जिला के विकास खंड उतरौला, श्रीदत्तगंज, तथा गडांस बुजुर्ग में प्राइमरी हेल्थ सेंटर कहां-कहां हैं तथा अन्य किन-किन स्थानों पर प्राइमरी हेल्थ सेंटर खोलने का विचार किया जा रहा है।

श्री राज मंगल पांडेय--

गोंडा जिले के विकास खंड उतरौला, श्रीदत्त गंज तथा गडांस बुजुर्ग के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र क्रमशः उतरौला श्रीदत्त गंज तथा ग्राम सिसहना (पोस्ट वाक बाजार) में कार्यरत हैं।

अन्य स्थानों पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की योजना इस समय विचाराधीन नहीं है।

जिला बांदा में भूमिहीन हरिजनों तथा खेतिहर मजदूरों में भूमि का वितरण

9--श्री बेनी प्रसाद वर्मा (जिला बाराबंकी)---

क्या राजस्व मंत्री कृपया बतायेंगे कि ग्राम गौरीकलां, विकास क्षेत्र जसपुरा, तहसील व जिला बांदा के किन-किन किसानों को कितनी-कितनी भूमि अधिकतम जोत सीमा विधेयक के अन्तर्गत निकल रही है और सरकार उस अतिरिक्त भूमि को लेकर कब तक उसका वितरण भूमिहीन हरिजनों व खेतिहर मजदूरों में कर देगी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह---

ग्राम गौरीकलां, विकास क्षेत्र जसपुरा, तहसील व जिला बांदा के काश्तकार श्री श्याम लाल की अनुमानित 51.20 एकड़ भूमि तथा श्री श्रीलाल की अनुमानित 53.80 एकड़ भूमि उत्तर प्रदेश अधिकतम जोत सीमा आरोपण अधिनियम के अन्तर्गत अतिरिक्त घोषित किये जाने के संबंध में वाद नियत प्राधिकारी के न्यायालय में चल रहे हैं । नियत प्राधिकारी के फैसलों पर अपीलों के निस्तारण के उपरान्त ही अतिरिक्त भूमि अंतिम रूप से घोषित होगी। तत्पश्चात् भूमि का कब्जा लेकर नियमानुसार भूमि का वितरण भूमिहीन हरिजनों व खेतिहर मजदूरों में किया जा सकेगा । निश्चितरूप से यह कहना कठिन है कि यह कार्य कब तक सम्पन्न हो जावेगा।

मातृ एवं शिशु कल्याण अनुभाग में महिला कर्मचारियों का स्थायीकरण

10---श्रीमती मोहसिना किदवाई (जिला बाराबंकी)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जन-स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत, मातृ एवं शिशु कल्याण अनुभाग में कितनी महिलायें ऐसी हैं जिनको 3 वर्ष से अधिक कार्य करते हो गया परन्तु वह अभी तक स्थायी नहीं हुईं ? उन लोगों के अस्थायी रहने का क्या कारण है।

श्री राज मंगल पांडेय----

ऐसी महिला कर्मचारियों की संख्या 1,382 है । पदों के स्थायी न होने के कारण इन लोगों को स्थायी नहीं किया जा सकता है । पदों को स्थायी किये जाने के संबंध में सक्रिय रूप से कार्यवाही की जा रही है।

उत्तर प्रदेश मिनिमम वेजेज (प्रथम संशोधन) नियमावली, 1973†

श्रम मन्त्री (श्री राजमंगल पांडेय)---

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से श्रम अनुभाग-5 की अधिसूचना संख्या 3331(वि0)/36-5-1075(टी0डी0)-71, दिनांक 3 अप्रैल, 1973 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश मिनिमम वेजेज (प्रथम संशोधन) नियमावली, 1973 को सदन के पटल पर रखता हूं।

उत्तर प्रदेश मोटर गाड़ी (माल कर) (संशोधन) नियमावली, 1974†

श्रम मंत्री (श्री राजमंगल पांडेय)---

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से परिवहन अनुभाग-4 की अधिसूचना संख्या 932-टी/तीस-4-34 के0 एम0-74, दिनांक 30 मार्च, 1974 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश मोटर गाड़ी (माल कर) (संशोधन) नियमावली, 1974 को उत्तर प्रदेश मोटर गाड़ी (माल कर) अधिनियम, 1974 की धारा 32 की उपधारा (3) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

उत्तर प्रदेश स्टेट शुगर कारपोरेशन लिमिटेड की वार्षिक रिपोर्ट†

वित्त मन्त्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)---

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश स्टेट शुगर कारपोरेशन लिमिटेड की 30 सितम्बर, 1971 को समाप्त होने वाली अवधि की वार्षिक रिपोर्ट को, लेखा परीक्षक के प्रतिवेदन सहित, कम्पनीज ऐक्ट, 1956 की धारा 619-ए के अनुसार सदन के पटल पर रखता हू।

उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था (द्वितीय संशोधन) नियमावली, 1974†

राजस्व मन्त्री (श्री स्वामी प्रसाद सिंह)---

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से राजस्व विभाग अनुभाग-1 की अधिसूचना संख्या 284/2-1(3)-73-राजस्व-1, दिनांक 25 अप्रैल, 1974 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था (द्वितीय संशोधन) नियमावली, 1974 को, उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950 की धारा 344 की उपधारा (4) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)---

मेरी प्रार्थना है कि जो रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी जाती है इसके लिए कोई अवसर दिया जाय, एक समय निश्चित किया जाय कि हम उन पर बहस करें। जैसे कि भिन्न समितियों की रिपोर्ट आती है और माननीय अध्यक्ष द्वारा मुझे आश्वासन मिल जाता है कि उन पर चर्चा होगी, लेकिन हो नहीं पाती। अगर चर्चा करानी हो तो पटल पर रख दें, वरना सरकार के पास पड़ी रहे तो लाभ क्या? वह तो आपका कर्तव्य है कि अगर पटल पर रखी जाय तो उसके लिए चर्चा का समय भी निश्चित हो जाना चाहिए। अगर आप चर्चा चाहते हों तो---वरना जरूरत ही क्या है?

---

†छापी नहीं गयी।

श्री अध्यक्ष---

पहले पटल पर रखी जाती हैं। फिर आपकी इच्छा पर होगा कि सभी पर या किस पर चर्चा हो। तभी चर्चा होगी। मान लीजिए कुछ ऐसी हैं कि पब्लिक अंडरटेकिंग कमेटी के क्षेत्राधिकार के अन्दर आती हैं, उनपर तो होती ही। अब जो यहां कोई विशेष ऐसी रपट होती है जिसको आप चाहते हैं कि उस पर बहस हो तो वह होगी। अभी तो रखी जा रही है। समय मिलता है। आपको समितियों के प्रतिवेदन आते हैं उनके बारे में यह है कि बहुत को आप छोड़ देते हैं। जिन पर चर्चा चाहेंगे, उसके लिए संकेत करेंगे तो उन पर चर्चा होगी। बहुत सी रिपोर्ट ऐसी होती हैं कि जो समितियों के प्रतिवेदन के रूप में उनके सामने भी जाती हैं।

पंचायत राज (अनुभाग-2) की अधिसूचना†

वन मन्त्री (श्री अजीत प्रताप सिंह)---

आपकी आज्ञा से मैं पंचायती राज (अनुभाग-2) की अधिसूचना संख्या 3337-बी/33-79-66, दिनांक 15 अप्रैल, 1974 को, यू0 पी0 पंचायत राज ऐक्ट, 1947 की धारा 110 की उपधारा (3) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद् (नियंत्रित ग्राम्य क्षेत्र में किसी इमारत का निर्माण या पुर्निर्माण कराने अथवा कोई कुंआ बनाने या उसे बड़ा करने की) नियमावली, 1974 तथा उत्तर प्रदेश जिला परिषद् कर्मचारी सेवा निवृत्ति लाभ (प्रथम संशोधन) नियमावली, 1974†

वन मन्त्री (श्री अजीत प्रताप सिंह)---

आपकी आज्ञा से मैं पंचायती राज अनुभाग-2 की अधिसूचना संख्या 2549-बी/33-2 आर-62, दिनांक 18 मई, 1974 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद् (नियन्त्रित ग्राम्य क्षेत्र में किसी इमारत का निर्माण या पुनर्निर्माण करने अथवा कोई कुआं बनाने या उसे बड़ा करने की) नियमावली, 1974 एवं

पंचायती राज (2) अनुभाग की अधिसूचना संख्या 4568-बी/33-156-73, दिनांक 18 मई, 1974 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश जिला परिषद् कर्मचारी सेवा-निवृत्ति लाभ (प्रथम संशोधन) नियमावली, 1974 को, उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद् अधिनियम, 1961 की धारा 237 (3) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

श्री मुहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)---

अध्यक्ष महोदय, हमें तो पंखे मिल गये लेकिन प्रेस वाले भागे जा रहे हैं। वहां पर पंखे हैं नहीं, एयर कन्डीशन फेल हो गया है।

---

†छापी नहीं गयीं।

वित्त बिक्री-कर (अनुभाग–2) की विज्ञप्तियां

वित्त मन्त्री (श्री नारायणदत्त तिवारी)—

मान्यवर, आपकी आज्ञा से मैं वित्त बिक्री-कर अनुभाग–2 की विज्ञप्ति संख्या एस0 टी0 2–1545 दस–10 (1)-1974, दिनांक 14 अप्रैल, 1974 तथा एस0 टी0 2-1233 दस–10 (1)-1974, दिनांक 14 अप्रैल, 1974 एवं तत्सम्बन्धी शुद्धि पत्र। संख्या एस0 टी0-दो-2241।दस-10 (1)-1974, दिनांक 18 मई, 1974 तथा

विज्ञप्ति संख्या एस0टी0–दो-2685 दस-1035 (250)-70, दिनांक 21 मई, 1974, को, उत्तर प्रदेश बिक्री-कर अधिनियम, 1948 की धारा 3 "क" की उपधारा (3) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

उत्तर प्रदेश बिक्री-कर (द्वितीय संशोधन) नियमावली, 1974†

वित्त मन्त्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

मान्यवर, आपकी आज्ञा से मैं वित्त (बिक्री-कर) अनुभाग–2 की विज्ञप्ति संख्या एस0टी0 दो-2633 दस-90 (127)-72, दिनांक 18 मई, 1974 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश बिक्री-कर (द्वितीय संशोधन) नियमावली, 1974 को तत्सम्बन्धी शुद्धि-पत्र संख्या एस0 टी0 2–2991 दस–900 (127)-72, दिनांक 1 जून, 1974 सहित, उत्तर प्रदेश बिक्री-कर अधिनियम, 1948 की धारा 24 की उपधारा (5) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

उत्तर प्रदेश बिक्री-कर (प्रथम संशोधन) नियमावली, 1974†

वित्त मन्त्री (श्री नारायणदत्त तिवारी)—

मान्यवर, आपकी आज्ञा से मैं वित्त (बिक्री-कर–2) अनुभाग की विज्ञप्ति संख्या एस0टी0 दो-700 दस900 (16-ए)-64, दिनांक 1 मार्च, 1974 द्वारा प्रख्यापित उत्तर प्रदेश बिक्री-कर (प्रथम संशोधन) नियमावली, 1974 तथा तत्सम्बन्धी शुद्धि-पत्र संख्या एस0 टी0, दो, 1602 दस–900 (16-ए)-64, दिनांक 4 जून, 1974 को उत्तर प्रदेश बिक्री-कर अधिनियम, 1948 की धारा 24 की उपधारा (5) के अनुसार सदन के पटल पर रखता हूं।

उत्तर प्रदेश भूमि व्यवस्था जांच समिति का प्रतिवेदन ††

राजस्व मन्त्री (श्री स्वामी प्रसाद सिंह)—

मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश भूमि व्यवस्था जांच समिति का प्रतिवेदन 1972-74 को सदन के पटल पर रखता हूं।

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)—

जो प्रतिवेदन मन्त्री जी ने रखा क्या इस पर जल्दी ही कोई बहस का समय निकालेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

वह तो सूचना आप देंगे कि किस पर चाहते हैं।

---

†छापा नहीं गया।

††छापा नही गया।

उत्तर प्रदेश मोटर गाड़ी कराधान (संशोधन) विधेयक, 1974

सचिव, विधान सभा--

अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली, 1958 के नियम 153 के अन्तर्गत सूचना देता हूं कि उत्तर प्रदेश मोटर गाड़ी कराधान (संशोधन) विधेयक, 1974, जिसे विधान सभा ने दिनांक 12 जून, 1974 को पारित किया था तथा जो श्री अध्यक्ष द्वारा धन विधेयक प्रमाणित किया गया था, उत्तर प्रदेश विधान परिषद् से बिना किसी सिफारिश के दिनांक 20 जून, 1974 को वापस प्राप्त हो गया है।

25 व 26 जून, 1974 को विचारार्थ लिये जाने वाले अनुदानों के सम्बन्ध में सूचना

श्री अध्यक्ष--

तिथिवार कार्यक्रम तो आपको छप कर दो दिन बाद मिल जायगा, 25 और 26 के लिए जिन अनुदानों पर बहस होगी वह मैं आपको बता रहा हूं। 25 जून को भू-राजस्व, सहायता एवं पुनर्वासन विभाग से सम्बन्धित अनुदानों को लिया जायेगा। 26 जून को श्रम, न्याय परिवहन विभाग से सम्बन्धित अनुदानों को लिया जायेगा।

विविध विषय

कुंवर श्री पाल सिंह (जिला सुल्तानपुर)---

एक निवेदन है। प्रेस गैलरी में पंखे न होने के कारण, चूंकि एयर कन्डीशनर फेल हो गया है, प्रेस गैलरी खाली पड़ी है, दर्शक दीर्घाओं में भी पंखे नहीं हैं जिसके कारण जनता को बड़ी असुविधा हो रही है . . .

श्री अध्यक्ष--

जब माननीय सदस्य यहां बैठे हों तो कृपया गैलरी आदि की तरफ न देखकर अपने कार्य की ओर देखें। कोई व्यवस्था का सवाल हो तो उठा सकते हैं।

श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)--

प्रश्नों को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने के सम्बन्ध में कुछ निवेदन करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष--

जो आपके मूल्यवान सुझाव हों वे कृपा करके मुझे लिख कर दें..

श्री हरीश कुमार गंगवार--

कक्ष में मिल लें ?

श्री अध्यक्ष--

कक्ष में आपका स्वागत है। उस वक्त अगर बीच में आप न आ गये होते तो मैंउ स सवाल को देखता (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य का बड़ा महत्वपूर्ण सवाल था। उसे मैंने समाप्त कर दिया होता बीच में आ जाने से आपके साथी का ही नुकसान हुआ....

श्री हरीशकुमार गंगवार—

आधा समय तो आप ही ले लेते हैं

श्री अध्यक्ष—

आप इस लायक नहीं हैं कि आपको समय दिया जाय। आपको यह मालूम नहीं है कि आपको क्या बोलना चाहिए क्या नहीं। इस तरह से अध्यक्ष पर आप आरोप लगा रहे हैं। आप समझते हैं कि आप बहुत लायक हैं...

श्री हरीश कुमार गंगवार—

आप इतना गुस्सा क्यों हो रहें मैं यहां चुन कर आया हूं...

श्री अध्यक्ष—

यहां पर सभी चुन कर आये हैं। इस तरह से आप जो व्यवहार कर रहे हैं यह अनुचित है। मैं आप से कहना चाहता हूं कि यह आप सदन का अवमान कर रहे हैं। मैं इसके लिए आपको चेतावनी दे रहा हूं। इस तरह यदि आप अध्यक्ष पर आरोप करेंगे तो मैं उसी समय सदन के अवमान का मामला उठाऊंगा। इस वक्त मैं छोड़ देता हूं।

उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) (संशोधन) विधेयक, 1974

वित्त मन्त्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) (संशोधन) विधेयक, 1974 को पुरःस्थापित करने हेतु सदन की अनुज्ञा मांगता हूं।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) (संशोधन) विधेयक, 1974 को पुरःस्थापित करने हेतु सदन की अनुज्ञा दी जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री नारायण दत्त तिवारी—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) (संशोधन) विधेयक, 1974 को पुरःस्थापित करता हूं।

(देखिए नत्थी 'ङ' आगे पृष्ठ 1043–1044 पर)

कार्य-स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं

श्री अध्यक्ष—

आज दिनांक 21 जून, 1974 को नियम 56 के अन्तर्गत कुल 5 (पांच) सूचनायें प्राप्त हुई हैं इनमें से श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी, कल्याण सिंह, श्री मोहन लाल कपूर, श्री ओम प्रकाश सिंह, की प्रदेश से खाद्यान्न की बड़े पैमाने पर तस्करी को केवल वक्तव्य लिए स्वीकार किया जाता है। और शेष को अस्वीकार किया जाता है। छितौनी बांध के बारे में बहस हो चुकी है, इस विषय पर 51–56 की सूचना पहले ही अस्वीकार कर गयी है।

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)—

ग्राम कासिमपुर में पड़ी डकैती में 2 सिपाही, सशस्त्र पुलिस के दो सिपाही रहले गिरफ्तार हो चुके हैं। श्रीमन् यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष—

यह इलाहाबाद के बारे में है इस पर हो चुका है। अलग-अलग कसे होगा।

श्री श्रीनारायण (जिला देवरिया)—

देवरिया जिले की बाढ़ के सम्बन्ध में श्रीमन्, कहता हूं वहां पर वड़ी भीषण स्थिति है लाखों लोग तबाही में फंसे हुए हैं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

मान्यवर, यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है। लाखों लोग मौत के मुंह में फंसे हैं। ध्यान दीजिये नहीं यह लाखों लोग मर जायेंगे? स्थिति बड़ी भीषण है।

श्री हरि केवल प्रसाद (जिला देवरिया)—

सरकार अभी ध्यान नहीं दे रही है। जब बाढ़ की स्थिति और बिगड़ेगी तो नावों की भीख मांगी जायगी और यह सरकार नावों को भी नहीं दे पायेगी। ऐसी भीषण परिस्थिति आज छितौनी बांध के पास आई बाढ़ से पैदा होगी।

श्री अध्यक्ष—

सवाल यह है कि आप लिखकर भेजिये।

श्री हरि केवल प्रसाद—

मैं इसको भेजे देता हूं आप अविलम्ब कार्यवाही करें।

श्री श्रीनारायण (जिला देवरिया)—

मान्यवर कम से कम इस पर वक्तव्य तो अवश्य दिला दें।

श्री अध्यक्ष—

इस जिले में कई ब्लाक हैं और वह भी गरीब हैं। इसी प्रकार बहुत जगह बाढ़ आती है। चिल्लाकर कहना ठीक नहीं है।

श्री हरि केवल प्रसाद—

मान्यवर, जिले में लाखों लोगों की जान माल का सवाल है। इसकी कार्यवाही तत्काल की जाय। विलम्ब करना घातक है। सचिव ने कहा था कि मैं इसको कार्यवाही हेतु भेज रहा हूं। आवश्यक कार्यवाही का कोई नतीजा नहीं निकला। आश्वासन देने के बावजूद भी इसके बाबत कोई असर नहीं हुआ। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि छितौनी में क्या हो रहा है इसको देखें। मैं आपसे चाहता हूं कि 15 लाख लोगों की जान माल तथा फसल को नष्ट होने से बचायें।

श्री अध्यक्ष—

आप जो कह रहे हैं उस पर ध्यान दिया जायेगा। आप जैसा चाहते हैं वैसा तो नहीं कर सकते हैं। हम नियम के अनुसार चलेंगे अन्यथा काम कैसे चलेगा।

श्री राम सेवक यादव—

56 की धारा के अन्तर्गत आपने जो कहा कि इलाहाबाद की स्थिति के बारे में बयान हो चुका है तो मैं कहूंगा कि इलाहाबाद की घटना में शासन को कानून तथा व्यवस्था के बारे में असफलता मिली है। वहां कानून तथा व्यवस्था में गिरावट से जानमाल तथा सुरक्षा में कमी हो गई है। वहां एक डकैती में पुलिस के सशस्त्र पुलिस के सिपाही मौके पर पकड़े गये तो इससे अधिक शासन की असफलता का कोई बयान नहीं है। मुख्य मन्त्री के बयान के बाद जान-माल तथा जीवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी उन पर है परन्तु उनके सिपाही ही जनता को लूट रहे हैं। फैजाबाद तहसीलदार का घर लूट लिया गया। डकैती पड़ी और हजारों रुपये की सम्पत्ति चली गयी। जब ऐसी जगहों की सुरक्षा नहीं हो सकती है तो कहीं यह शासक के रक्षक ही भक्षक न बन जायं। पता नहीं कैसे सुरक्षा होगी।

श्री अध्यक्ष—

ग्राम कासिमपुर, थाना नवाबगंज, जिला इलाहाबाद में जो ग्रामीण एवं डकैतों में मुठ-भेड़ हुई है उसके बारे में मुझे लिखित सूचना प्राप्त हुई परन्तु वह स्पष्ट होनी चाहिये थी। इसको लिखकर फिर दे दें। सिपाही हैं इसमें। मैंने पढ़ा तो जरूर लेकिन उस पर ध्यान नहीं दिया गया। अब आप 51 में दे दें।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

माननीय नियम 56 के अन्तर्गत मैंने कामरोको प्रस्ताव भेजा था कि 22 मई से इलाहाबाद में निरन्तर भूख हड़ताल चल रही है। हजारों आदमियों ने प्रदर्शन किया। इस पर आप मुख्य मन्त्री जी से बयान दिलवा दीजिये।

श्री अध्यक्ष—

हड़ताल और भूख हड़ताल तो चलती रहती है।

श्री मधुकर दीघे (जिला गोरखपुर)—

जो प्रश्न कार्यवाही के लिए सरकार के पास भेजे जाते हैं उस पर कोई कार्यवाही हुई यह तो पता चलता नहीं है। वस्तु स्थिति में कोई कार्यवाही होती ही नहीं है।

श्री अध्यक्ष—

जो कार्यवाही के लिए जाते हैं उन पर कार्यवाही जरूर होती है। आपको भी बता दिया जायगा। जब वक्त आता है तो सूचनाओं को पढ़ दिया जाता है उस समय आप समुचित ध्यान देते नहीं हैं।

श्री मोहन लाल कपूर (जिला मेरठ)—

माननीय विशेषाधिकार का प्रश्न क्या हुआ? मैंने आज ही लिख कर दिया है।

श्री अध्यक्ष—

मैंने उसे अभी देखा नहीं है।

श्री मोहन लाल कपूर—

क्या आप उसे अगले तिथि की नोटिस मान लेंगे?

श्री अध्यक्ष---

जब मैंने कहा कि उसे देखा ही नहीं है तो मैं कैसे कह सकता हूं।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)---

दफा 52 की नोटिस को आपने नहीं लिया तो क्या 24 तारीख को उस पर विचार होगा ?

श्री अध्यक्ष---

उस पर कोई व्याख्यात्मक टिप्पणी नहीं थी ।

1974-75 के आय-व्ययक पर सामान्य विवाद (क्रमागत) †

*श्री फिरंगी प्रसाद विशारद (जिला गोरखपुर)---

मैं आपका बड़ा आभारी हूं कि आपने कल ही बोलने का अवसर दिया था परन्तु कार्य-सूची में दूसरे सम्बन्धित विषयों के लिए जाने के कारण आपने मुझे आज 1974-75 के बजट पर बोलने का अवसर दिया। मान्यवर, इस नाते आवश्यक होता है कि किंचित वाक्यों के कहने से क्रम भंग हो जाता है इसलिए मैं चाहता हूं कि....

श्री अध्यक्ष---

इसमें कोई असुविधा नहीं होती है एक दिन का समय और मिल जाता है।

श्री फिरंगी प्रसाद विशारद---

मान्यवर, चौथी पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य था स्थिरता के साथ प्रगति लाना। तो इसका अर्थ यह होता है कि समाज में संघर्ष सबल और निर्बल का होता है। सबल और निर्बल को कहां तक समता में सरकार लावे, यह किसी भी जनप्रिय सरकार का उद्देश्य होता है। लेकिन इस चौथी पंचवर्षीय योजना में हुआ क्या, कि जो आदमी जितना था या जितनी पूंजी थी, कमजोर वर्ग पीछे गया है और बड़ा वर्ग उसके मुकाबले अनुपाती ढंग से आगे गया है। गरीब और गरीब हुआ है और अमीर और अमीर हुआ है। इसके साथ पांचवीं पंचवर्षीय योजना का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था और इसका जो मूल उद्देश्य है उसमें गरीबी को कम करना कहा गया है और आर्थिक आत्म निर्भरता की ओर बढ़ा कहा गया है। यह दोनों शब्द समानार्थक हैं। जब गरीबी कम होगी तो आर्थिक आत्म निर्भरता की ओर बढ़ेंगे। गरीबी शब्द बड़ा व्यापक है। इसमें मकान, भोजन और वस्त्र सभी सम्मिलित हैं। जब निजी और आवश्यक आवश्यकतायें पूरी होती हैं तो आदमी आत्म निर्भर होता है और उसके बाद वह उद्योग-धंधों या अन्य कार्यों की ओर जाता है। जहां तक पांचवीं पंचवर्षीय योजना की बात है वित्त मन्त्री जी ने कहा है कि अभी इसका आकार निश्चित नहीं है। लेकिन यह भी है कि जब इसका आकार निश्चित होगा तो फिर भी वह बड़े वर्ग को ही लेंगे, ऐसी मेरी धारणा है। पांचवीं योजना का लक्ष्य पूरा होगा या नहीं यह भविष्य बतलायेगा। उधर से यह कहा जाता है कि हम प्रगति की ओर हैं। प्रगति की आख्या देते हुए दो एक दिन पूर्व श्रीमती रामरती देवी ने कहा था कि हरिजन बड़ी तेजी से प्रगति कर रहे हैं।

मान्यवर, एक भूमि व्यवस्था जांच समिति बनी थी जिसके अध्यक्ष मंगल देव विशारद जी थे। यह भी उस समिति की एक सदस्या थीं। अगर उस समिति की रिपोर्ट को देखें

---

†20 जून, 1974 की कार्यवाही से।
*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री फिरंगी प्रसाद विशारद]

तो उसमें उन्होंने बिल्कुल विपरीत कहा है। देहातों में जब हरिजनों की भूमि हड़पी जा रही थी तो मैंने उनको नैनीताल में हवा खाते देखा था। मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि जिनको अवसर भी मिलता है वे भी अपनी भूमिका ठीक तरह से नहीं निभाते और अपनी वक्तृता और चातुर्य का परिचय देकर निकल जाते हैं। पिछले बजट में भी माननीय वित्त मन्त्री जी ने हरिजनों के विषय में कहा था कि हरिजन आयोग बनाया जायगा, उनके लिए पुलिस का एक अलग अफसर होगा जो उनके सताये जाने आदि की घटनाओं पर विचार करेगा। आज भी आयोग गठित करने की बात कही गयी है। मैं समझता हूं कि ज्यों-ज्यों ऐसी बातें होती हैं उन लोगों पर और अत्याचार बढ़ता है। यह भी कहा गया है कि इनकी बस्तियों में बिजली दी जायगी। मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि हरिजन बस्तियों में जो बिजली की लाइन है 12 और 1 बजे रात में बिजली पहुंचती है। इसके साथ ही साथ मैंने एक समाचार पत्र में भी पढ़ा था कि जो शिक्षण संस्थाएं मान्यता प्राप्त हैं उनमें जो नियुक्तियां होती हैं उनमें हरिजनों का ध्यान नहीं रखा जाता। आपसे आग्रह है कि उन का कोटा पूरा होना चाहिये।

मान्यवर सत्ता पक्ष की ओर से माननीय चौधरी साहब पर आक्षेप लगाया गया कि वह कहते हैं कि सवा छः एकड़ पर लगान लिया जाय। पता नहीं वे लोग जो ऐसा समझे चेतन अवस्था में रहे या अचेतन अवस्था में रहे। चौधरी साहब का पवित्र कथन, जो मैं समझा यह था कि खेती पर जो लागत लगती है, खाद, बीज, पानी आदि की शक्ल में उस लागत को घटा दिया जाय तो खेती में उपज बढ़ेगी और फिर किसान अधिक लगान भी दे सकता है। विश्व का कोई देश ऐसा नहीं है जहां उरवरक पर टैक्स लगता हो लेकिन हमारे यहां टैक्स लगाया गया है। जबकि हमारा कृषि प्रधान देश है किसान को कोई सुविधा नहीं दी जाती। इसलिए उनका कहना था कि कृषि सम्बन्धी उपयोग की चीजें सस्ती दर पर दी जायं और फिर यदि लगान भी लगा दिया जाय तो किसी को एतराज नहीं होगा...

इसी के साथ ही साथ मान्यवर, मैं आपका ध्यान सिंचाई और विद्युत की ओर भी ले जाना चाहता हूं। मान्यवर, 1947 से जब से अंग्रेज गये, उस समय इस देश की सिंचित भूमि साढ़े सत्रह प्रतिशत थी। उसके बाद आज तक केवल 5 तिशत ही सिंचाई में वृद्धि हुई है। यह सरकार के आंकड़ों से प्रतीत होता है। आपका बिजली बोर्ड, जो घाटे म जा रहा है, इसमें भी सरकार असफल हो जा रही है। सरकार पूरी नियत तभी साफ होगी, जब इसके लिये भी कोई आयोग बिठा दिया जाय।

राजस्व परिषद् के लिये भी, मान्यवर, कहना चाहता हूं कि आज राजस्व परिषद् में बहुत से मामले आते हैं और बहुत दिनों तक अनिर्णीत रहने के बाद पुनः वापस हो जाते हैं। इसमें भी सुधार होना चाहिये।

मान्यवर, इस प्रदेश का दुर्भाग्य है, कि यहां पर नदी-नाले बहुत हैं। यह नदी-नालों से ग्रसित प्रदेश है। यहां बाढ़ बहुत आती हैं। लेकिन बाढ़-नियंत्रण के लिये जो धनराशि लगायी गयी हैं, वह बहुत कम है। इसी के साथ, मान्यवर, मैं थोड़ा सा संदर्भ अपने क्षेत्र का भी देना चाहता हूं। गोरखपुर जनपद में राप्ती नदी ऐसी नदी है जिसकी प्रकृति हमेशा कटाव की ओर रहती है। कभी मील भर आगे बढ़ जाती है और कभी मील भर पीछे बढ़ जाती है। जब नदी में पानी भर जाता है तो नीचे कटाव शुरू हो जाता है। गर्मी के बाद प्रथम बार, जब पानी बढ़ना शुरू होता है तो कटाव नीचे से प्रारम्भ हो जाता है। बरसात हुयी नहीं कि कटाव शुरु हो जाता है। इसलिये मेरा निवेदन है कि बाढ़ नियंत्रण के लिये ऐसी योजना रखी जाय कि जिससे जनजीवन सुखी हो सके।

अब मान्यवर, मैं सरकार का ध्यान कृषि की ओर ले जाना चाहता हूं। खरीफ अभियान में हरी खाद के बीज भेजे गये, लेकिन वह किसानों को उपलब्ध नहीं हो सके।

हम खाद के मामले में बहुत पीछे हैं आज की स्थिति में 12 वर्ष पीछे हैं। खाद के विषय में, मान्यवर, मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। गोरखपुर में एक तीरथराम गुप्ता है, जिन के यहां से ब्लेक खाद, 11 और 12 जून को 500 बोरी ट्रक में लदी हुई जा रही थी। ट्रक के नं0 हैं—यू0 एस0 वी0 —7585 और यू0 पी0 एच0 —3171, इस ट्रक के मालिक श्री ओम प्रकाश केजरीवाल है। जिनके विषय में मेरे इस सदन के एक माननीय सदस्य ने संकेत किया था कि एक लाख रुपये की अवैध खाद पकड़ी गयी। यह वही व्यक्ति है जो देवरिया का निवासी है और अपनी दूकान चौरी चौरी में स्थापित किये हुये है। ऐसी खाद हर जिले में अवैध रूप से रखी गयी है। ऐसी खादों को सील करने में अधिकारियों ने कम तत्परता दिखाई है और वह खाद बड़े-बड़े व्यापारियों के हाथ बाहर चली गयी। मेरे क्षेत्र में ब्रह्मपुर ब्लाक है। उसके क्षेत्र में एक रघुनाथ नाम का बनिया है। उसकी कोई हैसियत नहीं थी। वहां के भ्रष्ट बी0 ो0 ओ0 ने कहा कि इस ब्लाक को कुछ खाद पुरानी है जो लेना चाहे ले ले, मुझसे भी कहा लेकिन मैंने इंकार कर दिया। फिर तस्करी करने के विचार से उसको रघुनाथ नाम के बनिये को दे दिया गया। 76 बोरी यूरिया, सुपर फासफेट बरबाद हुई 14, 15 जून को। इस ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि प्रदेश में उर्वरक की कमी मानवकृत है और व्यापारियों ने उसे अपने घर जमा करके रख लिया है। शासन को चाहिये कि गुप्त रुप से ऐसे व्यापारियों की जांच कराई जाय और उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाय। इन शब्दों के साथ में इस बजट का, विरोध करता हूं।

श्री शिव कुमार पांडेय (जिला सुल्तानपुर)—

अध्यक्ष महोदय, पिछले 5 सालों से बजट भाषण में अपने विरोधी दल के नेताओं का सुनता आया हूं। चाहे कोई सरकार रही हो लेकिन उनके भाषण की न शैली में न इल्जमात लगाने में कोई तब्दीली हुई और उनमें सुझावों का बिलकुल अभाव रहा। आशा मैं यह करता हूं कि वरिष्ट नेता विरोधी दल के अपने सुझावों से हमको लाभान्वित करेंगे लेकिन सुझावों के नाम पर कुछ नहीं किया गया। गालियों पर गालियां कभी तेज और कभी नम्र और कभी 5 घंटे का भाषण और कभी 2 घंटे का भाषण सुनने को मिला। मगर सब गाली ही गाली। इस बार कम्युनिस्ट पार्टी के नेता भी उभर कर सामने आये हालांकि वह हमारे साथ हैं। पर उनका तलवार पर ज्यादा विश्वास है इसलिये जल्दी चेंज चाहते हैं। किन्तु प्रजातंत्र विधान व नियमों में विश्वास करते हुए समाज को चेंज करता है और तलवार से नफरत, इसमें कुछ समय लगता है यह अन्तर है। वैसे विरोधी दल के नेताओं ने जो भाषण दिये हैं उनमें कोई अन्तर नहीं है। जहां तक इल्जाम लगाने का सवाल है भ्रष्टाचारी कहिये अथवा चोर कहिये यह अपना अधिकार है मगर जरा सोचिये कि माननीय चरण सिंह ने वैसे चुनाव म जहां जहां भाषण किये वहां पर भाषण में एक शब्द अवश्य कहा कि जिस दिन वह मुख्य मंत्री हो जायंगे उसके 6 घंटे के बाद पूरा का पूरा भ्रष्टाचार खत्म हो जायगा। बड़े अदब के साथ मैं एक बात चौधरी साहब से पूछना चाहूंगा कि बीसियों साल तक वह मिनिस्टर रहे। कभी रेवेन्यू मिनिस्टर, कभी गृह मंत्री और कभी कृषि मंत्री। क्या उनके जमाने में लेखपाल ने बिना से लिये हुए किसी आदमी को नकल दी है।

(व्यवधान)

श्री राम सेवक यादव (जिला बाराबंकी)—

आपसे जानकारी करना चाहता हूं क्योंकि आपसे कुछ सीखना है। मैं एक जानकारी चाहता हूं कि क्या आपने चौधरी साहब की चुनौती स्वीकार कर ली है कि भ्रष्टाचार समाप्त करने में आप असफल रहे हैं ?

श्री शिव कुमार पांडेय--

स्वीकार तो कर रहे हैं। लेकिन भ्रष्टाचार को समाप्त करने में हम आपका भी पूरा-पूरा सहयोग चाहते हैं। जैसा कि मैंने आपको बताया कि बगैर घूस के आपके जमाने में किसी लेखपाल ने कोई नकल दी। चौधरी साहब भी 14 महीने तक मुख्य मंत्री बने रहे। उस समय भी भ्रष्टाचार दूर नहीं हुआ था तो अब कौन सा जादू उनके हाथ में आ गया जिससे कि वे मुख्य मंत्री होने के कुछ घड़ी के बाद सारे भ्रष्टाचार को दूर कर देते। वही सहयोग चौधरी साहब से हम चाहते हैं।

जहां तक बजट का सवाल है, मान्यवर, बड़ी गम्भीरता से आप देखें कि हमारी आर्थिक परिस्थितियां बहुत खराब होने के बावजूद भी और योजना आयोग से बार-बार कहने के बाद भी वह हमें पैसा नहीं दे रहे थे। इसके लिये बहुत कोशिश की गई। पांचवी पंचवर्षीय योजना में हम चाहते थे कि 587 करोड़ रुपये प्रथम वर्ष में खर्च करें लेकिन योजना आयोग से बार-बार कहने के बाद भी उन्होंने हमारी बातों को नहीं माना और कहा कि पैसे के अभाव में 73-74 का जैसा बजट था वैसा ही 74-75 का भी बनाया जाय। ये आर्थिक कठिनाइयां थी। उसके बाद भी बड़ी मुश्किल से उन्होंने 255 करोड़ रुपये की हमें स्वीकृति दी। फिर भी हमने 271 करोड़ समें रखे हैं, यह बड़ी खुशी की बात है।

हमने कृषि और उद्योग को इसमें सबसे ज्यादा महत्व दिया है। अगर आप सही आंकड़ों को देखें, आपके पास न मालूम कहां से आंकड़े आ जाते हैं जो आंकड़े हम रद्द कर देते हैं उन्हीं का सहारा आप लेते हैं, किन्तु जो वास्तविक आंकड़े हैं उनको देखने से पता चलेगा कि कृषि में हमने 49 करोड़ से बढ़ा कर 55.26 करोड़ रख दिया, सिंचाई में 114 करोड़ से बढ़ा कर 139 करोड़ रख दिया, उद्योग में 9 करोड़ से बढ़ाकर 19 करोड़ रखा है। इसी प्रकार कृषि उत्पादन में 6 प्रतिशत और औद्योगिक उत्पादन में 8 से 10 प्रतिशत तक वृद्धि करके लक्ष्य हासिल करने के कदम उठाये हैं। आप कहते हैं कि बजट कोई माने नहीं रखता है। मैं बड़े अदब के साथ यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप पिछले 24 साल के इतिहास को सोचें। आप कहते हैं कि आज हरिजनों को हम भीख दे रहे हैं। मैं आपसे पूछता हूं कि आज तक की पिछली किसी भी सरकार ने यह हिम्मत की कि वह हरिजनों के लिये ऐसा कानून बनावे कि यदि कोई व्यक्ति हरिजन पर एक तमाचा भी मारेगा तो उस पर 323 का मुकदमा दायर होगा और दरोगा उसकी तुरन्त मेडिकल जांच करायेगा। क्या अभी आज तक 24 साल के इतिहास में ऐसा कानून यहां पर आया है? हरिजन बस्तियां फूंक दी जाती थी उनको परेशान किया जाता था मगर क्या कभी उसके रोकने के लिये कानून बनाया गया? चौधरी साहब मुख्य मंत्री भी रहे हैं, माल मंत्री भी रहे हैं, कृषि में भी रहे हैं, जनसं के नेता तथा विरोधी दल के अन्य लोग भी सरकार में रहे हैं वे अपने दिल पर हाथ रखकर सोचें कि क्या कभी उन्होंने उनकी बेहतरी के लिये कोई जुर्रत की कि हरिजनों के लिये ऐसा कानून बनाया जाय जो उस पर यदि एक तमाचा भी मारेगा तो उस पर मुकदमा चलाया जायेगा और दरोगा स्वयं उसकी डाक्टरी जांच करायेगा.....

श्री राम सेवक यादव--

दफा 323 जो है वह दखलनदाजी की है जिसे आप और केन्द्र चाहे तो कर सकते है।

श्री शिव कुमार पांडेय--

आज हरिजन लड़कों के वजीफे में बढ़ोत्तरी की गई। आप कहते हैं कि हम टुकड़ा बांटते हैं। हमने दृढ़ता के साथ कहा कि चकबन्दी की जितनी भूमि निकलेगी जो गांव समाज की होगी। वह केवल हरिजनों और भूमिहीनों में बांटी जायेगी। क्या आप स्वीकार

करेंगे कि भाई रामसेवक जी की कुल जमीन उठाकर हरिजनों को दे दी जाये ? यह कोई स्वीकार शायद नहीं करेगा । इसीलिये हम गांव समाज की सारी जमीन दे रहे हैं । किन्तु आप उस को टुकड़ा कहते हैं। हम उपकार करें तो वह भी टुकड़ा है। हमने गरीबों और हरिजनो के लिये बहुत कुछ किया है। हजारों जगह तलाशी लेकर गल्ला, खाद, बनस्पति और सोना चांदी हमने निकलवाया है। हम ब्लेक मार्केटियर्स के पीछे पड़े हुये हैं। किन्तु आप लोग हमें सहयोग देने के बजाय जब जरुरत पड़ती है, उन्हीं ब्लेक मार्केटियर्स को लेकर हमारे मंत्रियों के पास आते हैं और उन पर दबाव डालते हैं कि उनको क्यो पकड़ा गया है, इनको छोड़ये। यह बड़े ईमानदार हैं।

ऐसी मिसालें रोज इस सचिवालय से लेकर दारूलशफा तक तमाम देखने को मिल ी हैं। मैं तो कहता हूं कि कहने को तो आप भगवान को भी ोष दे सकते हैं उस पर भी चार्ज लगा सकते हैं कि उसने पीपल जैसे बड़े पेड़ पर छोटा फल और छोटे पेड़ पर कुम्हड़ा जैसा फल क्यों लगाया ? लेकिन मैं कहता हूं कि वह पीपल पर कुम्हड़ा जैसा बड़ा फल लगाता तो वह लोगों का सिर न फोड़ ेता। वास्तविकता यह है कि हमारा जो कदम है वह समाजवादी है और उस पर हम चल रहे हैं, बड़ी मजबूती से चल रहे हैं। आप उसको मानें चाहें न मानें, किन्तु जनता मानती है और उसको स्वीकार करती है। इसीलिये आपके बार बार चिल्लाने से, उसे तमाम सब्जबाग दिखाने के बावजूद जनता ने हमको बहुमत दिया है। उसने हमें केन्द्र और प्रदेश दोनों जगह बहुमत में भेजा है। ऐसा बहुमत हमें बहुत दिनों बाद मिला है। इसकी वजह उनका हमारे कार्यक्रमों पर, हमारी नीतियों पर और हमारे आश्वासनों पर परम विश्वास है ।

आप जनता के प्रतिनिधि है और जनता हमारे साथ है, इसलिये आपको भी हमारा कायल हो जाना चाहिये। यह सही है कि गांवों में कुछ परेशानियां है उनकी तरफ मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। जैसे कि नहर का पानी देने की एवज में नहर विभाग पूरा पैसा ले लेता है जबकि वह पूरा पानी नहीं दे पाता है पर्याप्त पानी न मिलने से और समय पर न मिलने पर समय-समय पर किसानों की फसलें सूख जाती है, अतः चाहिये तो यह कि आप उसकी फसल का उसे मुआवजा दें। किन्तु आप ऐसा नहीं कर रहे हैं। वैसे नहर यदि कहीं कट गई और उसका जो पानी बहता है, उससे किसानों की पचासों बीघे फसल नष्ट हो जाती हैं। नहर विभाग उसका भी पैसा जबरदस्ती चार्ज कर लेता है जबकि जो उसकी गलती से पानी बहा है और इस प्रकार जो फसल बर्बाद हुई है उसका मुआवजा किसानों को अवश्य मिलना चाहिये ।

किसानों को सब से ज्यादा तकलीफ बिजली से है । तय है कि हम मिनिमम गारेन्टी देंगे और यह हमको बिजली देंगे, लेकिन यह हमको बिजली हपतों नहीं देते हैं किन्तु अपना मिनिमम चार्ज वसूल कर लेते है। यह हमारे साथ ज्यादती है। मेरा सुझाव है कि यदि बिजली दे सके तो उसकी कीमत लें और यदि न दें तो उसका पैसा न लें। चाहे जब बिजली दें। जब आप रात्रि में बिजली देते है तो सर्दी की रात्रि में किसानों को बहुत मुसीबत उठानी पड़ती है। मेरा निवेदन है कि नहर का पानी या बिजली जो मिले, जितनी मिले उसका उतना पैसा हमसे ले और उससे हमारा कोई नुकसान हो तो उसका हमें मुआवजा मिले।

नहर विभाग ने बाढ़ कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ नालों को खुदवाया है। अब जब किसान उससे सींचते है तो नहर वाले उसका भी पैसा ले लेते हैं। जबकि यह उनकी नहर का पानी नहीं है और उसके पानी से वह सदा से अपने खेत सींचते आये हैं और वह प्राकृतिक पानी है। इन नालों को केवल उन्होंने चौड़ा कर दिया है। यह बड़ी गलत बात है ।

दूसरी चीज यह है, चौधरी साहब ने जो कहा है कि सवा छः एकड़ तक की लगान जो माफ है, वह मालगुजारी लगाई जाये और इसके बदले में उनको खाद, पानी व बिजली सस्ती

[श्री शिव कुमार पांडे]

दर पर और समय पर उपलब्ध कराया जाये, उससे मैं पूरी तरह से सहमत हूं। मैं उसका स्वागत करता हूं। पिछली मर्तबा जब विधेयक पेश हुआ था, उस समय भी मैने कहा था कि यह जरूरी नहीं है कि काश्तकार की मालगुजारी माफ की जाय। जरूरी यह है कि गवर्नमेंट उसको पानी की सुविधा दे, खाद की सुविधा दे। इन शब्दों के साथ म माननीय वित्त मंत्री को धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने इतना प्रगतिशील बजट पेश किया है।

*श्री वेद प्रकाश अग्रवाल (जिला फैजाबाद)—

मान्यवर, अध्यक्ष महोदय, वित्त मंत्री महोदय ने जो 1974-75 का बजट प्रस्तुत किया उसमें उन्होंने कहा कि पांचवी योजना का लक्ष्य गरीबी कम करना तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता की दशा में आगे बढ़ना है, आमदनी तथा सम्पत्ति में असमानता को कम करना है। यह चीज उन्होंने बतायी कि पांचवी योजना को प्रारम्भ करते हुये अपने बजट में प्रस्तुत किया। मान्यवर, आप यह देखे कि जो यह कहा है कि गरीबी कम करना है और आत्मनिर्भर बनाना है, इस पर आप विचार करके देखें। गरीब और गरीबतर होता जा रहा है और यह अमीर को कितना ऊंचा उठाकर अमीर बनाते जा रहे हैं। यह विचार करना होगा। उसके बाद समता की बात कहते हैं। मंत्री महोदय बैठे हैं। जरा विचार करें। इनकी आमदनी और साधारण काम करने वाले मजदूर की आमदनी में क्या अन्तर है। यह कांग्रेस का समाजवाद बता सकता है या सत्ता की ओर बैठे हुए, बहुमत में आये हुए, किन्हीं भी साधनों से जीत कर आये हुये, यह स्वयं उसको विचार करेंगे।

मान्यवर, जब कभी नये विधायक कुछ उल्टी सीधी बोल जाते हैं, तो यह कहा जाता है कि नये विधायक हैं। लेकिन शायद पुराने विधायक कब क्या कहते हैं उसको शायद भूल जाते हैं। 27 जुलाई 1967 को श्री प्रभु नारायण जी का भाषण । उसकी दो पंक्तियां आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं—"मैं कहना चाहता हूं कि उनके साथ पिछले 20 सालों में जो न्याय होना चाहिये था वह नहीं हुआ। यहां तक कि नौकरियों में जो 18 प्रतिशत उन के लिये सुरक्षित जगह थीं उनकी भी उचित तरीके से पूर्ति नहीं की गयी। मैं आपके द्वारा सदन को सूचित करना चाहता हूं कि आज तक कांग्रेस शासन में एक भी हरिजन का जो पब्लिक सर्विस कमीशन में नामजद नहीं किया गया। लेकिन इस संविद सरकार ने आने के बाद ही पहली बार हरिजन सदस्य को पब्लिक सर्विस कमीशन में नामजद किया। आगे जमीन के बारे में भी है। मैं उसको नहीं कहूंगा। इसके आगे भी बताना चाहता हूं। आपके बजट भाषण के पृष्ठ 7 पर यह लिखा है—हमने राज्य के किसानों से वादा किया था कि उनकी उपज के लिये पर्याप्त मूल्य सुनिश्चित किया जायगा।

मान्यवर, किसानों के गेहूं की कीमत 116 रुपये होती है जो 105 रुपये में खरीदा जा रहा है। 103 में खाद देते हैं। क्या सुन्दर मूल्य आपने किसान के लिये दिया है। जरा अपने दिल पर हाथ रख कर सोचे। जब आप 76 रुपये में गेहूं खरीदते थे तो 86 रुपये में बेचते थे। उस समय 10 पैसे प्रति किलो प्राफिट लेते थे। आज 105 में गेहूं लेते हैं और 135 में बेचते हैं। यह मुनाफाखोर, यह जमाखोर, गवर्नमेंट है। यह विचार नहीं करते। 28 पैसे प्रति किलो एक चीज पर मुनाफा लेने वाले मंत्री सोचें, कि यह बजट वास्तव में क्या है। 103 रुपये में खाद बेचते हैं, पानी नहीं दिया जाता, बिजली नहीं दी जाती बीज नहीं दिया जाता। किसानों का गेहूं 105 में जबरदस्ती लिया जा रहा है। वह हरिजनों का गेहूं जो दस बोरे रखा हुआ है, ए0 डी0 एम0 जाते हैं, तहसीलदार जाते हैं, नायब तहसीलदार जाते हैं। जबरदस्ती उसके घर से गेहूं निकाल लाते हैं और ले जाते हैं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मैं आपके सामने रखना चाहता हूं पैदावार का एक उदाहरण। अभी एक बाजार में अधिकारी गये और लोगों का गेहूं ले लिया गया। मुख्य मंत्री बड़ी जोर से मेज थपथपाकर कहते है कि यदि किसानों से खाद का ज्यादा पैसा ले लिया जायेगा तो वह वापस कर दिया जायेगा। उनसे 3–3 बोरियां गेहूं लिया गया और डेढ़ बोरी खाद की दी गई और ज्यादा दाम पर दी गई। मुख्य मंत्री जी इस समय नहीं हैं। फैजाबाद के मेहरूवा बाजार में किसानों से गेहूं लिया गया। कोई कार्यवाही नहीं हुई और कोई भी रसीद नहीं दी गई तो पैसा वापस होने का कोई सवाल ही नहीं रहता है।

मान्यवर, आज फैजाबाद एक ऐसा पिछड़ा हुआ जिला है जहां कंट्रोल की दुकान पर गेहूं नहीं है तो यह काला बाजार कैसे खत्म करेंगे। मैं मुख्य मंत्री जी का एक आंकड़ा प्रस्तुत कर रहा हूं। मुख्य मंत्री जी इस समय नहीं है, शायद कोई मंत्री हो बाकी सब आराम कर रहे हैं। मेरी बात उन तक पहुंचा दे। मुख्य मंत्री जी ने कहा है कि आज मंहगाई बढ़ती जा रही है। मुझे बड़ी उम्मीद थी कि माननीय झारखंडेराय जी स्टेट ट्रेडिंग की ओर बढ़ेंगे। अपने सार्वजनिक भाषण के अनुसार काला बाजार खत्म करेंगे। आगे छापे मारने की बात कही गई है। कल तक ये कम्युनिस्ट भाइयों की खिल्ली उड़ाते थे लेकिन आज उनक साथ चिपक कर बै हैं। देखिये काला बाजार कहां खत्म हो रहा है। आज नहाने के लिये साबुन नहीं मिल रहा है। काले बाजार में 1 रुपये 80 पैसे में मिलता है। चाय पीने के लिये चीनी साढ़े चार रुपये किलो हजरतगंज में मिलती है। गेहूं नहीं है रिक्शा चलाने वाले को शाम को गेहूं ब्लैक से मिलता है। (व्यवधान) यह काला बाजार खत्म कर रहे हैं।

मान्यवर, आज आप देखें कि लड़कियों की शादी करने के लिये डालडा घी 225 230 पये प्रति टिन मिल रहा है। यह काला बाजार खत्म कर रहे हैं। 1964 में जिसने सामान लाकर काला बाजार खत्म कर दिया वह कहे तब तो ठीक है। बहुगुणा जी ने यह कहा था कि यह लेवी संविद सरकार ने लगाई थी। लेकिन छोटे किसानों को इससे छूट दी गई थी। लेकिन आज का मंत्रि-मंडल सब से वसूल कर रहा है। पुलिस के बल पर किसानों का गेहूं उठा रहा है। एक दिन वह आयेगा कि जनता इसका सबक सिखायेगी।

मान्यवर, यह भी कहा गया है कि हम जनता को आवश्यक वस्तुयें उपलब्ध करायेंगे। लेकिन क्या मिल रहा है? आज मकान बनाने के लिये सीमेंट नहीं मिल रही है। चीनी नहीं मिल रही है, तेल नहीं मिल रहा है, डीजल नहीं मिल रहा है और फिर भी कहते हैं कि जीवनोपयोगी वस्तुयें उपलब्ध करायेंगे।

मान्यवर, मैं आपके द्वारा सदन को बताना चाहता हूं कि आज यह बड़ा ढिंढोरा पीटा जा रहा है कि अनुसूचित जातियों के लिये हम यह कर रहे हैं, वह कर रहे हैं। लेकिन हालत यह है कि फैजाबाद में एक हरिजन कालोनी बनी है। उसमें एक लात मारो तो दीवार टूट जाय। बारिश में उसकी छत गिर जायेगी। दूसरे उनके मकान बहुत दूर बनाये गये हैं। अब वे अपने खेती की रखवारी करें या मकानों की रखवारी करें। पारसाल आपने 20 रुपये मासिक बी0 टी0 सी0 अध्यापकों को दिया था। लेकिन आज उनसे वह रुपया वापस लिया जा रहा है। आज यह कहते है कि हम जनता के सेवक हैं।

मान्यवर, मैं अपना भाषण बहुत जल्दी समाप्त करूंगा। बजट में मान्यवर शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की बात कही गयी है। यह बात कितने दिनों से की जा रही है कि शिक्षा का राष्ट्रीयकरण करेंगे, लेकिन शिक्षा का राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ है। बेरोजगारी दूर करने की बात की गयी है लेकिन हम देखते हैं कि बेरोजगारी दूर नहीं हो सकी है। लघु उद्योगों के लिए कुछ नहीं किया गया है। गांवों में कुटीर उद्योगों की कोई योजना नहीं बना पाये हैं। मान्यवर, मैं कह रहा हूं कि उद्योगों की हालत बदतर होती जा रही है। मिलें बन्द होती जा रही हैं। बढ़ती जा रही है और उद्योग चौपट होते जा रहे हैं।

[श्री वेद प्रकाश अग्रवाल]

मान्यवर, जितनी बिजली उत्तर प्रदेश को मिलती है उससे अधिक अन्य प्रदेशों को मिलती है। आज उद्योगों को बिजली नहीं मिलती है, उनको कच्चा माल नहीं मिलता है और कहते हैं कि प्रोडक्शन बढ़ा है। अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूं जो उद्योग उत्तर प्रदेश में लगाया जाता है वह प्रधान मंत्री के चुनाव क्षेत्र रायबरेली में लगाया जाता है। क्यों ? जो उद्योग खोले जा रहे हैं वह मुख्यमंत्री और प्रधान मंत्री के क्षेत्र में क्यों ? फैजाबाद में एक भी उद्योग नहीं खोला गया। वहां दूध की डेरी खोले जाने की बात कही जा रही थी लेकिन आज तक नहीं खोली गयी है। वहां पर जितनी सड़कें थीं, जितने पुल थे उन सबका निर्माण रोक दिया गया। कहा गया कि पैसा नहीं है।

उर्दू का गजट पास करते हैं और उस पर लाखों रुपया खर्च किया जा रहा है। अस्पतालों की हालत गयी गुजरी है। महिलाओं और बच्चों के लिये शैय्यायें नहीं हैं, पूरे बजट में विकास का कोई कार्य नहीं दिखाया गया है। मैं कहना चाहता हूं कि बहराइच में लड़का गायब किया गया लेकिन वहां की पुलिस उसकी छानबीन नहीं कर पायी। तो मैं अन्त में इतना ही कहना चाहता हूं कि जो बजट में टैक्स लगाये गये हैं वह गरीब जनता को भुगतने होंगे। होटलों पर केवल 6 लाख रुपया टैक्स लगाया गया है। शराब की दुकानों पर कौन जाता है। कौन जाता है सिनेमा देखने। छोटी-मोटी चीजें कौन खरीदता है ? कौन उनको इस्तेमाल करता है। इसका भार किस पर पड़ेगा। इसका भार गरीब जनता पर पड़ेगा। आपने रोड टैक्स लगाया है। कौन अपना माल रोड पर ले जाता है। यह गरीब जनता है जिस पर इसका भार पड़ेगा। सिगरेट पर टैक्स लगाया गया है यह गरीबों पर टैक्स लगाया गया है। टैक्स लगाकर उत्तर प्रदेश की 9 करोड़ जनता पर जुर्म किया गया है। यह बजट फर्जी है, झूठा है। जनता को धोखे में डालने वाला है। इस रूप में मैं इसका विरोध करता हूं।

श्री राम नारायण पाठक (जिला कानपुर)—

मान्यवर, मैं आपका बड़ा आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मान्यवर, सदन के पटल पर जो बजट प्रस्तुत किया गया है मैं जोरदार शब्दों में इसका समर्थन करता हूं। मैं ऐसा मानता हूं कि यह बजट जो 3 हजार करोड़ का है यह कम है। मेरा ऐसा अनुमान है कि भारत सरकार का कुल बजट का धन एक विभाग को दे दिया जाये तो फिर भी कम पड़ेगा, ऐसा मेरा कहने का आधार है। मैं हिन्दुस्तान के मजदूरों का प्रतिनिधित्व करने के लिए आई० एल० ओ० (I. L. O.) में गया हुआ था।

(इस समय 1 बजकर 10 मिनट पर अधिष्ठाता कुंवर श्रीपाल सिंह पीठासीन हुये।)

और वहां से विदेशों के बहुत से मुल्कों के लोगों ने एक भेंट में इस बात की पुष्टि की कि अगर देश का सारा बजट एक विभाग को दे दिया जाय तो जनता की तकलीफें इतनी हैं जो हल करना कठिन है। मान्यवर, आप यह महसूस करते हैं कि कुछ बातें जो विरोधी दल के लोगों ने आशंकाएं प्रस्तुत की हैं कि जो धन दिया जा रहा है वह पूरे तौर से खर्च किया जायगा। उसका सही खर्च होगा या नहीं यह बात तो उनकी ठीक है लेकिन मैं विरोधी दल के लोगों से यह कहना चाहता हूं कि जो उत्तर प्रदेश में मुख्य मंत्री बहुगुणा जी हैं, उनके कर्मठ कार्य और उनकी निष्ठा के प्रति उन लोगों का भी विश्वास है और उनका शासन चलाने में भी उन्हें विश्वास है। जब से बहुगुणा जी ने कार्यभार सम्भाला है और विरोधी दल ने जो भी आंदोलन किये हैं, उनका साथ जनता ने नहीं दिया है।

श्री राम सेवक यादव—

बहुगणा जी का बोझ उठाने के लिए तो आप ही काफी हैं।

श्री राम नारायण पाठक—

मान्यवर, विरोधी दल के नेता चौधरी साहब ने हेवी इंडस्ट्रीज एवं बेसिक इडस्ट्रीज की खिलाफत की और लघु उद्योग का ज्यादा समर्थन किया है । मान्यवर, लघु उद्योग का मैं समर्थक हूं इसका काम गांव के लोग अपने काम से फारिग होकर कर सकते हैं । लेकिन हैवी इंडस्ट्रीज का काम बगैर जानकारी के गांव के लोग नहीं कर सकते हैं ।

मान्यवर, पंडित नेहरू ने बेसिक इंडस्ट्री का सवाल रखा था । जब पहले पहल ख्रुश्चेव हिन्दुस्तान में आये तो उन्होंने यह बात कही थी कि हिन्दुस्तान का जो फूड प्रोडक्शन है चाहे इंडस्ट्रियलाइजेशन है या कृषि का उत्पादन है, यह सभी चीजें हिन्दुस्तान के अन्दर बेसिक इंडस्ट्री की आवश्यकता की चीजें हैं । लोहे की जरूरत है, बड़ी-बड़ी मशीनों की जरूरत है, जब तक हमारे अन्दर बेसिक इंडस्ट्री नहीं होती है तब तक हमें विदेशों पर भरोसा करना पड़ता है । मैं चाहता हूं कि बेसिक इंडस्ट्री और हैवी इंडस्ट्री जनता को स्वीकार करना चाहिये । इसी से बड़े-बड़े हथियार बड़े-बड़े गोला बारूद, हवाई जहाज लड़ाई के लिए बनाए गये है । अगर बेसिक इंडस्ट्री हिन्दुस्तान में न होती तो इन चीजों के लिए हमें विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता ।

मान्यवर, कारपोरेशन के बारे में कहना चाहता हूं कि अनेक कारपोरेशन जो बनाये जायेंगे उसका विरोध करना मैं समझता हूं निराधार है । मुझे पूरा भरोसा है कि यदि कारपोरेशन को यदि लिमिटेड कर दिया जाय तो ज्यादा अच्छा होता । कारपोरेशन इस बात के लिये कि वह एकाउन्टेबिल होगा, जो भी उसको जिम्मेदारी दी जायगी उसका फायदा नुकसान का हिसाब रखेगा । इसलिए जो कारपोरेशन की व्यवस्था है वह ठीक है। मान्यवर, जो धन शिक्षा और स्वास्थ्य पर व्यय करने का निश्चय किया गया है वह बहुत कम है । मेरा ऐसा विश्वास है कि अगर सरकार इन दोनों को अपने हाथ में ले ले तो अच्छा होता । आम तौर से मध्यम श्रेणी के लोग, गरीब लोग अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई में लगने वाले खर्च से बड़े परेशान रहते हैं और नये परिवार के सदस्यों की चिकित्सा ही करा सकते हैं । यदि सरकार इन दोनों विभागों को अपने हाथ में ले ले तो जितने नौकरी पेशा के लोग है, उनकी तनख्वाह बढ़ाने की मांग कम हो जायगी ।

जहां तक चीनी मिलों के राष्ट्रीयकरण की बात है मेरा अनुमान है कि इन्हें कोआपरेटिव सेक्टर को दे देना चाहिये । आज शुगर मिलों की जितनी आमदनी होती है कलकत्ते के और बंबई के बड़े-बड़े लोगों, मिल मालिकों की जेबों में चली जाती है जब कि यह रुपया जिलों के विकास में खर्च होना चाहिये । इसलिए मेरी प्रार्थना है कि इनको बड़े बड़े लोगों से लेकर या तो सरकार अपने हाथ में ले लें या उन्हें कोआपरेटिव सेक्टर को सौप दें ।

जहां तक मेरा अनुमान है इस प्रदेश में ट्रान्सपोर्ट का सिस्टम और सड़कों की व्यवस्था बहुत ही अधूरी है । अगर उत्तर प्रदेश में एक कोने से दूसरे कोने तक सड़कों की व्यवस्था अच्छी हो तो और उनको चौड़ा कर दिया जाय तो मेरा ऐसा विश्वास है कि खाद्य और उर्वरक आदि को एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाने में बड़ी आसानी हो जायगी । प्रायः होता क्या है, शहर में यदि कोई वस्तु 1 रुपये में मिलती है तो सड़कों की दुर्व्यवस्था के कारण वही गांवों में 2 रुपये में मिलती है ।

मुझे स्मरण है कि जब रूस में ख्रुश्चेव को गद्दी से हटाया गया, एक इन्क्वायरी कमेटी बैठायी गयी, श्री ख्रुश्चेव ने कहा था कि फूड का उत्पादन अमेरिका के एट पार लाने की कोशिश करेंगे। लेकिन इन्क्वायरी से पता चला कि ट्रान्सपोर्ट की कमी और सड़कों के चौड़ा न किए जाने के कारण वे फूड प्रोडक्शन को उस हद तक न ला पाये जितना लाना चाहिए था । पंजाब को देखिए, हरियाणा को देखिए तामिलनाडू को देखिए या महाराष्ट्र में चले जाइये, जहां पर सड़कों की व्यवस्था बहुत अच्छी है जिनके कारण उर्वरक और अन्य खाद्य पदार्थ एक जगह से दूसरी जगह बड़ी आसानी से लाया जा सकता है और जो भी खर्चा सड़क निर्माण पर होगा, उसका सरकार को रिटर्न मिलेगा । मकानों के बनाने में जो धन व्यय होता है, उससे सरकार को ज्यादा

[श्री राम नारायण पाठक]

रिटर्न नहीं मिल पाता है बल्कि विदेशों से कर्जा लेकर जो इन कामों में लगाया जाता है, वह हमारे ऊपर लदता जाता है । सड़कों के निर्माण से उत्पादन पर असर पड़ेगा, लोगों को रोजगार मिलेगा, रुपया अच्छे काम में खर्च होगा, फूड प्रोडक्शन को काफी बल मिलेगा ।

जहां तक पर्यटक विभाग का सम्बन्ध में सरकार ने बिठूर स्थान को जो सारे देश के अन्दर एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहां पर 1875 में पहली आजादी की लड़ाई नाना साहब तांतिया टोपे और झांसी की रानी ने लड़ी आज तक उस स्थान को पर्यटक स्थानों में शामिल नहीं किया गया है भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में प्रदेशीय सरकार से रिपोर्ट मांगी लेकिन कोई रिपोर्ट नहीं दी गयी और इस स्थान को सूची में शामिल नहीं किया गया । जहां पर लव जी ने तपस्या की, जहां पर लवकुश ने महाराजा राम से लड़ाई लड़ी और बाल्मीकी जी ने रामायण की रचना की, ऐसे स्थान पर जहां ब्रह्मा ने सृष्टि रचना की, उसकी उपेक्षा की जाय हमारे प्रदेश के लिये बड़े शर्म की बात है । इसी बिठूर से अंग्रेजों ने मैनावती को नंगा करके घसीट कर कानपुर लाये थे और पेड़ में बांध कर जिन्दा जला दिया था उस 8 किलोमीटर मार्ग को सरकार ने बनवाने पर विचार नहीं किया और वह अधूरा पड़ा है । मान्यवर, चौबेपुर से बिठूर तक 8 किलो0 मी0 सड़क है, अगर इसको बना दिया जाता तो देहली से, जी0 टी0 से आने वाले लोग ज्यादा से ज्यादा बिठूर आ सकते थे । पीपों का पुल जो तीन जगहों से खाली हो रहा है अगर वह बिठूर में बना दिया जाय तो लखनऊ से संपर्क हो जायगा और उससे काफी लोगों को लाभ होगा ।

मान्यवर, कृषि उत्पादन के बारे में मैं यह कहूंगा कि कानपुर में कृषि विज्ञान संस्थान को विश्वविद्यालय बनाने के लिए विचार किया गया है । लेकिन वहां के कालेज के डायरेक्टर धर्मपाल सिंह हैं जो वहां के कर्मचारियों के साथ बहुत ही अन्याय कर रहे हैं । उस व्यक्ति के रहते हुये विश्वविद्यालय की जो स्थापना की जा रही है, धन का खर्च किया जा रहा है उसका सही उपयोग नहीं हो पायगा । उसने पिछले चुनाव में काफी धन इकट्ठा करके चरण सिंह जी को दिया और बहुत से सरकारी कर्मचारियों को भेजा था ड्राइवों के पार्टी को चुनाव में भेजता था जो वहां जाकर काम करते रहे । मैं चाहूंगा कि इसके प्रति इस बात को देख लिया जाय, वह विद्यालय चला नहीं सकेंगे ।

श्री राम सेवक यादव---

किस विश्वविद्यालय की बात है ?

श्री राम नारायण पाठक---

कृषि विद्यालय कानपुर ।

बिजली की व्यवस्था इसके बारे में जो कैडर विभाग में सवाल रखा गया है हर विभाग में कैडर बनाया जाय एक इंजीनियर चैयरमैन को इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड बनाया गया यह ठीक है। लेकिन मैं यह बताना चाहता हूं कि जो इंजीनियर लोगों के अन्दर ब्यूरोक्रैसी है उसको कम करना पड़ेगा । जूनियर इंजीनियर्स जो विभाग की जान हैं उन लोगों को कांफिडेन्स (confidence) में लेकर विभाग काम नही कर रहे हैं । मैं चाहूंगा कि उनको कांफिडेन्स (confidence) में लिया जाय ।

श्री अधिष्ठाता---

आपका समय समाप्त ।

श्री राम नारायण पाठक---

एक मिनट और दे दीजिये । 22 करोड़ रुपया समाज कल्याण के लिये खर्च होगा । मैं चाहूंगा कि मिनिमम वेजेज ऐक्ट को खेतिहर मजदूरी के लिये सख्ती से लाग् किया जाय

और उसके रहने के लिये मकान की व्यवस्था की जाय जैसे कि आपने शहर में मजदूरों के लिये व्यवस्था की है। खेतिहर मजदूरों की तनख्वाहें बढाई जायं। लखनऊ के चिकन का काम करने वाले लोगों को सही वेजेज नहीं दी जाती हैं, इसके बारे में भी कोई प्रबन्ध होना चाहिये।

श्री अधिष्ठाता--

बस, आपका एक मिनट समाप्त हो गया। अब आप बैठिये। माननीय दिघे।

श्री राम नारायण पाठक--

मैं हाथ जोड़ता हूं। सुन लीजिये।

श्री अधिष्ठाता--

आपने एक मिनट मांगा था, वह भी पूरा हो गया।

श्री राम नारायण पाठक--

हाथ जोड़ता हूं।

श्री अधिष्ठाता--

मैंने नाम पुकार लिया। आप बैठें, कृपा करके बैठें।

श्री राम नारायण पाठक--

बिना अनुभव वाले नौजवान कलक्टरों (जिला अधिकारियों) को जिलों में भेजा जा रहा है। उसको 7-8 साल का कम से कम अनुभव होना चाहिये उन्हें एडीशनल मैजिस्ट्रेट का अनुभव होना चाहिये। नौजवानों को तुरन्त जिलाधीश बनाकर न भेजा जाय। इस प्रकार उसको जिलाधीश बनाने से जनता के ऊपर अच्छा असर नहीं पड़ता।

श्री मधुकर दिघे (जिला गोरखपुर)--

अधिष्ठाता महोदय, मैं सर्वप्रथम यह कहना चाहता हूं कि भारत की सरकार स्वयं ही चूंकि सिद्धान्त विहीन सरकार हो गई है, इसलिये उत्तर प्रदेश की सरकार भी अगर सिद्धान्त विहीन हो जाय तो उसमें कोई ताज्जुब नहीं करना चाहिये। मेरा यह कहना है और इस सरकार पर इल्जाम है कि उत्तर प्रदेश की सरकार एक्सपीडिएंसी की सरकार है केवल यह सरकार दूसरी ओर किसी सिद्धान्त को कार्यान्वित करना ही नहीं चाहती है और न उस पर चलने की इसमें कोई संकल्प शक्ति ही है। यही कारण है कि लगातार हमको हमारा अनुभव यह बताता है कि सरकार वचन भंगी सरकार है, अपने वचनों का पालन न करने वाली सरकार है। आप देख लीजिये, इन्होंने जो भी उद्देश्य अपने सामने रखा, चाहे वह योजना के नाम पर हो अथवा अपने कामों के संबन्ध में हो, देखा यह गया कि न तो योजना के किसी लक्ष्य को यह पूरा कर पाये और वर्षानुवर्ष बजट में जो भी लक्ष्य इन्होंने रखे न उनको ही ये पूरा कर पाये। लोक लेखा समिति की जो रिपोर्ट साया हुआ करती है उसमें आप यह देखते हैं कि सरकार विभिन्न मदों में खर्च करने के जितनी व्यवस्था करती है उसके अनुरूप उसके खर्च को पूरा नहीं कर पाती।

मान्यवर, मैं अगर यह कहूं कि सरकार केवल बकवास करती है, बार-बार जनता को धोखा देने के लिये बड़े-बड़े शब्दाडम्बर का अनुकरण करके, बड़े-बड़े उद्देश्यों का नाम करके और कोशिस करती है कि हर वर्ग को धोखे और जाल में फंसाकर अपनी सत्ता को कायम रखने के लिये उपयोग किया जाय तो यह बड़ी बात न होगी। हरिजनों का ही सवाल ले लीजिये। बार-बार उधर से कहा जा रहा है कि हरिजनों के लिये भूमि देने की व्यवस्था

[श्री मधुकर दिधे]

प्रथम बार इस सरकार ने की और उनको गांवों में जमीन देने की व्यवस्था हो रही है। मेरा यह दावा है कि मंत्री ही नहीं, कोई भी कांग्रेस पार्टी का सदस्य हमारे साथ चले किसी भी गांव में और देखे कि हरिजनों को जमीन देने के लिये जो पट्टे हुये हैं क्या उन पट्टों के अनुरूप या जितने पट्टे हुये हैं उनका एक शतांस भी हरिजनों को जमीन मिल पायी।

हम देखेंगे कि वस्तुस्थिति में जमीन पर कब्जा उनका नहीं हो पाया है और न कभी हो पायेगा क्योंकि उधर बैठे हुये, इधर भी होंगे, कई ऐसे सदस्य हैं जो उन जमीनों पर काबिज हैं और हरिजनों को देना नही चाहते। इसलिये उनका कोई भी काम, जैसा मैंने कहा, चाहे वह हरिजनों को जमीन देने का हो, चाहे इनके बजट का लक्ष्य हो, उसको पूरा नहीं कर पाते। इसलिये बराबरी लाना तो दूर, लगातार लोगों की आमदनी का अंतर बढ़ता चला जा रहा है। जो नीचे का वर्ग है वह और नीचे चला जा रहा है और धनी वर्ग और धनी होता चला जा रहा है।

इसलिये मेरा यह कहना है कि जो तरक्की प्रदेश की हो रही है या तरक्की के जो आंकड़े दिये गये हैं उनको आप देखेंगे तो इस प्रदेश की कोई तरक्की नहीं हुई है। सही माने में तरक्की का सिद्धान्त सापेक्षता का सिद्धान्त है। जिस रफ्तार से दूसरे प्रान्त चल रहे हैं उस रफ्तार से क्या हम चल रहे हैं? क्या जिस तरह से दूसरे प्रदेशों के लोगों की आमदनी बढ़ रह रही है उसी तरह से हमारी आमदनी बढ़ रही है। अगर आप इसको देखेंगे तो आप पायेंगे कि उत्तर प्रदेश ही केवल एक ऐसा अभागा सूबा है जिसकी हालत बहुत खराब है और इस प्र श के पूर्वी जिले, जहां से हम आते हैं, उनकी स्थिति तो और भी बदतर है। हमारी स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है, हमारी आमदनी का स्तर गिरता चला जा रहा है। इसीलिये हम अपने प्रदेश को तरक्की के रास्ते पर लाने के लिये जो साधन जुटा सकते हैं उन साधनों को नहीं जुटा पा रहे हैं। जो साधन हमारे पास हैं, जो दौलत हमारे पास है उसे आज आप शान-शौकत और अय्याशी पर खर्च कर रहे हैं। नेहरू पर्वतारोहण नाम की एक संस्था के लिये इस बजट में 5 लाख रुपये आप दे रहे हैं और 5 लाख रुपये केन्द्रीय सरकार देगी। इस पर यह पया खर्च करने की क्या जरूरत है? यह धन शान शौकत और अय्याशी पर खर्च होगा। दूसरे इलाकों से लोग जायेंगे और आप उन पर खर्च करेंगे।

मान्यवर, आज जरूरत इस बात की है कि हमको अपनी आर्थिक क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग करना चाहिये। प्रदेश की तरक्की के लिये उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता है। पर हम इस पर खर्च न करके, अन्य बेकार की चीजों पर खर्च करते हैं। अन्य सूबों में उद्योगों की प्रगति 8-10 प्रतिशत तक है, जब कि अपने यहां की प्रगटि केवल 3–4 प्रतिशत है। जनसंख्या हमारे प्रदेश की लगातार बढ रहीं है, उत्पादन लगातार घट रहा है। आर्थिक स्थित दिन प्रति दिन बिगड़ती जा रही है और उस ओर सरकार कतई ध्यान नहीं दे रही है। इसके लिये सरकार जब तक अपनी नीतियों में परिवर्तन नहीं करेगी, प्रदेश का विकास होना संभव नहीं है। आज प्रदेश में बेकारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। तकनीकी किस्म के लोग भी जिनकी संख्या बहुत काफी है, बेकार है। करीब डेढ़ करोड़ लोग अपने प्रदेश मे आज ऐसे हैं जो बेकार हैं।

टेक्निकल बेरोजगार लोगों को तथा अन्य बेरोजगार लोगों को काम देने के लिये इस बजट में कोई योजना नहीं रखी गयी है। प्रदेश में करोड़ों लोग आज भूख की कगार पर खड़े हुये हैं। लोगों को कोई भी चीज उपलब्ध नहीं हो रही है। जीवनोपयोगी कोई भी बस्तु आसानी से नहीं मिल रही है। दियासलाई 20 पैसे में बिक रही है। गांवों में मिट्टी का तेल 4–5 रुपये बोतल बिक रहा है। नहाने के साबुन तक का आज अकाल है। खाद का वितरण भी बड़ा दोषपूर्ण है। जो गांव में चलाक लोग हैं उनको ही किसी प्रकार से खाद

मिल पायेगी। सरकार कहती है कि छोटे किसानों के लिये कार्ड बनाये जायेंगे मगर जब कार्ड बन जायेंगे तो यह आदेश हो जायेंगे कि जो गेहूं देगा उसी को खाद मिलेगी। गरीब छोटा किसान उसे कभी पा नहीं सकेगा। कहीं-कहीं पर तो 5 रुपये बोतल में भी मिट्टी का ेल नहीं मिल रहा है।

मान्यवर, इसी प्रकार आप देखेंगे कि यह जो पुलिस की व्यवस्था है, मैं दो-तीन मिनट जरूर चाहूंगा। पुलिस प्रशासन है वह बिल्कुल बेकार साबित हो रहा है। मान्यवर, मेरे जिले में मैं आपसे कहना चाहता हूं सदन से कहना चाहता हूं कि पुलिस स्वयं डकैती में हिस्सा ले रही है। जहां-जहां डकैती पड़ रही है, बहराइच में डकैती पड़ी, पुलिस पकड़ी गयी। मुजफ्फरनगर में डकैती पड़ी, पुलिस पकड़ी गयी। गोरखपुर के इटैय्या ग्राम में डाका पड़ता है। सवाल उठता है और जांच होती है तो जाली मुकदमा वहां के खिलाफ दर्ज किया जाता है। उनको मारा-पीटा जाता है। गांव के प्रधान को पकड़ कर थाने में बन्द रखा जाता है, 48 घंटे उसको बन्द रखा जाता है, उसको पेशाब और पाखाना खिलाया जाता है और जब इसकी जांच होती है तो कहा जाता है कि कोई गिरफ्तारी नहीं हुयी है। कोई बन्द नहीं हुआ है। जब बड़े अधिकारी के जाने पर भी उनको थाने में यह जवाब दिया गया तो साधारण लोगों की स्थिति क्या होगी।

श्री अधिष्ठाता––

अब आपका समय समाप्त हुआ।

श्री मधुकर दिघे––

मान्यवर, थोड़ा समय मैं और लूंगा।

तो मेरी प्रार्थना है कि कोई विशेष अधिकारी आप नियुक्त करें जो इसकी जांच करायें।

अखबारों में जो सरकार चाहती है वही छपता है। जो नहीं छापता है उसको अनुदान नहीं दिये जाते है। उनके अनुदान रोक दिये जाते हैं। एजेंसियों को सरकार पैसा देती है कि वह सरकार का बयान ठीक तरह से छापे और इसलिये सरकार के बयान ठीक तरह से छपते हैं। पी0टी0आई0 को 18 सौ रुपया मिलता था अब 12 सौ और देकर 3 हजार कर दिया गया है।

(कई सदस्यों के एक साथ बोलने पर।)

श्री अधिष्ठाता––

आपका समय समाप्त हुआ। कृपा करके स्थान ग्रहण करें।

श्री मधुकर दिघे––

तो मैं कहना चाहता हूं कि यह सरकार गरीबों की सरकार नहीं है। यह अमीरों को बढ़ाने वाली सरकार। इतना कह करके मैं इस बजट का जो सरकार सदन में लायी है, विरोध करता हूं।

श्री अधिष्ठाता––

माननीय सरदार जी आप अपना नाम भी बोल दें।

*श्री अजीत सिंह सेठी (जिला मेरठ)––

मान्यवर, 2–3 दिन से सदन में बजट के ऊपर चर्चा सुनी, अनेक टिप्पणियां पेश हुयी हैं। उसको सुनकर इस बजट के लिय एक श्रद्धा और एक रोशनी प्राप्त हुयी है। वाकई यह बजट

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री अजीत सिंह सेठी]

निखर कर आया है अपने रूम में और बड़ी सुन्दरता के साथ लाया गया है। मान्यवर, यह मानी हुयी बात है। इस वक्त हमारा प्रदेश आर्थिक संकटकाल में गुजर रहा है और ऐसी अवस्था में प्रदेश देश और बाहर के मुल्कों में जो चीजों के मूल्यों में बढ़ोत्तरी हुयी है उसके कारण अनेक कठिनाइयों, अनेकों समस्यायें हमारी गवर्नमेंट के सामने पेश हो रही हैं। लेकिन यह कुदरती उसूल है कि जब काफी कठिनाइयां भयंकर रूप लेकर आती हैं तो उस वक्त जनसाधारण को रोशनी मिलती है। इस उत्तर प्रदेश में भी जब सियासी सरकार आयी और जब बादल उमड़े तो प्रदेश को मिला बहुगुणा जिसने इन बादलों को साफ किया।

उसने इस प्रदेश को एक नया रूप दिया और प्रदेश की सेवा करने में जुटा। आज उनके दूसरे साथी श्री तिवारी जी बजट लायें हैं। उन्होंने भी इस मझधार में इस संकट के काल में नैय्या के खिवैया बने। इस नैय्या के अन्दर करोड़ों जीव बैठे हुये हैं और उसको आगे बढ़ाया, आर्थिक संकट से निकाला। मैं उनको दाद देता हूं। उन्होंने बड़ी सहनशीलता से शांति के रूप में जो बजट पेश किया वह उभड़ती हुई तस्वीर शांति के रूप में है। कुछ दलों ने इस बजट के बारे में अपने अंदेशे प्रकट करने के लिये खड़े हुये जैसे कि कृषि, सिंचाई, बिजली और खाद आदि अनेक समस्याओं को बजट में बखूबी तरीके से नहीं पेश किया। उन वर्गों की शंकायें उनकी जगह ठीक हो सकती है परन्तु उनका बजट में निवारण करने के लिये प्राविधान किया गया है।

मेरा कहना है कि बजट में इस प्रदेश के सारे भागों को चाहे वह पूर्वी हो, पश्चिमी हो, दक्षिणी हो या उत्तरी सभी के लिये कुछ न कुछ अनुदान दिया है। सभी भागों को हमारे तिवारी जी ने ध्यान में रखा है। इस प्रदेश की अनेक जातियों को विशेषकर पिछड़े वर्ग के लोगों को अधिक सुविधायें प्रदान की हैं। उन्होंने गरीब किसानों, मजदूरों तथा हरिजनों के लिये वजीफे आदि की भी सुविधा दी है। हरिजनों को उन्होंने इस बजट में विशेष ध्यान दिया है। इसलिये यह टिप्पणी करना कि फलां वर्ग को अधिक सुविधायें दी हैं और फलां वर्ग को कम तो ऐसी प्रथा को इस बजट में नहीं आने दिया गया है।

इस बजट में जहां तक कृषि का ताल्लुक है उसको सर्वप्रथम लिया गया है और मैं भी कृषि के महत्व को ध्यान में रखते हुये सर्वप्रथम इस पर चर्चा कर रहा हूं। आज कृषि पर हमारे वित्त मंत्री जी ने भी बजट में काफी ध्यान दिया है। कृषि की जो बेसिक आवश्यकता है नई तकनीकी की जिसमें बढ़ोत्तरी की जा रही है। आज बेसिक चीजों को बजट के अन्दर रखा है जिससे आगे चलकर उनकी कमी न रहे जबकि इसके पहले कृषि की तरफ ध्यान नहीं दिया गया था।

इसी तरह से और जो सुबहा है उन पर भी अच्छी तरह रोशनी डाली गई है। मैं समझता हूं कि बजट पर केवल टिप्पणी करना ठीक नहीं है। जब हम सदन में बठते हैं तो अनेक रोगों की चर्चा करते हैं जैसे बिजली का रोग है, सिंचाई है। मैं एक नई बिचारधारा यहां रखना चाहता हूं। गरीब का रोग तो तन के साथ है लेकिन यह जो धन का रोग दुनियां के अन्दर लगा हुआ है, इस बारे में मैं कोई लकीर नहीं लगा रहा हूं कि कौन आदमी है जिन्हें धन का रोग लगा हुआ है, लेकिन इस रोग से हर इन्सान दौड़ लगा रहा है। इस रोग को रोकने के लिये इसमें खास ध्यान न दिया गया है। यह बहुत भारी रोग है। इस बजट के द्वारा उन व्यक्तियों पर अंकुश लगाने की कोशिश की गई है और उसका हल निकालने के लिये गवर्नमेंट ने कई कदम उठाये है। अगर विरोधी दल और गवर्नमेंट साथ मिलकर कदम बढ़ायें तो विरोधी दल को इवालाम दिया जा सकता है। इस युग में माया को सबसे बड़ा बना दिया गया है। जो बजट की रूपरेखा है सच्चाई की बात यह है कि उस पर इसमें कन्ट्रोल किया गया है। जो टैक्सेशन लगाया गया है उसमें उन्हीं व्यक्तियों पर लगाया है जो धनवान हैं। इसके लिये हमारे तिवारी जी बधाई के पात्र हैं।

अन्त में दो चीजें कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। पहली बात स्पोर्ट्स के बारे में है। जितना प्रोत्साहन इस बजट में स्पोर्ट्स को मिलना चाहिये था उतना नहीं मिला है। मेरी गुजारिश है कि उस तरफ ध्यान दिया जाय और अधिक प्रोत्साहन दिया जाय तो ठीक होगा दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि वैस्टर्न यू0पी0 में हाई कोर्ट की एक बेंच होनी चाहिये ताकि वहां के लोग जो जनसाधारण लोग हैं उनकी कठिनाई हल हो सके। क्योंकि वह लोग दूर इलाहाबाद में न्याय लेने के लिये आते है। इसलिये यह जरूरी है कि उनकी तरफ भी ध्यान दिया जाय। इन शब्दों के साथ मैं इस बजट का समर्थन करता हूं।

*श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा (जिला बांदा)—

मान्यवर, आपने इस बजट में मुझे भाषण करने की अनुमति दी इसका मैं बड़ा आभारी हूं। 1974–75 का जो बजट पेश हुआ है उसको देखने से पता लगता है कि इसने पूंजीवाद को बढ़ावा दिया है क्योंकि इस बजट की जिस ब्यूरोक्रेसी ने तैयार किया है उसको नहीं मालूम कि हिन्दुस्तान में गरीब लोग भी रहते हैं। मान्यवर, इस बजट में कहीं विधवाओं के लिये, कहीं अपाहिजों के लिये कुछ पैसा एलाट कर दिया गया है लेकिन वह मजदूर, वह अपाहिज जो पैसा लेने जायगा तो दस दिन की मजदूरी का नुकसान करेगा और तब उसे कहीं मुश्किल से पन्द्रह-बीस रुपया मिलेगा। इस सदन में बड़े जोर-शोर से हरिजन समस्या उठायी जा रही है। शासक दल की ओर से हरिजनों को जो बेवकूफ बनाया जा रहा है वह किसी से छिपा नहीं है। 1930 से लेकर हरिजनों को लालच दिया गया कि जमीन दी जायेगी। जमींदारी टूटी। उसके बाद एलान कर दिया कि जो खेत जोतेगा उसको जमीन मिलेगी। मान्यवर, जमींदारी टूटी और वह जमीन गांव समाज में दे दी गयी। क्योंकि शासक दल को उम्मीद थी कि एक दो चुनाव उन्हें बेवकूफ बनाकर जीत जायेंगे। जब हरिजन का विश्वास शासन से उठा तो इन्होंने एक टुकड़ा फेंक दिया कि हम गांव समाज को जमीन देंगे। लेकिन गांव में जो सबसे बड़ा अफसर है जिसको हम लेखपाल कह सकते हैं उसकी मिली भगत से सारी जमीन सामंतशाही के कब्जे में है और वह लोग कांग्रेस के हैं।

मैं बांदा जिले का हाल बताना चाहता हूं कि जहां के राज्य मंत्री रह चुके हैं, डिप्टी मिनिस्टर रह चुके है। आज वहां किसी भी गांव में हरिजन को बसने के लिये जमीन नहीं दी गयी। शासक कांग्रेस की ओर से कहा गया है कि सीलिंग की जमीन दी जायगी। मेरी कांस्टीट्युएन्सी मानिकपुर में सीलिंग की जमीन पर दस वर्ष पूर्व एक चमार को पट्टा हुआ था लेकिन वह जमीन सामंतशाही के कब्जे में है और उसको नहीं मिल पायी। यह सरकार हरिजनों की बड़ी हितैषी बनती है। यह कहते हैं हम हरिजनों को नौकरियां देंगे। सन् 53 में क्लास-वन आफिसर की नियुक्तियां 28 हुईं जिनमें कोई हरिजन नहीं था। सन् 59 में 112 नियुक्तियां हुईं जिनमें एक भी हरिजन नहीं था। क्लास-टू आफिसर्स में 53 में 1637 नियुक्तियां हुईं जिनमें 31 हरिजन थे और 59 में 1912 नियुक्तियां हुईं जिनमें केवल 50 सीट मिलीं।

मुख्य मंत्री जी ने सदन में अपने बयान में कहा कि इस वर्ष 318 आई0ए0एस0 में 38 शिड्यूल कास्ट और 647 पी0सी0एस0 में 82 शिड्यूल कास्ट हैं। तो मान्यवर, यह नियुक्ति की प्रगति है। इसके अलावा जो सरकारी अधिकारी हैं वह आज भी हरिजनों के शख्त विरोधी हैं। मिर्जापुर में सेशन जज ने हरिजन मुंसिफ पर छुआछूत का आरोप लगाया। क्या इस तरह से छुआछूत मिटेगी। मेरे क्षेत्र में एक भंगी सचिव हैं। उनके खिलाफ इंक्वायरी करवायी। लेकिन उसने एक हजार रुपया डायरेक्टर को देकर इंक्वायरी रुकवा दी। हरिजन क्लर्क को नौकरी से अलग करने का नोटिस दे दिया गया। मुंशी सिंह संत ने डायरेक्टर को नौकरी में रखने के लिये लिखा तो उन्होंने कहा कि हरिजन है। कहीं कामदार की जगह

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा]

पर रखा दें । 26 साल आज इनको शासन करते हो गये लेकिन मानिकपुर में आज भी कोलों को रहने की जगह नहीं है । जो कालोनी है वहां सामंतशाही ने और हरिजन आफिसर ने मिल कर धन खा लिया । अगर शासक दल में ताकत है तो उसकी इंक्वायरी करवा लें । जो हरिजन सोच रहे हैं कि हरिजन मंत्रियों से उनका कोई भला होगा, तो उनका कोई भला होने वाला नहीं है । यह मैं दावे के साथ कह सकता हूं क्योंकि इंन्दिरा जी से उनको इन्स्ट्रक्शन्स हुये हैं कि अगर ज्यादा बोलोगे तो निकाल दिया जायेगा । 9 जनवरी, 1974 को इन्दिराजी हमारे यहां गयी थीं और उनको बताया गया कि यह इलाका बहुत पिछड़ा है लेकिन फिर भी इस बजट में बस्ती के लिये कुछ नहीं किया गया, क्योंकि वहां से कांग्रेस हारी है ।

मान्यवर बांदा जनपद में आज हरिजनों की समस्या खड़ी हो गयी है । बांदा में हरिजनों को मारा जा रहा है । कम्यनिस्ट पार्टी और कांग्रेस पार्टी का गठबन्धन हुआ है और वे हरिजनों को बरगला रहे हैं । मध्यम वर्ग के लिये कोई सहारा नहीं रह गया है । जगदेव अहिर, राम देव नाउ और दस्सा चमार, वे कम्युनिस्ट के है । जगदेव का मर्डर हुआ । उस पर 10 डकैतियों की धारायें लगी थीं । हमारे यहां हरिजनों को बरगलाया जा रहा है । चित्रकूट के पास 3 हरिजन मध्य प्रदेश की पुलिस से मारे गये । राम नगर में डकैतियां हुयीं थीं, जिसमें हरिजनों को पकड़ा गया था । हरिजनों को बरगलाया जा रहा है । आज भी एक हरिजन पकड़ा गया है । जागेश्वर कुमार कम्युनिस्ट के सदस्य हैं । डकैतियां डलवा रहे हैं । सरकार से निवेदन करता हूं कि अगर बांदा के लिये कोई विशेष प्रबन्ध न किया गया तो बांदा में वर्ग संघर्ष बंगाल की तरह शुरू हो जायेगा । कांग्रेस शासन का कम्युनिस्ट से गठ-बन्धन है । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस शासन से वहां हरिजनों से फायदा होने वाला नहीं है ।

बांदा जनपद में सड़कों और पुलों के लिये कोई व्यवस्था इस बजट में नहीं है । मेरा यह चार्ज है कि चूंकि कांग्रेस वहां से हारी है, इसलिये बांदा को नेगलेक्ट किया गया है । वहां जो सड़कें बनी हैं, वे अधूरी छोड़ दी गयी हैं । सार्वजनिक निर्माण मंत्री बांदा गये मऊ में । लेकिन सड़कें वहीं की वहीं छोड़ दी गयी । मान्यवर, सड़कों से देहातों की तरक्की होती है । हर देहात पक्की सड़क से यदि जोड़ दिया जाय तो भी गांवों की समस्या दूर हो सकेगी ।

एक सदस्य—

मान्यवर, अभी माननीय सदस्य ने कम्युनिस्टों का जिक्र किया है इसलिये मैं दो शब्द कहना चाहता हूं ।

श्री अधिष्ठाता—

आपको जब तक बुलाया न जाय, कृपया न बोलें । आप स्थान ग्रहण करें ।

श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा—

राजापुर से इटावा मार्ग अधूरा पड़ा है । इसको कृपया बनवाने की कृपा की जाय । शिक्षा के विषय में सरकार कह रही है कि उसने बड़ी उन्नति की है । मैं आंकड़े दूं उसकी उन्नति के जो इस प्रकार हैं—उत्तर प्रदेश में 31.64 प्रतिशत, भारतवर्ष में 29.35 प्रतिशत, बंगाल में 33.5 प्रतिशत, तामिलनाडु में 49.39 प्रतिशत, पंजाब में 33.39 प्रतिशत। इस प्रकार आप देखेंगे कि हर स्टेट में उत्तर प्रदेश से प्रतिशत ज्यादा है ।

श्री राम जी लाल केन (जिला आगरा)—

अधिष्ठाता महोदय, वित्त मंत्री द्वारा जो बजट भाषण पढ़ा गया उसे मैंने सुना । मैं पूरे विश्वास के साथ यह कह सकता हूं प्रदेश का बजट जनता की भावनाओं का प्रतीक है । यह

प्रदेश की उन्नति की ओर ले जाने वाले है । बजट में चमड़े निगम तथा ब्रास निगम के स्थापना की बात है उससे लाखों उद्योगों में लगे कामगारों को लाभ पहुंचायेगा । इसके अलावा जिन निगमों की स्थापना की गयी है उनसे भी प्रदेश के पिछड़ेपन दूर होने में सहायता मिलेगी । बजट में हरिजनों के उत्थान के लिये 11 करोड़ से बढ़ा कर 14 करोड़ का जो प्राविधान किया गया है उससे भी हरिजनों के उत्थान में सहायता मिलेगी । इस प्रकार हरिजनों के उत्थान के लिये वर्तमान सरकार जो कदम उठा रही है वह निःसंदेह ही प्रशंसनीय है।

एक बात मैं साफ कह देना चाहता हूं कि हरिजनों के उत्थान के लिये विरोधी दलों की ओर से उनकी हिमायत में बहुत ज्यादा आवाज उठती है लेकिन मैं जानता हूं कि हर व्यक्ति आज किसी न किसी राजनीतिक पार्टी से प्रभावित है । यह देखना होगा कि अछूतों पर जुल्म करने वाले कौन सी विचारधारा के लोग हैं ? कांग्रेस तो अछूतों के लिये जितना भी कुछ हो सकता है कर रही है लेकिन इसके बरअक्स विरोधी दल में से हर सदस्य इस बात का दावा करता है कि हरिजनों के साथ अत्याचार हो रहा है (व्यवधान) उत्तर प्रदेश में दो पार्टियां है । एक पार्टी वह है जिसका अस्तित्व केवल वहीं तक है जहां तक कि दिया जलता है और दूसरी का अस्तित्व वहां तक है जब तक कि अन्धेरा रहता है । इन दोनों विचारधाराओं के मानने वाले लोग अछूतों पर जुल्म करते हैं । यह कहा जाता है कि सरकार की तरफ से जो भूमि दी गयी उसका आवंटन किया गया, उसका कब्जा नहीं मिला । लाठी के बल पर यह कब्जा नहीं लेने दिया गया और ऐसे लोग इसी पार्टी के अनुयायी है । मान्यवर, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि आज तक पिछली किसी भी सरकार ने पर्वतीय जिलों के लिये कोई ध्यान नहीं दिया । इस बजट में इतना प्राविधान किया गया है कि जिससे वहां के लोगों की जिन्दगी बेहतर हो जायेगी और पर्यटन आदि में सुधार होने से वहां के लोग लाभान्वित होंगे ।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सदन के सामने एक जिक्र कर देना चाहता हूं । आगरे में जूते का एक उद्योग है । सन् 47 से पहले आगरे के जूते का उद्योग भारत में ही नहीं बल्कि सारे एशिया में उत्पादन के लिहाज से प्रथम था । सन् 47 के बाद जब इस उद्योग पर कर लगाया गया तो उसमें जो लोग काम करते थे वे अनपढ़ थे अपने हिसाब-किताब का खाता नहीं रख सकते थे । सेल्स टैक्स के अधिकारियों ने उन्हें इतना आतंकित किया और इतना अत्याचार किया कि 30 हजार आदमियों को आगरा छोड़कर दूसरे शहरों में जाना पड़ा । आगरा में चूंकि और कोई उद्योग नहीं था लिहाजा उन्हें दिल्ली, ग्वालियर, पंजाब, कलकत्ता और बम्बई जाना पड़ा । फलस्वरूप आगरे का इस उद्योग में जो एकाधिकार था वह समाप्त हो गया । मान्यवर, माननीय वित्त मंत्री जी को आगरे के साढ़े तीन लाख परिवार की ओर से जिनका इस उद्योग पर जीवन निर्भर है, धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने बिक्री कर इस उद्योग से हटाकर क्रय-कर लगा दिया । मान्यवर, इस उद्योग की उन्नति के लिये जो चमड़ा निगम की स्थापना की गई है, उससे इस उद्योग में काफी सहायता मिलेगी ।

विरोधी दलों ने इस बजट की आलोचना की है । उन्होंने कहा है कि प्रदेश पिछड़ गया है । मैं कहना चाहता हूं कि आजतक जो सरकारें रहीं उनकी भी जिम्मेदारी इस प्रदेश के पिछड़ेपन को दूर करने की थी । आज भी हम सभी लोग जो इस सदन में बैठे हुये हैं, इस पिछड़ेपन के जिम्मेदार है । मैं कहना चाहता हूं कि अब इस देश और प्रदेश का नेतृत्व सुदृढ़ हाथों में आया है जिसने देश और प्रदेश को एक नई दिशा दी है । देश की भीषण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है । देश को आजादी के बाद चार लड़ाइयों में भाग लेना पड़ा है । एक करोड़ लोग बांगला देश से यहां आय और पड़ोसी देश की हमन रक्षा की । हमारे देश ने आणविक युग में प्रवेश किया । आज आजादी के बाद हम उसकी रक्षा में पहले से कहीं ज्यादा बेहतर स्थिति में है और मैं कह सकता हूं कि हमारा देश सर्वशक्तिमान हो गया है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी देश के सैनिकों ने 90 हजार की संख्या में आजतक आत्मसमर्पण नहीं किया है । इंदिरा गांधी के नेतृत्व में ही यह हुआ है । आज हमारे देश का सम्मान दूसरे देशों में काफी हो गया है ।

[श्री राम जी लाल केन]

एक बात की ओर सरकार का ध्यान और दिलाना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश में सेल्स टैक्स की करोड़ों रुपयों की चोरी होती है । अगर मैं यह न कहूं तो मैं अपने कर्तव्य को पूरा नहीं कर पाऊंगा कि केन्द्र में कर की चोरी के लिये यह प्राविधान किया गया है कि जो कर की चोरी होने से बचाता है और उसका पता बताता है तो उसका उस कर का 10 प्रतिशत मिलता है । आपके माध्यम से मेरा सुझाव है कि सेल्स टैक्स की चोरी रोकने के लिये ऐसा ही प्राविधान यहां भी उत्तर प्रदेश में किया जाये ।

मान्यवर, फिरोजाबाद में कोयले की बड़ी चोरी होती है । वहां पर बड़े-बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट और व्यापारी हैं, जिनको हम सरकारी रेट पर रेल के वैगनों द्वारा कोयला देते हैं और वे लोग जिस कोयले से उत्पादन करते हैं, उस उत्पादन का मूल्य नहीं घटाते हैं । जबकि हमारे दूसरे आवश्यक काम कोयले के अभाव में बन्द हो जाते हैं । ऐसे लोग भी उस उद्योग में हैं, जिनके पास उद्योग के नाम पर कुछ नहीं है, लेकिन कोयले के परमिट लिये हुये हैं, जिसे वह चोरबाजार में बेच देते हैं । इस सम्बन्ध में मैं निवेदन करूंगा कि एक जांच समिति का गठन किया जाये, जिससे कि वह चोरी रुक सके ।

*श्री शिवचरन लाल (जिला आगरा)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं । तर्क और प्रमाण सहित विरोधी दल के नेता तो अपनी और अपने प्रदेश की बात कह चुके हैं । मैं तो केवल अपने क्षेत्र की कुछ समस्याओं की तरफ इस सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं । मैं आपसे आशा करूंगा कि मुझे दो-एक मिनट ज्यादा आप दे देंगे । यह सारा बजट और प्रदेश का नक्शा केवल कागजों में सीमित है । प्रदेश की जनता के दुखदर्द का नक्शा इस कागज तक ही सीमित रहा है । इन तकरीरों से ही प्रदेश का निर्माण हो रहा है । 'प्रदेश की जनता का नक्शा है तस्वीरों में तकरीरों में, निर्माण हो रहा है कागज पर, तामीर हो रही तहरीरों में ।' चाहे हम कुछ कहें सरकार को तो विरोधी दल वालों की बात हमेशा उलटी ही लगती है । 'उल्टा कहा होय हनुमाना, मतभ्रम प्रगट तोर मैं जाना ।' ऐसे ही चौधरी साहब की बात उनको उल्टी लगती है । वैसे ही इनका सर्वनाश होने जा रहा है और साथ ही यह जनता को भी ले डूबेंगे ।

'उम्मीद थी अब सय्याद गया, आजाद हुआ गुलशन मेरा ।
फूल खिलेंगे, महकेंगे, आयेगा बहारों का घेरा ।।
सपने जो संजोये थे हमने, सभी वे चकनाचूर हुये,
सीने में जख्म जो पहले थे, बढ़कर नासूर हुये,
बेरहम मिला गुलची हमको, तो दौर अमन का क्या होगा,
हर डाल पर उल्लू बैठा है, परिणाम चमन का क्या होगा ।।

जनता आपके सब खुराफातों को अच्छी तरह समझ चुकी है ।

'माखन मिश्री आप को, हम नंगे फिरें और भूख सतावे,
भूखों से कहोगे उपासे रहो और बच्चों पर कन्ट्रोल लगावे,
आग लगे ऐसी भक्ती में, भूखी भक्ति हमें न सुहावे ।'

अब मैं खुद हरिजन होने के नाते हरिजनों के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं । मैं अपने क्षेत्र की बात कहना चाहता हूं । मैं 10 साल से लोकसभा और विधान सभा का सदस्य रहा हूं, लेकिन मेरे क्षेत्र की बराबर उपेक्षा की गई है । हो सकता है यह इसलिये हुआ हो चूंकि शिवचरन वहां से चुनकर आ रहे हैं । आपका सारा मामला कागज पर सीमित है । हमारे यहां की जो सड़कें हैं जो देश प्रोग्राम में बननी हैं, वे बड़ी महत्व की और एतिहासिक सड़क हैं । किन्तु आज 15 साल से वे नहीं बन पाई है । आगरा नाई की सरांय

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

से जलेसर जाने वाली सड़क एक ऐतिहासिक सड़क है । यह 26 किलोमीटर लम्बी सड़क में स कुल 10 किलोमीटर मंजूर हुई है । उसका उद्घाटन भी भूतपूर्व मुख्य मंत्री त्रिपाठी जी ने किया था । उतना हिस्सा भी अभी तक अधूरा पड़ा है, पूरा नहीं किया गया है । मंत्री जी इसे नोट कर लें । एतमादपुर से बाया खंदौली दाऊ जी जाने वाली सड़क भी नहीं बनाई गई है जो बहुत आवश्यक है इसके लिये मांग मैं सन् 62 से कर रहा हूं और भी एसी कई सड़कें हैं । उसी तरह से सेमरा-खदौली और समाई से चाबली की सड़क हैं जो बिलकुल नहीं बन पाई हैं । इन पर सरकार पूरा ध्यान दे । (व्यवधान) सरकार तो अधूरी है । उसका कुछ भरोसा ही नहीं ।

हरिजनों के बारे में जो ज्यादा डींग मारी जाती है । मैं आपके समक्ष एक बात पेश करना चाहता हूं । इसमें लिखा हुआ ह कि आठ हजार हरिजन बस्तियों का विद्युतीकरण किये जाने का प्रस्ताव है । पहले विद्युतीकरण दारुलशफा और विधान सभा में हो जाय, हरिजन बस्तियों का तो होता रहेगा । हरिजन को पानी पीने का स्थान नहीं मिला है । हरिजनों के पानी पीने के लिये कुएं तो बन जायं और दाकी योजना तो हरिजनों के लिये जाने दीजिये । आगरा कमिश्नरी में जांच हो, मेरे साथ या कमेटी बना कर जांच की जाय कि कितना अत्याचार हरिजनों पर हो रहा ह । उसकी रिपोर्ट लिखी नहीं जाती, मुकदमें में वह जा नहीं पाता । महतर, धानुक जिनकी हरिजनों में संख्या कम है, उनकी और दुर्दशा है । उनको मकान की भी सुविधा नहीं है । आपने आज तक एक निरीक्षण नहीं किया । अगर किसी को खत दिया है तो कब्जा खेत वाले का है । उसको कब्जा नहीं दिलायेंगे । मुकदमा वह लड़ नहीं सकता क्योंकि गांव में लाठी की ताकत है । वह हर प्रकार से दबाया जा रहा है । इसलिए दुख दर्द वही अपना अपना, दुख दर्द का कुछ चारा न हुआ । इस देश का बंटवारा तो हुआ, दुख दर्द का बटवारा न हुआ । देश के सेवनहारों पर अब टूट पड़ा है धन कैसे इतने उजले कपड़ों में इतने गंदे मन कैसे । आप लोग जब हरिजन की बात कहने लगे तो मुझे यह बात कहनी पड़ी ।

आप जानते हैं कि जब आज हरिजन अध्यापक गांवों में जाता है तो उस पर क्या होता है? मैं मांग करता हूं, जब आप 18 प्रतिशत नौकरियों में और हर प्रकार को छूट दे रहे हैं, तो विश्वविद्यालय में टीचरों में भी हरिजनों के लिये स्थान सुरक्षित कर देने चाहिये । यह होना चाहिये । तब कुछ आप का विकास होगा और मालूम होगा कि कुछ करने जा रहे हैं । प्रत्येक जिले में आप कमेटी बनाये जो प्रत्येक छः महीने के बाद गांवों में जा कर हरिजनों की जांच करें और देखभाल करे । वह देखें कि हरिजनों के लिये कहां-कहां कुएं नहीं हैं, कहां मकान नहीं है । वह झोपड़ी में रहता है।

तू रिक्शे में बैठ जाता
मैं रिक्शे को खींच रहा
तेरी जीवन कलिका को
मैं रक्त बूंद से खींच रहा
मेरी कोठी, में उसम घुसने से रोका जाऊं
धनवान बिना टीके घुसते
मुझ गरीब को द्वार नहीं
क्या गरीब को इस दुनिया में रहने का अधिकारन हीं।

एक बात और रह गयी, अधिष्ठाता महोदय, विभागों के बारे में ब्लाकों और तहसीलों के बार में । किसान मारा-मारा फिरता ह । मेरे पास लोग आये, जब मैं एम0एल0ए0 नहीं बना था, भूतपूर्व एम0पी0 होने के नाते आये कि दिलवा दो खाद और सीमेंट । खाद के 51–52 रुपय दाम थे सरकार के, 85, 90, 95 म खाद का कट्टा बमुश्किल तमाम किसानों

[श्री शिवबरन लाल]

को उपलब्ध हुआ । भ्रष्टाचार इतना व्याप्त है । कानपुर में गंगा को साफ करन से भ्रष्टाचार नहीं टूटेगा, गंगोतरी में साफ करना पड़गा । भ्रष्टाचार अपर स चला आ रहा है । भ्रष्टाचार तब टूटगा जब आप लोग तहसील में गांवों में ब्लाकों में जायेंगे और कोई विशेष कमेटी बनायेंगे । उचित मूल्य पर किसानों को खाद, बीज और सीमेंट मिले ताकि अच्छी पैदावार हो । अब भी गेहूं की लूट हो रही है । अभी गेहूं को लूट रहे हैं । जिनके बड़-बड़े खेत हैं, बड़े-बड़े फार्म हैं, उनका गेहूं नहीं लिया गया है लकिन गरीब किसानों का गेहूं पकड़ लिया गया है, और उनका गेहूं जब्त कर लिया गया है । चीनी के वितरण क लिये गांवों में दुकानें दी गई ह । लेकिन गरीबों को चीनी नहीं मिल पा ही है । चीनी क लाइसेंसदार आ गरा, फिरोजाबाद, अलीगढ़ में ही चीनी बेच आते हैं और खाना पूरी करके दिखा देते हैं । भ्रष्टाचार कसे रुकेगा ।

अपने भ्रष्टाचार से जब तुम चुटिया तक दब गये ।
फिर जनता का भार का उतारोग ।
नाव है पुरानी जा में अपर तक पानी भरो ।
डूबने चले हो जनता को का उबारोग ।
सुनत सुनत उपदेश कान बहरे हो गय ।
वायदा करोग पर पूरो न पारोग ।
रक्त मांस सभी गवां बैठे, जनता अब न टरेगी चाहे लाख बार टारोग ।"

श्री अधिष्ठाता—

अब आपका समय समाप्त हुआ ।

श्री जयराम गौतम (जिला सुल्तानपुर)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने 74–75 के बजट पर मुझे भी विचार व्यक्त करने के लिय समय दिया ह । मैं कई दिनों से पक्ष और विपक्ष के माननीय सदस्यों क विचार सुनता रहा हूं । विशष रूप स चौधरी साहब न इस सदन म अपन 2 घंटे क भाषण में केवल एक बात कही कि यह बिलकुल गलत बजट है, सामंती व्यवस्था को बढ़ावा दन वाला ह । लेकिन चौधरी साहब ने बिलकुल गलत बात कही । इस लिय उन्होंने कि वित्त मंत्री जी न जो बजट पेश किया है उसमें बीकर सेक्शन क लिये, हरिजनों को सुविधायें देने की बात कही है । यही केवल उनकी नाराजगी ह कि हरिजनों को इतना बढ़ावा क्यों ?

आज कांग्रेस वही चाहती है जो इस प्रदेश के 80 फीसदी किसान मजदूर चाहते हैं । आज 20 फीसदी पूंजीपतियों ने उनक भाग्य को अपनी तिजोरियां बन्द कर रखा ह । कांग्रस इंदिरा गांधी और बहुगुणा जी के नेतृत्व में उनक खूनी पंजे स कुंजी लेकर उनका सारा धन जनता में बांटना चाहती ह । 18 फीसदी हरिजनों को संरक्षण की सुविधा दी गई है उसके अनुसार हरिजनों को नौकरी में संरक्षण देन की व्यवस्था दी गयी थी । जो पूरी नहीं हुई थी उसको पूरा कराने के लिय मुख्य मंत्री जी ने मजबूर कदम उठाया है। हर विभाग में जितनी कमी रही उसको पूरा करन का आदेश दिया है। इसक साथ-साथ हरिजन छात्रों की माननीय बहुगुणा जी ने 2 करोड़ 50 लाख रुपये की बढ़ोत्तरी छात्रवृत्ति में की है । मैट्रिक कक्षाओं क लिय 50 प्रतिशत तथा पोस्ट मैट्रिक कक्षाओं क लिय शतप्रतिशय की व्यवस्था की है यह उन्होंने सराहनीय कार्य किया है। यह कांग्र न मजबूत कदम उठाया है। अब तक हरिजनों के रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी । माननीय चौधरी साहब भी जो 20 वर्ष तक मंत्री के रूप में सरकार में रह हैं। लेकिन हरिजनों की समस्याओं पर कभी (चौधरी) उन्होंने

ध्यान नहीं दिया है। उन पर कभी भी उनकी निगाह नहीं गयी है । उनके रहने की कोई व्यवस्था नहीं की गयी । कम से कम उनके नाम परती जमीन ही एलाट कर दी जाये । आज बहुगुणा जी ने डेढ़ सौ वर्ग मीटर जमीन उनको एलाट करने की व्यवस्था की है । सामान्य छात्रावासों में 18 फीसदी हरिजनों को रहने की व्यवस्था की गयी है । इस प्रकार मैं कह सकता हूं कि कांग्रेस ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया, जीवन बीमा कंपनियों का राष्ट्रीय-करण किया और लोहा इस्पात उद्योगों का सार्वजनिक क्षेत्रों में विस्तार किया । ये सब इस बात का सबूत है कि कांग्रेस इस प्रदेश और देश में समाजवादी समाज की स्थापना करना चाहती है । इस देश से गरीबी दूर करना चाहती है । इस देश के नवजवानों को रोजगार देना चाहती है माननीय सदस्यों ने इसका विरोध किया । मैं समझता हूं कि उन्होंने इस बजट भाषण को अच्छी तरह से अध्ययन नहीं किया है । उनकी केवल यही मंशा है कि इसका विरोध किया जाये, इसकी आलोचना की जाये । और केवल यही कहा गया है कि यह सरकार भ्रष्ट है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है ।

कांग्रेस ने संविधान का 24 वां संशोधन करके इस बात का सबूत दिया है कि कांग्रेस पूंजीवाद को समाप्त करना चाहती है और गरीबों को बढ़ावा देना चाहती है । जिस समय बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ था, राजा महाराजाओं के विशेषाधिकार छीनने की बात की गयी थी तो उस समय चौधरी साहब ने राजा महाराजाओं के हक में वोट दिया था और यह कहा था कि उसके विशेषाधिकार नहीं छीने जाने चाहिये । मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूं कि चौधरी साहब नाराज क्यों हैं वह इसलिये नाराज हैं कि वह जानते थे कि 9 करोड़ उत्तर प्रदेश की जनता अबकी बार इस प्रदेश का भाग्य बिधाता मुझे बनायेगी, लेकिन 80 प्रतिशत किसानों और मजदूरों ने बहुगुणा जी के नेतृत्व में दृढ़ आस्था दिखाई और इस प्रदेश के किसानों और मजदूरों ने कांग्रेस का समर्थन किया । चौधरी साहब बहुत भ्रष्टाचार की बात करते हैं । आज प्रदेश के हर जिले में विरोधी सदस्यों का विशेष रूप से बी0के0डी0 का भ्रष्टाचार में विशेष हाथ है । हरिजनों पर अत्याचार इसलिये कर रहे हैं कि उन्होंने बी0के0डी0 का समर्थन नहीं किया । जनता ने उनका समर्थन नहीं किया । आज वह इसलिये वह नाराज है । वे कहते फिरते हैं कि इन्होंने कांग्रेस का समर्थन किया, लेकिन मैं बता देना चाहता हूं कि श्रीमती इंदिरा गांधी के कुशल नेतृत्व में एक दिन इस देश का 80 प्रतिशत आवाम यह कह देगा—

अरे मिल मालिकों अब इंसान जागा है ।
हमारी हड्डियों में खून का तूफान जागा है।
तुम्हारे पाप की हस्ती को मिटाने को
हजारों वर्ष का सोया हुआ बलिदान जागा है।

मान्यवर, माननीय वित्त मंत्री जी ने जो बजट इस सदन में पेश किया है यह एक समाज-वादी बजट है और इस बजट का मैं समर्थन करता हूं ।

*श्री चन्द शेखर सिंह (जिला बस्ती)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो मुझे अवसर दिया उसके लिए मैं बधाई देता हूं साथ ही साथ में उन सदस्यों को भी बधाई देता हूं जो आड़े हाथ हम लोगों के साथ हां में हां मिलाते हैं और कांग्रेस के इस बजट का विरोध करते हैं । चूंकि वह पार्टी से बंधे हुए हैं इस लिए पूरी तौर से वह सका विरोध नहीं कर पाते हैं । ये कांग्रेस की आलोचना करते हुए अन्त में इस बजट का समर्थन करता हूं । मैं उन बन्धुओं को अधिक बधाई दूंगा जो परोक्षरूप में हमारा समर्थन करते हैं । मैं श्रीमन्, आपसे कहूंगा कि सरकार ने जो बजट पेश किया है वह एक थोथा बजट है । यह दिखावा है । केवल जनता को भ्रम में डालने के लिए,

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री चन्द्रशेखर सिंह]

देश की जनता की आंख में धूल झोंकने के लिए है । हमारे प्रदेश की जनता 80-85 प्रतिशत कृषक है लेकिन सरकार ने आज तक इन किसानों पर कोई ध्यान नहीं दिया ।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहता हूं कि सरकार इन किसानों को भूखा रखकर सुखी नहीं रह सकती है । आजकल फसल बरबाद हो रही है और सरकार किसानों को भगवान के भरोसे पर छोड़ दिये हैं । सरकार किसानों के साथ कोई भलाई नहीं कर रही है । आज स्वीटजरलैण्ड इतना छोटा देश होते हुए भी आत्मनिर्भर है । मान्यवर, यहूदियों ने एक देश बसाया लेकिन हमारा देश भारतवर्ष जो इतना बड़ा विशाल देश है यहां पर बड़ी बड़ी नदियां तमाम पहाड़, सब कुछ मौजूद है फिर भी हमारे नेताओं ने इस पर कोई ध्यान न देकर अपने ऐश और आराम में मस्त थे । हमको दुख है कि हमारी सरकार इस पर कोई ध्यान न देकर कोई कार्यवाही नहीं की । आज हमारे देश में छोटे-छोटे उद्योग-धंधे और बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज की आवश्यकता है ।

आज इतना छोटा देश जापान है जो कि बरबाद हो चुका था वह आत्मनिर्भर हो गया है लेकिन हमारा देश भिक्षा दो भिक्षा दो कहते हुए दूसरों के सामने हाथ पसारता है । हमारे क्षेत्र में चलें, जाकर देखें कि इन हरिजनों पर कितना अत्याचार हो रहा है । उन्हें रहने के लिए मकान नहीं हैं । उनके पास जो मकान है भी वह बरसात में टपकते हैं, जाड़ों में ठंडी नहीं रोकते हैं, गरमी में गरमी नहीं रोकते हैं । उनके पास खाने के लिये खाना नहीं है, पीने के लिये पानी की व्यवस्था नहीं है। उनके पास कुएं तक नहीं हैं । आज सरकार उनके लिये आवास बनवाती है । यह केवल दिखाने के लिये ।

मान्यवर, उन मकानों को जाकर देखें कि वह कृत्रिम आवास है । अगर आप धक्का दें तो वह पूरा का पूरा मकान ध्वस्त हो जायगा । बस्ती के जिले में जो कांग्रेस के लोगों ने भाग लेकर जो उन मकानों को बनवाये हैं। इन लोगों ने कितना पैसा हड़प करके उन हरिजन बेचारों को धोखा दिया है। मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से कहना चाहता हूं कि उन्होंने जो यह बजट पेश किया है वह एक धोखा है । हर विषय पर चाहे वह शिक्षा हो चाहे स्वास्थ्य हो या कोई भी विषय है, वह सब प्रकार से एक धोखा है । वह तो आप सब स्वयं कहते हैं कि यह बजट धोखा है । अपने भाषण में आप लोग स्वयं कहते है कि हमारे क्षेत्र में फलां चीज भी कमी है, फलां चीज की कमी है । यह धोखा नहीं है तो क्या है ?

मान्यवर, आपके माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे यहां जो अस्पताल खोले गये हैं, उन अस्पतालों में बेडें नहीं है। मरीजों के लिये दवा नहीं है। बहुत से मरीज, महिलायें दवा की व्यवस्था न होने के कारण वह स्वयं अपने बच्चों के साथ अपनी जान दे देती हैं । तो मान्यवर, मैं अपने माननीय मंत्री महोदय से यह आग्रह करूंगा कि वे उन स्थानों पर जायं जहां पर कि अस्पताल नहीं हैं, वहां पर अस्पताल खोलें और जिन स्थानों पर अस्पताल हैं और उन अस्पतालों में दवायें नहीं हैं, बेड्स नहीं हैं, वहां पर इन सब चीजों की व्यवस्था करें, जिससे गरीबों का भला हो सके। धना वर्ग तो बाजारों से दवायें लेकर अपना इलाज करा सकते हैं लेकिन जो हमारा गरीब तबका है, उनको दवाओं के अभाव में अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है, लेकिन हमारी समाजवादी सरकार, जो गरीबों की मुसाहिब, अपने को मानती है, क्यों एक स्टन्ट देती है । श्रीमन्, म आपके माध्यम से चाहूंगा कि यदि यह सरकार देश के और प्रदेश के अन्दर कृषि को आगे बढ़ाना चाहती है तो उसे खाद, अच्छे बीज, और समुचित पानी की व्यवस्था उन किसानों के लिये करनी पड़ेगी, तभी वे आगे बढ़ सकते हैं। मैं भी किसान होने के नाते, सरकार से आग्रह करूंगा कि उनसे जो लैवी ली जा रही है, वह उनसे न लेकर स्वयं बाजार में आकर, दकानदारों की तरह से किसानों से गेहूं ले । तभी किसानों का भला होगा वरना वे दिन दूर नहीं जब किसान गेहूं नहीं बोयेगा और जनता भूखों मरेगी।

यदि सरकार भविष्य में किसानों को हर प्रकार की सुविधा दे, और उनको छूट दे कि वे अपनी वस्तुओं को मनमाने ढंग से बेच सकें, तभी उनका कल्याण हो सकता है।

सरकार कहती है कि हम गरीबों की हमदर्द है लेकिन मैंने तो अपने ही क्षेत्र में देखा कि जो वहां पर सरकारी कर्मचारी हैं, वे गरीब किसानों से जबरन गेहूं वसूल कर रहे हैं और जो नहीं देते हैं, उनको धमकी दी जाती है, बन्द कर दिया जाता है। यह कितनी विडम्बना है। यदि इस प्रकार की व्यवस्था रहती है तो किसान गेहूं और चावल न पैदा कर ऐसी चीजें पैदा करेगा जिससे उसको अधिक पैसा मिले तब लोग खाने के बिना मरेंगे। आज की स्थिति बड़ी विकट है सरकार 2–4 महीने भी राशन नहीं दे पायेगी और प्रदेश में निकट भविष्य में भीषण महंगाई आयेगी। सरकार ने लिखा है कि हम शहरों मे रहने वालों को राशन देने की व्यवस्था करेंगे जिससे गरीबों को परेशानी न हो। मैं इस सरकार से जानना चाहता हूं कि क्या गरीब देहातों में नहीं रहते हैं? उनके लिये आप क्या सोच रहे हैं? अगर देहात के रहने वालों ने अंगड़ाई ली तो सरकार मजबूर हो जायगी।

देहात के बल पर ही हम यहां पर आये हुये हैं, और आप भी और यदि देहात की जनता हमसे विमुख हुयी तो फिर उनको पैसे के बल पर खरीदा नहीं जा सकेगा। आप जानते हैं कि देहात की जनता गरीब है, भूखों मर रही है, उनकी गरीबी की मजबूरी का फायदा उठाकर आप उन्हें खरीद सकते है लेकिन वे दिन दूर नहीं कि अगर वह चेत गयी तो आपको अपदस्त कर देगी। इसलिये मेरी आपसे प्रार्थना है कि यहां पर बिहार और गुजरात की दशा न होने पाये। हमारे प्रदे में भी वही स्थिति आयेगी कि यहां का जन मानस एक बार अंगड़ाई लेगा और प्र श भी सामने आकर खड़ा होगा। मैं आपके माध्यम से अपने माननीय मंत्री जी से यह आग्रह करूंगा कि वे अपने इस वातानुकूलित ठंडे कमरे में बैठ कर ठंडे दिल से सोचकर प्रदेश के शासन को चलावें तब प्रदेश का कल्याण होगा, अन्यथा नहीं।

आज देहातों में 2–2 और 4–4 घंटे भी बिजली नहीं मिलती है। हम यहां पर एशोआराम की जिन्दगी बिताते हैं। हमें उन देहात के लोगों को भी देखना चाहिये कि वे कितने कष्ट में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

(इस समय 2 बज कर 40 मिनट पर अधिष्ठाता श्री रामायण राय पीठासीन हुये।)

*श्री दीप नारायण पांडेय (जिला गोंडा)—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपके माध्यम से इस समान्य बजट की चर्चा में कुछ तथ्य सामने रखना चाहूंगा। हमारे विरोधी साथियों ने हमारे दल के ऊपर बहुत से प्रहार किये। मैं उनमें न जाकर, केवल एक दो उदाहरण ऐसे देना चाहता हूं जिससे ये चीजें सामने आ जायंगी कि कौन कितने पानी में है।

मैं एक बात साफ तौर पर बताना चाहता हूं। अभी हमारे एक जनसंघ के साथी कह रहे थे कि कांग्रेस दल, सत्ता दल ब्लैक मार्केटियर्स की मदद कर रहा है। मैं आपको बतलाना चाहूंगा कि हमारे यहां गोंडा जिले में 11–12 मार्च, 1974 को जब ब्लैक मार्केटियर्स पकड़ा गया, हमारे कांग्रेस के साथियन ने पकड़वाया तो जनसंघ के साथियों ने थाने को घेर लिया और उसकी जमानत किया जो कि जनरल डायरी में कोतवाली में लिखा हुआ है। मैं चुनौती देता हूं कि जो इस तरह से सत्ता दल पर आरोप-प्रत्यारोप की झड़ियां लगा रहे हैं वह जान लें कि 11–12 मार्च को उस जनरल डायरी में जो कि शहर कोतवाल की है स्पष्ट लिखा हुआ है कि जनसंघ के नगर अध्यक्ष और कुछ अन्य व्यक्तियों ने जमानत करवाई उस व्यक्ति जो कई बार सजा भी काट चुका था। तो आज अगर हमारी सरकार जखीरबाजों को, ब्लैक मार्केटियर्स को.....

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री हिम्मत सिंह (जिला बुलन्दशहर)—

जनरल डायरी क्या आपने कोतवाली में बैठ कर लिखवाई ?

श्री दीप नारायण पांडेय—

दूसरी बात मैं यह कहना चाहूंगा कि इस सदन के विरोधी दल के नेता ने बजट भाषण में यह कहा कि सवा छः एकड़ जोत पर लगान माफी नहीं रहने देनी चाहिये । मैं संयुक्त समाजवादी भाइयों से कहना चाहता हूं कि जब डा० राममनोहर लोहिया जिन्दा थे, मौत की कगार पर थे, उन्होंने उस समय कहा था कि लगान माफी जो है वह अवश्य होनी चाहिये । आज जब चौधरी साहब इस तरह की बात करते हैं तो संयुक्त समाजवादी दल के ये लोग जिन्होंने अपनी गैरत को भी बेच दिया है, चौधरी साहब के पास गिरवी रख दिया है, आज उनमें यह जुर्रत नहीं रह गयी कि इस चीज का विरोध कर सकते—आरोप और प्रत्यारोप की बातें बहुत करते हैं । मुझे दुख है कि केवल एक राज्य सभा की सीट के लिये उन्होंने अपने आपको चौधरी साहब के हाथ में बेच दिया ताकि राजनारायण सिंह राज्य सभा में चले जायं ।

अब मैं कुछ निवेदन करना चाहता हूं कि आज इस बात पर चर्चा होती है कि इस राज्य में कुछ भी नहीं हुआ । आज लोग बजट पर विश्वास नहीं करते हैं । तो मैं पूछना चाहता हूं कि कौन से आंकड़े आपके पास हैं जिन पर आप विश्वास करते हैं ? अगर कोई ऐसे आंकड़े हैं तो मुझे बतलाया जाय । मैं नहीं समझता हूं कि ये आंकड़े गलत है । आप अपनी तरफ से कोई संख्याधिकारी नियुक्त कर लीजिये, कोई आंकड़ा विभाग खोल लीजिये और उसी पर विश्वास कीजिये ।

जहां तक प्रदेश की उन्नति का सवाल है, कृषि, बिजली और सिंचाई का सवाल है, आज चौधरी साहब ने अपने बजट में कहा कि इस सरकार ने कृषि उत्पादन के लिये कुछ भी नहीं किया है और न कर रही है । तो मैं बहुत अदब के साथ अधिष्ठाता महोदय, यह कहना चाहूंगा कि इस बजट में सबसे ज्यादा पैसा इस समय हमारी सरकार दो तीन मदों में खर्च करने जा रही है (व्यवधान) सुन लीजिये, जरा सुनने की माद्दा रखिये । मैं बजट पर ही बोल रहा हूं, आंकड़ों पर बोल रहा हूं . . . .

श्री अधिष्ठाता—

बांके लाल जी,

श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी (जिला लखनऊ)—

आप बैठिये, बैठिये . . . . (हंसी)

श्री दीप नारायण पांडेय—

जहां तक कृषि का प्रश्न है, इस बजट में इस समय सिंचाई के ऊपर सबसे बड़ा हम लोगों ने जोर दिया है । मैं पूछना चाहूंगा कि क्या सिंचाई से कृषि की उन्नति नहीं होने वाली है ? जो कि सबसे बड़ा अटैक किया जा रहा है कि कृषि की ओर कोई भी नजर नहीं रखी जा रही है । चौथी योजना में 6.82 लाख हेक्टेयर भूमि भू-संरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत आयी । 1.39 लाख हेक्टेयर की अतिरिक्त वृद्धि हुई । 1.68 लाख एकड़ भूमि की सिंचाई हुई । 3.30 लाख निजी नलकूप लगाये गये । 26 हजार गांवों का विद्युतीकरण किया गया । क्या यह भी सब गलत है ? आप इस तरह की बातें कर रहे हैं कि कोई उन्नति नहीं हुई ।

श्री बांके लाल (जिला देवरिया)—

किस सन् में आप पैदा हुये थे ?

श्री दीप नारायण पांडेय—

हम तो आपसे बाद ही में पैदा हुये हैं।

श्री अधिष्ठाता—

यह मुनासिब बात नहीं है बांके लाल जी। आप ज्यादा बुजुर्ग हैं। (आपस में बात करने पर) माननीय बांके लाल जी, आप पुराने सदस्य हैं। वह इस सदन के नये सदस्य हैं। आप लोग प्रत्यक्ष बात न करें।

श्री बांके लाल—

नये लोग अपनी विचारधारा को रखें।

श्री अधिष्ठाता—

यह उनका दृष्टिकोण है, आप उसके जज नहीं हो सकते हैं। आप बैठिये, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं।

श्री दीप नारायण पांडेय—

आज हम एक दिशा की ओर बढ़ रहे हैं जो समाजवाद की दिशा है। कांग्रेस कमिटेड है इस देश में सोशलिस्म लाने के लिये। लेकिन एक बात मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आज जो हम पैसा खर्च करते हैं योजनाओं पर उसमें भ्रष्टाचार से निपटने के लिये हमको हर डिपार्टमेंट में छोटी-छोटी विजिलेन्स सेल्स बनानी चाहिये ताकि भ्रष्टाचार को रोका जा सके, उसे बढ़ावा न मिले। अगर हम ऐसा कर सकें तो जितना कैसा हम खर्च कर रहे हैं उसका लाभ इस प्रदेश के निवासियों को मिल सकेगा और इस प्रदेश की उन्नति बहुत जल्द हो जायगी। इन शब्दों के साथ मैं माननीय श्री नारायण तिवारी, वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत बजट का स्वागत करता हूं। यह एक समाजवादी बजट है और आने वाली पंचवर्षीय योजना में उत्तर प्रदेश का भाग्य और अच्छा होगा और हम आगे बढ़ेंगे।

जहां तक सड़कों के निर्माण का सवाल है इस साल के बजट में सड़कों के निर्माण के लिये तो पैसा नहीं रखा गया है लेकन पंचवर्षीय योजना में उसके लिये प्राविधान किया गया है।

इन शब्दों के साथ मैं अपना बजट भाषण समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह (जिला बाराबंकी)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस बजट पर होने वाली सामान्य चर्चा पर बोलने का अवसर दिया। मान्यवर, यह मौजूदा बजट कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। 5 वीं पंचवर्षीय योजना का यह प्रथम बजट है और जब से माननीय बहुगुणा जी ने इस प्रदेश के शासन की बागडोर सम्भाली है उनका यह पहला बजट है। जब माननीय बहुगुणा जी मुख्य मंत्री बने थे, उनसे इस प्रदेश की जनता को बड़ी-बड़ी आशायें बंधी थीं। पुरानी कांग्रेस के विभाजन के बाद भी जनता यह समझती थी कि अब कांग्रेस की नीतियों में कुछ परिवर्तन आयेगा और उससे प्रदेश की जनता का भला हो सकेगा, लेकिन मान्यवर, इस बजट को देखने से ऐसा लगता है कि जनता की आशायें धूमिल हो गयी हैं। आज चारों ओर घोर निराशा ही निराशा दिखाई दे रही है। कांग्रेस पक्ष के माननीय सदस्य भले ही इस बजट की तारीफ कर लें, करें भी क्यों न, यह उनका धर्म भी है, मगर पिछले 27 वर्षों में जिस प्रकार के बजट यहां पेश होते रहे हैं उसी प्रकार का यह भी एक बजट है। बजट हमारी नीतियों का सही-सही दिग्दर्शन कराता है। पहले के बजट में और इस बजट में कोई अन्तर नहीं है।

[श्री रामचन्द्र वक्स सिंह]

देहात का रहने वाला जो गरीब तबका है उनके सामने आज भी रोटी की समस्या मुख्य बनी हुई है। 27 साल के अन्दर हम इस समस्या को भी हल नहीं कर पाये हैं। प्रदेश की जनता को आज भी भर पेट रोटी नहीं मिल रही है। फिर कैसे कहा जाय कि यह अच्छा बजट है? कैसे समझा जाय कि इस प्रदेश की जनता का भला होने वाला है? जो सरकारी पक्ष में है, मंत्रीगण हैं, वे तो अवश्य इसे अच्छा कहेंगे, मगर आप उन लोगों की भावनाओं को देखिये जिनको आज जीवनोपयोगी कोई भी चीज उपलब्ध नहीं हो रही है। देहात में तो बिजली नहीं है, उनको मिट्टी का तेल भी नहीं मिल रहा है। रात को उनके छप्परों में सांप और बिच्छू तक आ जाते हैं। सांप अगर काट खाये तो इलाज तक की व्यवस्था नहीं है। यहां अभी बिजली चली गयी, पंखे न होने के कारण, प्रेस वाले उठकर चले गये। बरसात आ रही है, मगर देहात के लिये मिट्टी के तेल की कोई व्यवस्था नहीं है। महंगाई चरम पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी है। कपड़ा, डालडा, शकर, साबुन, मिट्टी का ेल, कोई भी तो चीज नहीं मिल रही है। इसके बाद भी यदि यह कहा जाय कि यह अच्छा बजट है, तो मान्यवर, मैं तो नहीं कह सकता।

मान्यवर, खाली आलोचना कर देने से या कह देने से कि बजट बहुत खराब है, काम नहीं चलेगा। हमें यह देखना होगा कि कौन सा कारण है जिसके कारण अच्छा बजट नहीं बन पाता। इस देश में जब तक पूंजीवाद व्यवस्था कायम रहेगी इसी तरह का बजट आता रहेगा गा, सरकार चाहे आपकी आ या विरोध पक्ष की आ जाय। पूंजीवादी व्यवस्था के रहते अच्छा बजट आ ही नहीं सकता।

मान्यवर, इस जमाने में तरक्की भी हुई है। मगर किसकी? तरक्की चन्द लोगों की ही हुई है और वह हैं टाटा बिड़ला जैसे लोग। इन लोगों की हैसियत कई गुना बढ़ गयी है। जिन लोगों की तरक्की हुयी है वह हमारे समाज के पूंजीपति लोग हैं, इन बड़े-बड़े लोगों की हैसियत कई गुना बढ़ गयी है। ऐसी बात नहीं है कि देश की तरक्की नहीं हुयी है, प्रदेश की तरक्की नहीं हुयी है। देश और प्रदेश की तरक्की तो हुयी है लेकिन उसका फायदा सिर्फ चंद लोगों को मिला है, चंद लोगों के हाथों में वह जाकर सरमायेदारों के हाथों में वह जाकर सिमट गया है। आज यह देखने की बात है आलोचना करने की बात नहीं है। सवाल यह है कि पूंजी वादी व्यवस्था है उसको रोका जाय और समाजवादी व्यवस्था को लागू किया जाय। समाजवाद अब केवल नाम का ही रह गया है। मैं आपके माध्यम से सदन के माननीय सदस्यों से कहना चाहता हूं कि सारा समाज हम लोगों पर आशायें लगाये हुये है। और खास तौर से वह आप लोगों से आशायें लगाये है कि आप उसे समाजवादी व्यवस्था देंगे, आप उनकी आशायें पूरी कर सकते अगर समाजवाद के पथ पर चलें।

कई मामलों में आपकी नीतियां गलत सिद्ध हो रही हैं। आप दोहरी नीतियां अपना रहे हैं। गेहूं की नीति आपकी विफल हुयी है। डालडा और शकर के मामले में आप दोहरी नीतियां अपना रहे ह कि इतना कंट्रोल से और इतना खुला बेचेंगे। अगर आप सरमायेंदारों पर बंदिश लगाते हैं तो इस देश और प्रदेश की जनता आपका समर्थन करेगी। आप सरमायेदारों के मुहताज न बने, मैं आपको चेतावनी ेना चाहता हूं कि यह वही कांग्रेस है जो सन् 67 में जगह-जगह पर बुरी तरह हारी थी। आपने जनता के पक्ष में कुछ काम किये थे, आपने प्रिवीपर्स को खत्म किया, बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया और उन्हीं चीजों का परिणाम यह हुआ कि सन् 71 में सारे देश की जनता ने आपको भारी बहुमत देकर दिल्ली की गद्दी पर बैठाया।

(कुछ सदस्यों के बोलने पर)

मान्यवर, हमारे तमाम माननीय सदस्यों ने काफी बोला, आप बीच में न बोलें इससे कोई फायदा नहीं होगा। मैं कोई ऐसी बात नहीं कह रहा हूं। यह एक बात विचारधारा की प्रस्तुत कर रहा हूं।

मान्यवर, हिन्दालको को आपने कन्सेशन दिया है, 61 करोड़ रुपया सेल्स टैक्स का बाकी है। आपने अभी वसूल नहीं किया है। पर गरीबों का 100 रु0, 50 रु0 आप जल्दी वसूल कर लेते हैं, किसानों से जल्दी वसूल कर लेते हैं। बिड़ला पर 136 करोड़ रेल के भाड़े का बाकी है केन्द्रीय सरकार हिम्मत नहीं कर रही हैं कि उसे वसूल करे।

मान्यवर, गलत आय नहीं होनी चाहिए। मनोरंजन कर आपने लगाया है। तो इसका भार गरीब पर ही पड़ेगा क्योंकि वह ही सिनेमा देखने जाता है, बिड़ला जी तो जाते नहीं हैं। स्टैम्प शुल्क का भी बोझ गरीबों पर ही पड़ेगा। आप टाटा, बिड़ला के ऊपर जबर्दस्त टैक्स लगाइए। शुगर इंडस्ट्री को नेशनलाइज करिये, टेक्सटाइल इंडस्ट्री को नेशनलाइज करिये, डालडा की फैक्टरियों को नेशनलाइज करिये। जीवन उपयोगी वस्तुयें बनाने वाले कारखानों को आप नेशनलाइज करिये। उनको पब्लिक सेक्टर में लाइए।

कुछ लोगों की यह शिकायत है कि पब्लिक सेक्टर में गड़बड़ी है। तो उसको देखा जायगा और आप भी उसको देखें। खासतौर से नौकरशाही पूंजीपतियों की साजिश से हमारे पब्लिक सेक्टर के अन्दर गड़बड़ी कराना चाहते हैं और उसको बदनाम करा देना चाहते हैं। हमको अफसोस है कि आज दो तरह की शिकायतें हैं--एक तो अपने को समाजवादी कहते हैं जैसे कि माननीय चौधरी साहब तथा यह सरकार। परन्तु आप लोगों से कुछ होने वाला नहीं है। इस प्रदेश की जनता को आपसे कुछ आशायें नहीं हैं। आपके माध्यम से सरकार को मैं आगाह करना चाहूंगा क्योंकि कहा गया है कि उत्तर प्रदेश गुजरात बन सकता है। तो ऐसी स्थिति सरकार न पैदा करे कि उत्तर प्रदेश एक दिन गुजरात जैसा बने।

श्री अधिष्ठाता---

आपका समय समाप्त हो गया है। आप बैठ जाइए।

श्री राम सुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)--

अधिष्ठाता जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बजट पर कुछ कहने का समय दिया। अधिष्ठाता जी मैं आपके जरि` माननीय वित्त मन्त्री जी को भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने बहुत अच्छा बजट, जो आज वर्तमान समय के लिए उपयोगी है, पेश किया। मैं उधर के बैठने वालों से निवेदन करूंगा कि वे पुराने 15–16 साल के बजट को देखें जो सदन में पेश हुआ करते थे। मैं समझता हूं कि नेता विरोधी दल जो मौजूद नहीं हैं उनसे भी आग्रह करता कि वे 22 साल कुर्सी पर बैठकर मन्त्रि परिषद् के सदस्य होकर सदन में जो बजट पेश किया करते थे उसमें और आज के बजट में क्या अन्तर है इसको देखते। यदि वे कहते कि यह बजट खराब है तो मैं मान लेता कि उनके विचार बहुत अच्छी योजना की ओर बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि उन्होंने पिछले बजटों का अध्ययन करने की कोशिश नहीं की।

अधिष्ठाता जी मुझे तकलीफ होती है कि उधर के बैठने वाले माननीय चौधरी साहब ने भाषण दिया था और उसमें सवा छः एकड़ की लगान माफ खत्म कर देने को कहा था। उन्होंने अपने घोषणा पत्र में भी मालगुजारी माफ आदेश समाप्त कर देने को कहा था। यदि यह समाप्त करने का घोषणा पत्र में प्राविधान था तब तो मैं माननीय बलवान जी से आग्रह करता हूं कि वे साथ छोड़ें नहीं तो साथ चलने वाला नहीं है। अधिष्ठाता जी से मैं निवेदन करूंगा कि अगर बजट इस प्रदेश की 9 करोड़ की जनता को छूता है और उसके हित के लिए कुछ अंशदान करता है तब तो यह बजट जनहिताय कहा जायगा।

मैं पूछना चाहता हूं कि इस बजट का कौन सा ऐसा हिस्सा है जो जनहिताय नहीं है। इसमें हरिजनों के लिए किसानों के लिए तथा विद्यार्थियों के पढ़ाई व लिखाई के सम्बन्ध में उनको छात्रवृत्ति देने के लिए 14 करोड़ पए मंजूर हुआ है। जहां तक मैं समझता हूं 20

[श्री राम सुन्दर पाण्डेय]

साल के अन्दर कोई भी सरकार ने ऐसा बजट नहीं पेश किया है जिसमें इतनी धनराशि का प्राविधान हरिजनों के लिए किया गया हो। लेकिन आज कि इस बजट के अलावा न और कभी ऐसा नहीं हुआ। उधर के बैठने वाले माननीय सदस्य हजारों बार कह चुके हैं कि हमारे गांवों का गरीब ऋण के बोझ से दबा हुआ है, बोझिल है उनको उबारने के लिए व उनको ऋण से मुक्ति दिलाने के लिए कोई कायदे-कानून हमारी सरकार नहीं बनाती।

इस बजट में हमारे वित्त मन्त्री जी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हम ऐसे लोगों के लि जो गांव में रहते हैं जो सदियों से---हजारों साल से ऋण से दबे हुए हैं उनको ऋण से छुट-कारा दिलाने के लिए एक विधेयक सदन में लाने वाले हैं। मैं आग्रहपूर्वक उधर के बैठने वाले लोगों से पूछना चाहता हूं कि आप कोई एक मिसाल पेश कर दीजिए जिसके द्वारा गांवों में रहने वाले हरिजनों, भूमिहीन मजदूरों, खेतिहरों के लिए मुफ्त जमीन और कर देने की बात किसी और साल के ही बजट में हो अब तक एक हरिजन एक झोपड़े में ही रहता था, उसी में सुअर, बकरी पालता था और उसमें वह और उसके परिवार के सदस्य रहते थे। मुझे अच्छी तरह से याद है जब उधर के बैठने वाले लोगों की सरकार थी, संविद की गवर्नमेंट थी, श्री माधव प्रसाज जी जो इस समय मौजूद नहीं हैं, वह उद्योग मन्त्री थे। क्या उन्होंने लाखों ऐसे परिवारों को घर देने की व्यवस्था की थी? यह पहली गवर्नमेंट है जिसने 150 मीटर जमीन हर परिवार को जो हरिजन हैं गरीब हैं उनको देने का प्राविधान किया है। 9 लाख, 23 हजार से अधिक परिवार वालों को 14,000 हेक्टेयर भूमि मिली है। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या जबानी ही उदारता दिखाना चाहते हैं मैं पूछना चाहता हूं कि क्या जबानी ही व्यवहार और आचरण में एका करने की बात करते हैं? मैं पूछना चाहता हूं कि क्या इससे पहले भी किसी बजट में इस प्रकार का प्राविधान हुआ है जिसमें गरीब गांवों में रहने वाले लोगों की ऋण से छुटकारा दिलाने की बात कही गई हो, मुफ्त जमीन देने की बात कही गई हो। मैं दावे के साथ कहना चाहता हूं कि ऐसा नहीं था और अगर ऐसा था तो आपका फर्ज होता है कि बजट में बोलते समय उसकी मिसाल कहें।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि आज तक इस सदन में कौन सा ऐसा बजट पेश हुआ है जिसमें छात्रों को छात्रावास और छात्रवृत्ति का प्राविधान हुआ हो। आज लोग महंगाई की बात करते हैं। सन् 1967 में जब नेता विरोधी दल मुख्य मन्त्री थे मुझे याद है किसानों से लेवी वसूल की गई थी। मुझे यह भी याद है कि जबरदस्ती वसूल की गई थी। आप किस मुंह से तथा नेता विरोधी दल यह कहते हो कि यह सरकार गलत आचरण कर रही है जबकि हमसे खराब आप आचरण व्यवहृत कर चुके हो। सन् 1967 में आपको याद होगा चीनी नसीब नहीं होती थी और उस समय श्री झारखंडे राय खाद्य मन्त्री थे कम्युनिस्ट पार्टी के। श्री माधोप्रसाद त्रिपाठी जी उद्योग मन्त्री थे। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि आप इतिहास के पन्ने उलट कर देखिए कि महंगाई आती है जहां लड़ाई होती है महंगाई के बादल हटते हैं छंटते हैं और महंगाई खत्म होती है। महंगाई केवल आपके ही प्रदेश में नहीं है हिन्दुस्तान में और भी प्रदेश हैं जहां आप से ज्यादा महंगाई है और भी दुनिया के देश है जहां महंगाई बहुत ज्यादा है। बाजार में आइए आपको दो-सवा दो रुपए में एक किलो चावल मिलेगा वही चावल सिंगापुर, मलेशिया, में क्रमशः 5 रु0 10 रुपए किलो मिलेगा। महंगाई है, मैं महसूस करता हूं। सरकार जानती है और तभी उस महंगाई को दूर करने के लिए हमारी गरीबी को दूर करने के लिए आज हम जोर लगाये हुए हैं। जब हम कहते हैं कि आओ, मिल कर गल्ला पैदा करो, जब हम कहते हैं कि बिजली पैदा कर तो आप हड़ताल का नारा लगाते हैं। चौधरी साहब बैठे हैं। वह हमेशा से हड़ताल के विरोधी थे और कहते थे कि हड़ताल नहीं होनी चाहिए। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि पिछली बार आपने सारी जनता का आवाहन किया हड़ताल के लिए और कहा कि जो चुनाव हुए उसमें चोरी हुई है।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

जब मैंने यह देख लिया कि जीतने के लिए बैलट पेपर तक बदल दिये और बैलट पेपर के जरिये आप कुर्सी छोड़ने वाले नहीं हैं तब मैंने यह कहा और आज भी मैं वही राय रखता हूं।

श्री त्रिवेनी (जिला आजमगढ़)—

माननीय चौधरी साहब से निवेदन करूंगा कि अगर बलट पेपर बदलते तो इतने लोग उधर कैसे बैठे हैं।

श्री शतरुद्ध प्रकाश (जिला बाराबंकी)—

श्रीमन, इल्जाम और सफाई के बीच में सच्चाई पिस रही है तो मैं कोशिश करुंगा कि वह न पिस पाये। सबसे पहले तो मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि पेश करता हूं जिन्होंने 47 के पहले आजादी की लड़ाई में अपनी जिंदगी के खुशगवार दिन बिताये। दूसरी तरफ मेरे मन में एक गुस्सा भी है और घृणा भी है उस तस्वीर को देखकर जो 47 के बाद भोग की तस्वीर हमारे सामने आता है। हमने गांधी जी को देखा तो नहीं लेकिन मेरे मन में हसरत जरूर है कि गांधी जी के जो सपने थे वह इस देश में पूरे हों और यह भी हो सकता है कि मेरी पीढ़ी को, मेरे नौजवान दोस्तों को उन लोगों के खिलाफ लड़ाई भी लड़नी पड़े जिन्होंने गांधी जी की रहनुमाई में आजादी की लड़ाई लड़ी। जो धारा गांधी जी ने 47 के पहले देश में बहायी थी वह आज अवरुद्ध हो गई है। उस धारा को हम चाहते हैं फिर से बहायें। मैं आज यह महसूस करता हूं कि राजनीतिक आधार पर आपको शायद आजादी मिल गई हो और अंग्रेज भी यहां से चले गये लेकिन आज भी यहां मानसिक गुलामी है।

शिक्षा में अंग्रेजी का माध्यम है। शिक्षा का जो पाठ्यक्रम है, जो ढांचा है उसमें आप इस मानसिक गुलामी को देख सकते हैं। जो यह बजट रखा गया है इससे उत्तर प्रदेश का तब तक विकास नहीं हो सकता जब तक कि मानसिक दासता की बेड़ियों में हम बंधे रहेंगे। अगर मानसिक गुलामी नहीं गई तो श का विकास कैसे मुमकिन बना सकते हैं। जब आपकी शिक्षा ही पराधीन है और शैक्षिक ढांचा ही दूसरे से लिया है, कभी स से, कभी अमरिका से और कभी साम्प्रदायिकता के आधार पर, तो फिर कैसे विकास हो सकता है। आज जरूरत इस बात की है कि छोटे-छोटे पैबन्द न लगाये जायं बल्कि जो कपड़ा फट गया उसको बदल कर दूसरा कपड़ा पहन लिया जाय। आपने दो विश्वविद्यालय दिये रुहेलखंड और फैजाबाद में। अगर आप समझते हैं कि इनकी स्थापना से प्रदेश में शिक्षा की समस्या हल हो जायगी तो मैं समझता हूं यह ना समझी है। इस उत्तर प्रदेश में 9 करोड़ की आबादी है जिसमें 1 करोड़ 89 लाख आदमी साक्षर है। केरल जो छोटा सा प्रदेश है वहां 60 प्रतिशत साक्षरता है। महाराष्ट्र में भी 39 प्रतिशत है।

एक सदस्य—

वहां कांग्रेस का राज्य है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

कांग्रेस का राज्य तो यहां भी चल रहा है। बजट में, जिसको नारायण दत्त जी ने पेश किया, शिक्षा के बारे में 2–3 विश्वविद्यालयों के लिए कहा गया बना दिया और कह दिया कि बहुत बड़ा काम कर दिया। लेकिन अगर पूरे उत्तर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को देखें तो पता चलेगा कि इस शिक्षा रूपी पेड़ की जड़ें सड़ गयी हैं, तना कमजोर हो गया है और डाल और पत्तियां तो बिल्कुल सूख गई हैं। ये जो 2–3 विश्वविद्यालय खोल रहे हैं, इसमें अधिक से अधिक 25–30 हजार विद्यार्थी भर्ती हो जायेंगे, लेकिन इससे शिक्षा की समस्या हल होने वाली नहीं है। इस साल,

[श्री शतरुद्ध प्रकाश]

मान्यवर, हाई स्कूल की परीक्षा में करीब 4 लाख विद्यार्थी फेल हुये हैं। 38 फीसदी रिजल्ट गया है। 32 फीसदी वोट पाकर यह सरकार बनी है और हाई स्कूल का रिजल्ट भी 38 फीसदी हो गया है। अजीब इत्तिफाक है।

(इस समय 3 बजकर 15 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जो शिक्षा का स्तर है, वह निरन्तर गिरता चला जा रहा है। इस प्रदेश में शिक्षा बिल्कुल सड़ गयी है। आप सड़ी गली शिक्षा को चला रहे हैं। शिक्षा में कैसे सुधार हो, इसके बारे में बजट में कुछ भी नहीं कहा गया है। मान्यवर, 39 में आचार्य नरेन्द्रदेव की रिपोर्ट पेश हुई। उसके बाद 1953 में आती है राधाकृष्ण की सिफारिश। उसके बाद मुदालियर कमेटी की रिपोर्ट है। 1964 में कोठारी आयोग ने अपनी सिफारिश दी है। देश की प्रधान मन्त्री कहती है कि शिक्षा का स्तर बदलना चाहिये। लेकिन, मान्यवर, मेरी समझ में नहीं आता है कि फिर भी शिक्षा स्तर क्यों नहीं बदला जाता। आखिर, आचार्य नरेन्द्र देव, डा० राधाकृष्णन, कोठारी आयोग, मुदालियर आयोग की सिफारिश, इनका क्या मतलब है? आप शिक्षा व्यवस्था क्यों नहीं बदलना चाहते हैं?

एक तरफ लार्ड मैकाले के अंग्रेजी स्कूल हैं और दूसरी तरफ महापालिका के स्कूल, जिनमें लड़कों के बैठने के लिए टाट की पट्टियां भी नहीं हैं? हाई स्कूल में 4 लाख लड़के फेल हो रहे हैं, और 38 प्रतिशत रिजल्ट आ रहा है। मुदालियर आयोग की रिपोर्ट ने तो यहां तक सिफारिश की है कि इन इन्टरमीडिएट कालेज की कक्षाओं को तोड़ देना चाहिये। अगर सूबे के अन्दर इस हाई स्कूल और इण्टर मीडिएट बोर्ड की यह स्थिति हो गई है कि 60-62 प्रतिशत लड़के फेल हो रहे हों, तो सचमुच ऐसे बोर्ड को तोड़ दिया जाना चाहिए। लेकिन उसके बारे में आप मौन हैं। आज देश और प्रदेश में शिक्षा के जनतंत्रीकरण की जरूरत है, लेकिन रूस और अमेरिका से प्रभावित होकर विश्वविद्यालय का ढांचा विदेश परस्त हो चुका है। विश्वविद्यालयों में 20-25 वर्षों से लोग विभागाध्यक्ष बने बैठे हैं। बनारस विश्वविद्यालय माननीय मालवीय जी ने बनाया था। विभागाध्यक्ष का पद रोटेशन में ही आना चाहिए, इसके बारे में आज तक जानकारी नहीं दी गयी कि यह रोटेशन से आयेगा या नहीं।

मान्यवर, मैं आज यहां कहना चाहता हूं कि जब तक शिक्षा पद्धति में बदलाव नहीं होगा, समाजवाद नहीं आने वाला। आज शिक्षा के दरवाजों को बन्द कर रहे हैं, लाखों लड़के फेल हो रहे हैं, लड़कों को एडमीशन नहीं दिया जाता है, तब मान्यवर कैसे समाजवाद आयेगा। जिस सूबे में गरीब 21 प्रतिशत से ज्यादा पढ़े लिखे न हों, वहां पर कैसे कोई विचारधारा का प्रवेश करा पायेंगे। जब तक जनतन्त्र में शिक्षा का प्रसार नहीं होगा, तब तक कोई भी दर्शन समाज में नहीं लाया जा सकता। अगर आप यहां पर देखें उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों का यह निश्चित रूप से उसी परम्परा का अनुसरण कर रहे हैं जो 20, 25 साल पहले लार्ड मकाले यहां पर चालू कर गये थे। अगर विद्यार्थी एक विषय में फेल है तो पूरा साल बरबाद। बनारस विशवद्यालय में कुछ अच्छाइयां हो गयी हैं जिस विषय में विद्यार्थी फेल हो गया है उसी में उसको इम्तिहान देना होगा।

यह जो बजट है इसमें करीब साढ़े 16 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है शिक्षा के अन्तर्गत जो पूरे बजट का 1/33 वां भाग भी नहीं है और कहा यह जा रहा है कि शिक्षा का विकास किया जा रहा है, दो विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं लेकिन यह सब नगण्य है। मैं यह कहना चाहूंगा कि शिक्षा के मामले में छोटे-छोटे पेबन्द न लगाये जायं। जरूरत है पूरी शिक्षा प्रणाली बदलने की। शिक्षा को जनतांत्रिक बनाया जाय जिस प्रकार अंग्रेजी सरकार के समय विलायत से वायसराय आकर भारत में हुकूमत किया करते थे वैसे ही कुलपतियों को इतने अधिकार दे दिये हैं कि जब चाहें परीक्षा को स्थगित कर दें, जब चाहें विश्वविद्यालय को खोल अथवा बन्द कर दें।

दुनिया के जितने तरक्की पसन्द मल्क है जैसे फ्रांस व अमेरिका वहां पर एक मान्यता बन गई है कि शिक्षा के संचालन में विद्यार्थियों को हिस्सेदारी दी जाय। कर्मचारियों, अध्यापकों, जनता की शिक्षा के चलाने में हिस्सेदारी दी जाय। लेकिन आप गोरखपुर, लखनऊ विश्वविद्यालय की देखें अथवा उत्तर प्रदेश के जितने विश्वविद्यालय है उनको देखें जो वाइस चांसलर है वह मनमाने ढंग से विश्वविद्यालय को खोलेगा, बन्द करेगा, परीक्षा की तिथि घोषित करेगा और इस प्रकार वहां कोई डेमोक्रेसी नाम की चीज नहीं है। आप देश व प्रदेश में जनतन्त्र लाना चाहते हैं लेकिन विश्वविद्यालय की जो मशीन है उसमें जनतंत्र नहीं होगा तो मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे देश तथा प्रदेश में जनतंत्र का माहौल उत्पन्न हो सकेगा। अगर विद्यार्थी को शिक्षक संस्थाओं में ही जनतंत्र की शिक्षा नहीं दी जायगी तो जनतंत्र व समाजवाद आप किसके लिए लाना चाहते हैं? मेरा विनम्र शब्दों में निवेदन है कि शिक्षा को जनतांत्रिक बनाने के लिए जरूरी है कि शिक्षण संस्थाओं का निर्णय प्रक्रिया में, पाठ्यक्रम को तय करने की प्रक्रिया में, परीक्षा की तिथि घोषित करने की प्रक्रिया में कब खुले और कब बन्द हो इस सबमें विद्यार्थियों की हिस्सेदारी होना चाहिए। होता यह है कि अगर कोई विद्यार्थी उपकुलपति की मुखालिफत करता है तो उसे अनुशासनहीन घोषित कर दिया जाता है और या तो फिर वह जेल भेज दिया गया अथवा निकाल दिया गया। इससे जनतंत्र शिक्षा में कैसे पनपेगा? यनिवर्सिटी ऐक्ट जो पारित हो चुका है अभी भी मुख्य मंत्री अथवा शिक्षा मंत्री के कार्यालय में फाइल के अन्दर रखा हुआ है। अगर आप सचमच प्रदेश के विश्वविद्यालयों की स्थिति को सुधारना चाहते है तो उस ऐक्ट को लागू करने की दिशा में कदम उठाया जाय। मैं बजट बनाने वालों से आग्रह करूंगा कि जब तक प्रदेश की शिक्षा को वह बदलेंगे नहीं तब तक इस प्रदेश का कल्याण अथवा विकास होना संभव नही है। (शुक्रिया)।

*श्री रामायण राय (जिला देवरिया)—

मान्यवर, शिक्षा जगत में इधर के बैठने वालों ने सुधार लाने का कोई प्रयास नहीं किया इस प्रश्न के ऊपर मैं आपकी आज्ञा से अन्त में निवेदन करूंगा किन्त् प्रारम्भ में केवल इतना निवेदन करना चाहता हूं कि अनत्तीर्ण होने वाले छात्रों के आंकड़े जो मेरे पूर्व वक्ता ने पेश किये है उनके साथ ही साथ मैं यह भी आशा करता था कि उनकी ओर से यह भी प्रयास किया जायेगा कि छात्र नेताओं की ओर से जुलाई से लेकर अप्रैल तक कितनी बार यूनिवर्सिटियों को बन्द करने के लिये आन्दोलन किये गये और कितनी बार विद्यालयों में हड़ताल के लिये चेष्टा की गई। अगर यह पक्ष भी सदन के सामने आया होता तो आज सरकार के ऊपर जो जिम्मेदारी थोपी जा रही है उसका प्रयास न किया गया होता। मैं तो मान्यवर, आज इस बजट के मौके पर एक खास दृष्टि सदन के समक्ष आपके माध्यम से प्रस्तुत करने के लिये खड़ा हुआ हूं। हमारे इधर के बैठने वाले लोग कोई खास समाजवादी शिक्षा प्राप्त करके इधर आये हुये हैं। इनको हैरानी होती है कि चौधरी साहब क्या कह रहे है। और क्या कर रहे है। मुझे हैरानी नहीं होती है। वह इसलिये नहीं होती है क्यों कि मैं जानता हूं कि चौधरी साहब जिस जीवन-दर्शन और समाजदर्शन को मानते है उसको मानने के बाद जो उनका दृष्टिकोण बनेगा और कार्यान्वयन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा वह कुछ इसी तरह का होगा।

मान्यवर, आपको स्मरण होगा जिन दिनो चौधरी साहब मुख्य मंत्री थे उन दिनों भी मैंने इस बात को सदन के समक्ष रखा था। संसार के इतिहास की ओर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो देखते है कि चौधरी साहब के पूर्व भी कुछ आदमी इसी राजनीतिक पटल पर रेशियल सुप्रेमेसी प्रोच किये। जर्मनी के नीत्से ने अपनी रेस वालों से कहा था कि तुम महान हो, तुम सारे विश्व पर राज्य करने के लिये पैदा हुये हो। उसने साफ शब्दों में यह भी कहा था कि स्त्रियों का स्थान केवल चूल्हे में है। हमारी महिला मंगल योजना आज

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री रामायण राय]

समाप्त हो गई है । हमारे गुरुओं ने यह शिक्षा दी है कि मनुष्य जो कुछ करता है उसका उसके जीवन-स्तर पर बहुत प्रभाव पड़ता है । इसी प्रकार चौधरी साहब ने एक किताब लिखी है जिसमें उन्होंने गरीबी मिटाने का उल्लेख किया है । मैं अपने समाजवादी भाइयों से कहता हूं कि:—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी, दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।

आज देवरिया के लोग गरीब क्यों है ? कहा गया है कि वहा के लोग इसलिये गरीब है क्यों कि काहिल है, जाहिल है और वहां के लोगों में कोई पुरुषार्थ नहीं है । ऐसे लोग किसी खास इलाके में पैदा होते है । लोहिया साहब के पाठों को पढ़कर आपने क्या लिया है ?

मान्यवर, मैंने, जाकर देखा है कि जो सबसे कठिन काम इस देश में है कोयले की खानों में जाड़ों के दिनों में जब बाहर सारा शरीर कांपता रहता है और जिस इलाके के लोग फर्लांग-फर्लांग भर खाइयों में घुसकर कोयला खोदते है और उन भठ्ठियों के सामने खडे होते है जहां लोहा गलाया जाता है उस इलाके के लोगों को काहिल, जाहिल और कायर कहलाया जाता है । ऐसे लोगों के नेतृत्व में चलने वाले लोग समाजवाद के सपने और समाजवाद की बातें करते हैं । मैं मान्यवर, आपसे आग्रह करना चाहता हूं कि मुझे कोई हैरानी नहीं होती जब चौधरी साहब सवा छः एकड़ भूमि पर लगान की पुनरावृत्ति करने की बात करते है । मैं शतरुद्ध प्रकाश जी से यह बात कहना चाहता हूं कि उन्हीं के (चौधरी चरण सिंह के) मुख्य मंत्रित्वकाल में जेलों में वह इसीलिये भेजे गये थे, चूंकि वह छात्र यूनियन के निर्माण की बात किया करते थे । जो छात्र यूनियन की मांग कर घोर विरोधी हो, जो कर्मचारियों के सिरों पर लाठी बरसाता हो, उनके नेतृत्व में चलने वाले लोग आज समाजवाद की बात करते हैं— यह बिडम्बना, यह धोखा है ।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

चाहे चौधरी साहब हों, चाहे टी0एन0 सिंह हों और चाहे बहुगुणा हो, जो सरकार छात्र यूनियन को खत्म करेगी, उसके खिलाफ आन्दोलन होगा ।

श्री रामायण राय—

तो मैं निवेदन कर रहा था, अपने दोस्तो से कह रहा थां इस बजट में, जिस बजट में समाज के सबसे निर्बल जैसे रिक्शा चालकों के बारे में भी व्यवस्था की गई है, उसको अप्रगतिशील बजट कहा जाता है, उसके पन्ने इस सदन में फाड़कर फेंक दिये जाते है, तो मेरी समझ में नहीं आता है कि क्या हो रहा है ? वास्तविकता यह है कि चमत्कार इन कुर्सियों का होता है । मैं क्या बताऊं चौधरी साहब जब मुख्य मंत्री थे तो उनके जमाने में गन्ने के मूल्य तीन प्रकार के तय किये गये थे ? पश्चिम के किसानों के लिये 15 रुपया क्विंटल, मध्य के लिये 13 रूपये क्विंटल और पूर्वी जिलों देवरिया आदि के लिये 10 रुपया क्विंटल मूल्य तय किया गया था । देवरिया और मेरठ में 5 रुपये का अन्तर । इतना बड़ा पक्षपात और आप उनकी जय जयकार करते है ।

मुझे याद है चीनी मिलों के राष्ट्रीयकरण के लिये एक कमेटी गठित की गई थी चौधरी साहब के जमाने में । जिसके एक सदस्य गेंदा सिंह थे और इधर बैठे वीरेन्द्र वर्मा भी उसके एक सदस्य, थे, जो मेरी इस बात की गवाही देंगे कि उसने चीनी मिलों के राष्ट्रीयकरण के लिये एक मसोदा तय किया था, दिल्ली से अर्थशास्त्री बुलावाया था । लेकिन इस सदन को वह रिपोर्ट देखने का अवसर नहीं मिला । चौधरी साहब के जमाने में देखने का अवसर नहीं मिला । मिलों का राष्ट्रीयकरण तो जाने दीजिये, इस सदन के द्वारा गठित समिति की रिपोर्ट तक को इस सदन में आने का मौका नहीं मिला और फिर भी जनतंत्र की दुहाई दी जाती है । कहा जाता है है कि जनतंत्र में हमारी आस्था टूट रही है । हिंसा की तरफ कौन जाता है ? एक्जामिनर

को परीक्षा में बेईमान कौन कहता है । जानता हं कौन कहता है । राष्ट्रीयता, समाजवाद और जनतंत्र जीवन के नये मूल्य है और इस दल में बैठने वाले लोगों ने इसको प्रतिष्ठित किया है । इनकी शिक्षा देने की हमको आवश्यकता नही है ।

बजट के उन प्राविधानों को आप देखें, जिससे कमजोर लोगों को लाभ पंहुचता है उनकी आपने तारीफ की होती और जिन बातों के चलते स्थिर स्वार्थियों को लाभ पंहुचा है, उसकी आप निन्दा करते तो मैं समझता कि आप निष्पक्ष बात कह रहे हैं । लेकिन वी थिंक ऐज वी आर, मनुष्य को संसार वैसा ही दिखाई देता है, जैसी उसकी मनःस्थिति होती है । आपकी मनः स्थिति बदल चुकी है, आप नीत्से के जीवन दर्शन पर विश्वास करते है। जिसने कहा था–जरमन महान हो । यह कहते है कि जाट महान हो। कहा था कि महिलाओं का चूल्हे का स्थान है। मनु की तरह इन्होंने कहा–महिलाओं को राजनीति में हिस्सा लेने का अधिकार नहीं है, केवल उनकी श्रीमती जी को छोड़कर । मैं व्यक्तिगत आलोचना की नीयत से नहीं कह रहा हूं । उन दिनों मैं इस माननीय सदन का सदस्य था। देवरिया में दस रुपया भाव किया जाय तय हुआ । मैंने इस सदन में चौधरी साहब को चार्ज किया था । उन्होंने देवरिया शहर में मिल मालिकों की एक मीटिंग बुला ी और उस मीटिंग के बाद देवरिया के किसानों के साथ क्या हुआ ? एक रुपया भाव कम हुआ। तो छः करोड़ रूपया हमारा मारा गया । 15 की जगह दस रुपये का भाव दिलाया गया और राष्ट्रीयकरण की सिफारिश सिफारिश रह गयी थी।

मैं अन्त में, जो आपने इस अवसर पर अवसर दिया विचार व्यक्त करने का इस अवसर पर एक ही आग्रह करके अपनी बात समाप्त कर रहा हूं । शीशे के घर में रहने वाले लोग पत्थर फेंकने की आदत छोड़े नहीं तो वह स्वयं बरबाद हो जायेंगे।

श्री लक्ष्मण सिंह (जिला मुजफ्फर नगर)––

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं...

श्री धीरेन्द्र सहाय (जिला पीलीभीत)––

आप लिस्ट नही देखते है । आप लिस्ट देख कर चलिये ।

श्री अध्यक्ष––

जो इस तरह से बोलता है उसको कभी मौका नहीं मिलेगा । आप बार बार टोकते हैं ।

*श्री लक्ष्मण सिंह––

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कई रोज से मैं बजट की चर्चा सुन रहा हूं । नया सदस्य हूं। मैं कोई बजट एक्सपर्ट नहीं हूं । कुछ लोग बजट पर चर्चा करते है, कुछ इधर उधर के भाषण भी देते है । सदन का प्रिविलेज है । उनको भाषण देने का अख्तियार हासिल है । लेकिन एक वरिष्ठ सदस्य ने जिस तरह कहा सुनकर अफसोस हुआ। अखबार में यह बात निकली थी कि मंत्रि मंडल का बढ़ाव जब किया जायगा तब परफार्मेंस देख कर किया जायगा । मैं यह समझ रहा हूं ।

श्री रामायण राय––

मेरी परफार्मेन्स इस सदन ने 25 वर्ष तक देखी है। आप पहली बार देख रहे है ।

श्री राम सेवक यादव––

जब कोई नतीजा नहीं निकला तब शान्त रहिये ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री लक्ष्मण सिंह—

मैं आपके नाम से नहीं कह रहा हूं । परफार्मेंस का डबल एजेड वीपन है, दधारी तलवार है । कुछ लोग माननीय मख्य मंत्री की तारीफ करके बजट को बडा संतलित बजट साबित कर यह साबित करने की कोशिश कर रहे है सबसे परिश्रमी, सबसे काबिल सदस्य वही है । उनको मिनिस्ट्री मिलनी चाहिये । मैं भी उनकी सिफारिश करता हूं। ऐसे लोगों को मिनिस्ट्री मिलनी चाहिये। लेकिन इसके साथ जो दूसरी बात की जा रही है कि चौधरी चरण सिंह को भी घसीटा जाय वह निगेटिव तरीका है । उसकी जरूरत नही है । इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कहूंगा । मैं नुक्ताचीनी भी नहीं करना चाहता । देश में शार्टेज है, बिजली नहीं है, पानी नहीं है, सीमेंट नहीं ।

वित्त मंत्री की बडी कठिनाई है । शिक्षा के लिये भी पैसा नहीं है । इन हालतों में बडा अच्छा बजट बनाया, बडी कोशिश की । पुराने आंकडे नहीं दिये, नये सिरे से कह दिया दो यनिवर्सिटीज बना रहे हैं, पहाड में, यहां एक नहर निकाल रहे हैं । मझे शिकायत केवल यह है, वह जरा इस बात पर गौर करें । परफार्मेंस काम्पेटीशन में तरह से संतुलित बजट कहा जाता है । लेकिन मेरी निगाह में संतुलित बजट नहीं है । पहाड़ का डेवलपमेंट होना चाहिये । पहाड में यूनिवर्सिटीज बननी चाहिये, आबपाशी के जरिये बनने चाहिये । जरूरी बात है । मैं विरोध करना नहीं चाहता, बल्कि मैं चाहता हूं कि बहावा मिल जाय । और पूर्वी इलाकों में जैसा कि माननीय सदस्य को शिकायत है कि 10 रुपये प्रति क्विंटल गन्ने के दाम मिले थे जब कि 15 रुपये मिलने चाहिये थे । पता नहीं क्या बात थी ? यह बहुत पुरानी बात हो गई है । लेकिन 15 रुपये ही मिलने चाहिये थे । मगर एक शिकायत मेरी है कि यह संतुलित बजट इसलिये नहीं है कि पश्चिमी जिलों का जिक्र नहीं किया गया है उनके लिये यह मान लिया गया है कि वहां के लोग पैदावार करते हैं वही लखनऊ के कार्यालय चलाते रहे । यदि हम हाईकोर्ट की बेंच की बात कहते है और दलील देते हैं कि इलाहाबाद और लखनऊ में केवल 100 मील का फासला है । जब कि गाजियाबाद और इलाहाबाद में 400 मील का है । फिर मेरठ में क्या किसी अन्य पश्चिमी जिले में हाई कोर्ट की बेंच क्यों नही बनाई जाती लेकिन इस प्रश्न को छोड़ दिया है । इससे न्याय में खर्चा कम होगा और आमदनी ज्यादा होगी ।

दूसरी बात यह है कि मैं मुजफ्फरनगर का सदस्य हूं। केवल दो योजनायें इस बजट में मजफ्फरनगर के लिये रखी गई है। एक तो जेल की चार दीवारी बनाना और दूसरे ए0 आर0 टी0ओ0 का कार्यालय स्थापित किया जाना । जेल की चार दिवारी काफी ऊंची है । उस पर पैसा खर्च करना बेकार है । उससे कोई आदमी भाग नहीं सकता है । इन दोनों कार्यो से जिले का कोई डेवलपमेंट नही होगा । मैंने आपके द्वारा यह कहने की कोशिश की है कि पश्चिमी जिलों को निगलेक्ट किया जाता है । बजट ने हाई कोर्ट की बेंच पश्चिम में स्थापित करने का जिक्र न होना और जेल की चार दीवार बनाना जब कि उसकी जरूरत नहीं है, यह साबित है कि यह संतुलित बजट नहीं है । यह केवल शब्दों और लफ्फाजी की बात है ।

इसके अलावा पश्चिम में सिंचाई नहीं बढ़ी है और आमदनी बढ गई है और वर्मा जी सिंचाई मंत्री रह चके हैं । उन्हें मालूम है कि इसमे केवल एक आबपाशी होती है । बाकी टयूबवेल मे कर लेते हैं । लेकिन सारी सिंचाई काश्तकार से ली जा रही है । इस प्रकार से यह संतुलित बजट नहीं है और ऐसे बजट से सूबे का कोई हित नहीं हो सकेगा । कहा जाता है कि सुझाव नहीं दिये जाते हैं, नुक्ताचीनी की जाती है । मेरे ख्याल में सुझाव देना ऐसा है जैसे भैंस के आगे बीन बजाना क्योंकि उनको मानना तो है नहीं । इन शब्दों के साथ मैं इसका विरोध करता हूं । और यह बजट संतुलित नहीं है, निष्पक्ष नहीं है, केवल खानापूरी है । इससे सूबे का कोई लाभ नहीं होगा ।

श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव (जिला लखनऊ)--

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे अपने विचार रखने का अवसर दिया । मैंने वित्त मंत्री के भाषण को गौर से सुना और माननीय नेता विरोधी दल के भाषण को भी बड़े गौर से सुना । नेता विरोधी दल ने दो नीति के प्रश्न सदन के सामने पेश किये । पहली बात जो उन्होंने कही वह यह कि एग्रीकल्चर के ऊपर प्रायरिटी नहीं दी गई और इन्डस्ट्री के ऊपर हीं प्रायरिटी देकर देश का नुकसान किया गया । मैं बहुत अदब के साथ कहना चाहता हूं कि अगर इंडस्ट्रीज के ऊपर प्रायरिटी न दी गई होती, सार्वजनिक क्षेत्र के अन्दर दुर्गापुर, भिलाई या इंडियन आयल कम्पनी के कारखाने न बनाये गये होते तो आप कल्पना नहीं कर सकते हैं कि जो युद्ध पाकिस्तान के साथ हमें झेलना पड़ा उस युद्ध में हमारी क्या दशा होती । दूसरी बात तो मैं कहना चाहता हूं कि अगर आप यू0पी0 स्टेट के बजट को देखें, केंद्रीय सरकार के बजट को छोड़ दिया जाय, बजट में इंडस्ट्रीज को प्रायरिटी नहीं दी गई है । मेरी तो सरकार से यही शिकायत है कि यह सूबा इसलिये पिछड़ा हुआ है क्योंकि इस सूबे का उद्योगीकरण नहीं किया गया है ।

इसके पीछे एक साफ चीज है कि हमारे नेता विरोधी दल ने 22 साल यहां पर शासन किये हैं और उनकी यह नीति रही है कि इंडस्ट्रीज को इस प्रदेश की इंडस्ट्रीलाइज न किया जाय और उसी का नतीजा यह है कि आज यह सूबा पिछड़ा हुआ है । आज जरूरत इस बात की है कि प्रदेश को बढ़ाने के लिये यहां पर इंडस्ट्रीज लगाई जायं । आज जरूरत इस बात की है कि सूबे का उद्योगीकरण किया जाय । दूसरी बात जो एग्रिकल्चरल प्रोडक्शन को तरक्की देने की है, एग्रिकल्चर प्रोडक्शन का सवाल जुड़ा हुआ है । भूमि सुधार के साथ आज पूरे 25 वर्षों के अन्दर भूमि सुधार के सवाल को चौधरी साहब के शासन के जमाने में रोका गया है, उसमें कठिनाइयां उत्पन्न की गई हैं । आज मैं इस बात को कहना चाहता हूं कि अगर इस प्रदेश के अन्दर खेती की पैदावार को बढ़ाना है तो भूमि सुधार के सवाल पर जो हमारी कमजोर नीति है उसे समाप्त करना होगा । भूमि सुधार को सख्ती के साथ लागू करना पड़ेगा । तभी खेतिहर प्रोडक्शन बढ़ा सकते हैं ।

एक बात निगम स्थापित करने की आई । 24 निगम के बारे में हमारे साथियों ने कुछ विरोध किया है कि कारपोरेशंस क्यों बनाये जा रहे हैं । गवर्नमेंट का उसमें नियंत्रण न होगा । मैं तो कहना यह चाहता हूं कि आज जितने कारपोरेशंस बने हुए हैं वह कारपोरेशंस आटोनामस न होने के कारण उनकी फंक्सनिंग प्रापर नहीं हो रही है । कारपोरेशन्स बनने का मतलब होता है कि इंडस्ट्रियल लाइंस के ऊपर उन कारपोरेशन्स को चलाया जाय । आज हालत क्या है ? आज जितने कारपोरेशन्स बनाये गये हैं आज उनमें सारे के सारे ब्यूरोक्रेट्स बैठा दिये गये हैं, आज उसमें नौकरशाह बठा दिये गये और नतीजा यह है कि वह ठीक तरीके से कारपोरेशन्स जो चलने चाहिये नहीं चल पाते हैं । मैं तो मा0 मुख्य मंत्री जी और वित्त मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जो कारपोरेशन्स बनाये गये हैं इन कारपोरेशन्स के अन्दर नान-आफिशियल्स रखे जायं बजाय इसके कि नौकरशाह ब्यूरोक्रेट्स के और जो कार्य प्रणाली के तरीके हैं उनमें तब्दीली लानी पड़ेगी ।

आज राज्य विद्युत परिषद् को देखें, आज जितनी गड़बड़ियां विद्युत परिषद् में हैं अन्य विभाग में नहीं हैं । उनमें यदि कोई काम होता है तो 5-6 महीने लगा देते हैं । एक फाइल अगर चलती है तो वह सेक्रेटरियट की तरह से पहले विभाग से फाइनेंस विभाग में जायगी, फिर ला डिपार्टमेंट में जायगी, फिर एकाउन्ट विभाग में जायगी । इस प्रकार से एक फाइल के डील करने में 5-6 महीने का टाइम लगा दिया जायगा । तब उसके बाद कार्यान्वित किया जायगा । मैं कहना चाहता हूं कि उसको सरल करने की जरूरत है । अगर आप चाहते हैं कि राज्यविद्युत परिषद् के कामों को कायदे से चलाया जाय तो उसका नियम सरल करना पड़ेगा, ब्युरोक्रेटाइजेशन, नौकरशाही का दूर करना पड़ेगा । एक बात मालगुजारी के संबंध में कही गयी । बात सही है कि आय बढ़ायी जाय । जरूरी नहीं है

[श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव]

कि आज छोटे किसानों से आय वसूल की जाय । आज सवा 6 एकड़ वालों को जो छूट मिली हुयी है, चौधरी साहब चाहते हैं कि उस छूट को खत्म कर दिया जाय । यह वाकया है कि चौधरी साहब इसमें दिलचस्पी रखते हैं कि किसानों से ही आय को बढ़ाना चाहिये । तो मैं सदन के जरिये मांग करना चाहता हूं कि आज जो धनी किसान हैं, या बड़े किसान हैं या जो ज्यादा पैदावार करते हैं, जो साधन सम्पन्न हैं, उनके ऊपर टैक्स का बोझ बढ़ाया जाय और जो 22 करोड़ की हानि हुयी है, इसे उन धनी किसानों से वसूल किया जाय और टैक्स लगाया जाय ताकि जो हानि हुयी है, वह पूरी हो सके ।

एक सवाल और चौधरी साहब ने उठाया और वह यह है कि कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की गयी, जिसकी वजह से चीजों के दाम बढ़े हैं । शायद चौधरी साहब का वेज फ्रीज से मतलब है । शायद चौधरी साहब का अर्थ तनख्वाहों को जमूद करने के लिए है । मैं बहुत अदब के साथ कहना चाहता हूं कि सूबे के अन्दर या देश के अन्दर उस समय तक वेज फ्रीज का सवाल न उठाया जाय जब तक कि प्राइस फ्रीज निश्चित न कर दें, प्राइसेज को बढ़ने से रोका न जाय । यह तभी सम्भव हो सकता है जब तक मोनोपोली पूंजीपतियों की, जो कीमतों को निश्चित करते हैं कमजोर न किया जाय । जब उसको तोड़ने के लिये सवाल आता है तो कौन लोग हैं व जो रास्ते में आते हैं । जब बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया जो पूंजीवाद को कमजोर करने के लिये कदम था कौन-लोग खड़े हुए, विरोध पक्ष में जो आज बैठे हुए हैं वे ही लोग उनको बचाने के लिये खड़े हुए सौ फीसदी सही है, उसमें माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी और चौधरी चरण सिंह भी थे ।

श्री राम सेवक यादव—

आप कैसे कहते हैं । माननीय राज नारायण ने तो रिकार्ड तोड़ दिया था ।

श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव—

माननीय राज नारायण को भूल जाइये । चौधरी साहब आपके नेता हैं, उनकी बात कहिये?

श्रीमन्, एक बात मैं और कहना चाहता हूं । बार-बार यह बात कही गयी है कि देश के अन्दर और सूबे के अन्दर प्रोडक्शन को बढ़ाने के लिये पैदावार को बढ़ाने के लिये उद्योगिक संघ की आवश्यकता है और उसे लाने के लिये वर्कर्स पार्टिसेशन इन मैनेजमेंट की बात वसूल के तौर पर सरकार ने तस्लीम कर ली है, लेकिन आज तक इस सवाल को मानने के बाद भी अमल में नहीं लाया गया है । मेरी प्रार्थना है कि कम से कम सार्वजनिक क्षेत्र में इसको कार्यान्वित किया जाय ।

श्रीमन्, मेरा क्षेत्र लखनऊ है । यहां पर भी आज पानी की व्यवस्था जल की व्यवस्था बहुत ही खराब है आज यहां के निवासियों को पीने के पानी के लिये मोहताज रहना पड़ता है । जहां तक सीवर सिस्टम का ताल्लुक है, नाले और सफाई का सवाल है, यह बहुत ही खराब हालत में पड़ा हुआ है । इसके लिये यहां की महापालिका में सरकार से अनुदान मांगा है, लेकिन वह उसे नहीं दिया गया । मेरी प्रार्थना है कि सरकार इनको ठीक करने के लिये महापालिका ने जो अनुदान मांगा है, वह उनको दिया जाय ।

इन्द्रपाल सिंह (जिला अलीगढ़)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत देर से मैं पुरुषों की, स्त्रियों की और मनुष्यों की चर्चा सनता आ रहा हूं । मैं अब सदन का ध्यान दरिन्दों, परिन्दों, चिड़ियों और जानवरों की ओर दिलाना चाहता हूं । मान्यवर, माननीय वन मंत्री यहां पर इस समय मौजूद हैं । मैं उनका ध्यान और सदन का ध्यान प्रदेश की वन संपदा की ओर दिलाना चाहता हूं । वनों की हालत

आज इतनी खराब होती जा रही है कि वहां पर रहने वाली चिड़ियां, जानवर, उनकी रक्षा के लिये कानून भले ही बन गये हों, लेकिन वनों से उनका खात्मा इतनी तेजी से हो रहा है कि अगर आप लखनऊ नक्खास के बाजार में देखेंगे तो पायेंगे कि बहुत से जानवरों की खालें और सैकड़ों किस्म की चिड़ियां वहां पर बिकती है ।

मान्यवर, आज हालत यह है कि यद्यपि उन स्थानों पर शिकार करने की पाबन्दी लगी हुई है लेकिन वहां शिकारी शिकार खेलने जाते हैं और जानवरों और चिड़ियों को मारते हैं। आज टाइगर्स तो ऊंगलियों पर गिने जा सकते हैं। आज वे वन जिनकी चर्चा महामना तुलसीदास जी ने की है वहां पर चिड़ियां चह चहाती हैं, साधू लोग रहा करते हैं वहां पर्यटक लोग देखने के लिये आया करते थे, देश और विदेश से देखने के लिये आ-आ कर अपने प्रदेश की आमदनी को बढ़ाया करते थे, आज वह रुक गयीं हैं । आज आप काब्रेड पार्क को जाकर देखे उसकी क्या हालत है ? आज प्रदेश में हमारी जो वन संपदा है, वह दिन प्रतिदिन घटती जा रही है । मैं अपने वन मंत्री का ध्यान विशेष रूप से इस बात की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि वहां पर जानवरों को पकड़-पकड़ कर बड़ी बेरहमी से मारा जा रहा है, आप उसको रोकने की कृपा और वनों को बढ़ाने की ओर ध्यान दें । यह आपने देखा होगा कि पिछले दिनों अखबारों में, "पायोनियर" में और न मालूम किन- किन अखबारों में इस बात का प्रचार किया गया कि जंगली जानवरों की रक्षा कीजिए । चाहे जितने हजार रुपया आप इस तरीके से प्रचार में खर्च कर दें, इससे कुछ होने वाला नहीं ।

मैं वन मंत्री महोदय की राय दूंगा कि इन जंगली जानवरों के उपर चिड़ियों के ऊपर अपने ही प्रदेश में फिल्मों का निर्माण करें । देहातों में, शहर में, मदरसों में इन फिल्मों को दिखायें और लोगों के दिलों में जानवरों और चिड़ियों के प्रति प्रेम पैदा करें ताकि वे लोग यह अनुभव करें कि ये भी संसार में आये हैं और आकर हमारी शोभा को बढ़ाते हैं । हम उन्हें देख सकें और उनका आनन्द भी ले सकें । आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि कैनेडा, रूस और न मालूम कहां-कहां से फिल्में मंगा करके हमारी देश की सरकार टेलीविजंस में दिखाया करती है, लेकिन क्या ऐसी फिल्में अपने यहां निर्माण करके विदेशों में भेज कर यहां पर्यटक आकर्षित नहीं किये जा सकते जिससे विदेशों से मुद्रा प्राप्त हो सके । अभी महीने दो महीने पहले की बात है कि कैनेडा और अमेरिका से अपने प्रदेश में फिल्में उतारने के लिए लोग आये थे और अपने काबेंट पार्क में जाकर के उन्होंने जंगली जानवरों और चिड़ियों की फिल्में उतारी थीं । क्या हमारी सरकार, प्रदेश की, ऐसी फिल्में स्वयं बनाकर विदेशों में भेज कर मुद्रा नहीं कमा सकती है ? वे लोग यहां से ले जायंगे और हजारों डालर कमायेंगे ।

इसके बाद में एक अन्य सुझाव आपके माध्यम से देना चाहता हूं । हमारे प्रदेश में सी0पी0एम0टी0 जो मेडिकल कालेजों में भरती करने के लिए लड़के और लड़कियों के इम्तहान लेते हैं उसके पश्चात् जब उनके यहां भरती किया जाता है तो डोमिसाइल सार्टि-फिकेट दिखाना पड़ता है कि हम उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं । होता क्या है कि हमारे प्रदेश का अंग्रेजी शिक्षा का स्तर इतना गिर चुका है कि दूसरे प्रदेशों के मुकाबले में, महाराष्ट्र और देहली के मुकाबले में हमारे यहां के बच्चे अंग्रेजी में उनके सामने ठीक से कम्पीट नहीं कर पाते हैं और नतीजा यह होता है कि दूसरे प्रदेशों के लड़के हमारे यहां आकर सैकड़ों की तादाद में भरती हो जाते हैं और डोमिसाइल सार्टिफिकेट कहीं न कहीं से प्राप्त कर लिया करते हैं ।

मध्य प्रदेश में वहां मुख्य मंत्री ने यह प्रतिबन्ध लगा दिया है कि जो मेडिकल कालेज में भरती होना चाहते हैं वह कम से कम 3 वर्ष मध्यप्रदेश में रहा हो । यदि आप चाहते हैं कि अपने लड़के लड़कियों की हकतलफी रुके तो आप अपने यहां भी ऐसा कोई प्रतिबन्ध लगा दें वरना झूठे डौमिसाइल सार्टिफिकेट लेकर के दूसरे सूबों के लड़के और लड़कियां, जो मेडिकल कालेजों में भरती होना चाहते हैं उनकी हकतलफी करते रहेंगे ।

[श्री इन्द्र पाल सिंह]

दूसरी बात मान्यवर, अपनी सरकार से आपके माध्यम से कहना चाहता हूं, वह यह है कि लखनऊ से अगर आप दिल्ली की ओर ट्रक में माल लेकर चलें तो देखेंगे कि यहां से दिल्ली तक कम से कम 10-12 जगह आपको ट्रफिक का सिपाही रोक कर दो रुपये से लेकर 10 रुपये और कभी-कभी उससे भी अधिक अपनी फीस जरूर तलब करेगा आपसे । इसका नतीजा यह होता है कि चौराहों पर जो ट्रक खड़े होते हैं उनके लाखों घंटे बरबाद होते हैं । मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री ने आदेश कर दिया कि ट्रैफिक पुलिस के लोग ट्रकों से ले जाये जाने वाले माल भरे ट्रक को नहीं रोकें । अगर कुछ करना हो तो केवल आर0 टी0 ओ0 जो खास तौर से परिवहन के लिये महकमा बना हुआ है, वह ही उसकी चेकिंग करेंगे । मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि इन ट्रक वालों के जो लाखों घंटे बेकार जाते हैं और पुलिस वाले उनसे पैसा लेकर सरकार को बदनाम करते हैं इसको बन्द किया जाय तो अच्छा होगा । मध्य प्रदेश में अभी हाल ही में वहां के मुख्य मंत्री ने आदेश किये हैं । आप भी यह कार्य पुलिस से छीन कर अपने यहां के आर0टी0 ओ0 के हवाले कर दें भले ही उसमें आपको कुछ और भी आदमी बढ़ाने पड़ें ।

एक और बात की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । अगर यहां से आप दिल्ली जायं, चाहे सरकारी बस में ही जायं तो कम से कम 8-10 जगह ऐसे बोर्ड लगे मिलेंगे कि अमुक नगरपालिका या अमुक टाउन एरिया आपका स्वागत करता है । और वह स्वागत क्या करता है कि सरकारी बस को रोक कर 2, 3, 4 रुपये न मालूम किस-किस नाम से वसूल किया करते हैं । नतीजा यह होता है कि वह बस खड़ी रहती है और यात्री गरमी में परेशान हुआ करते हैं । कंडक्टर जाता है और वहां के टैक्स का पेमेंट करता है । एटा नगर के तो बीच से जी0टी0रोड जाती है लेकिन कहीं-कहीं अगर टाउन एरिया बाजू में भी है तो भी एक बल्ली लगा कर हमारा स्वागत करने के लिये खड़े रहते हैं । नतीजा यह होता है कि इंजन घर्र-घर्र करता हुआ चलता रहता है, कीमती डीजल फुंकता रहता है और वह समय बरबाद होता है जो यात्रियों को पहुंचाने में खर्च होना चाहिये । अगर उन टाउन एरियाज और म्युनिसिपैलिटीज की आमदनी बढ़ाने की बात है तो आप टिकट में ही कुछ पैसे बढ़ा कर उनको दे दिया करें लेकिन जगह-जगह बसों को रोक कर जो समय की बरबादी की जाती है उसको रोकें ।

मैं अलीगढ़ नगर से आता हूं । जैसा कि मुझे वहां के लोगों से पता चला सरकारी राशन की दुकानें उन्हीं लोगों को दी जायेंगी, जो उत्तर प्रदेश के किसी कोने में क्यों न हो, जो स्वयं दुकानों पर बैठते हों और बिक्री करते हों । लेकिन मेरे नगर की व्यवस्था अजीब है । वहां हर दुकान पर जाकर आप मालूम कीजिये तो आपको यह मालूम होगा कि किसी न किसी नेता के नाम पर वह दुकान है और उसने दो, तीन सौ रुपये पगड़ी पर दुकान किसी अन्य आदमी का उठा रखी है । जो आदमी दो-तीन सौ रुपये पगड़ी देकर उस दुकान को लेता है वह पहले उस रुपये को निकालता है फिर अपना प्राफिट निकालता है । इसका नतीजा यह है कि वह ब्लैक करता है और जनता को परेशान करता है और, जब कभी ब्लैक करते हुए वह पकड़ा जाता है तो वही नेता उसको छुड़ाता है । अगर शासन के यह आदेश हैं कि वही आदमी राशन की दकान ले जो दुकान पर स्वयं बैठे तो इसकी जांच की जानी चाहिये यह मेरा आपसे निवेदन है ।

इसके अतिरिक्त अलीगढ़ में 1971 में एक भीषण दंगा हुआ था जिसकी जांच हाई कोर्ट के जज से करायी गयी थी । दो साल पहले हाई कोर्ट के जज ने अपनी रिपोर्ट दे दी है लेकिन यह सरकार उसको अपने दफ्तर में सड़ा रही है । मैं मांग करता हूं कि सरकार उस रिपोर्ट को तुरन्त सदन के पटल पर रखे।

एक बात मैं और कहूंगा । चुनाव के समय हमारे वित्त मंत्री मेरे अलीगढ़ जिले के हाथरस नगर में पधारे थे और उन्होंने कहा था कि वहां खाद का कारखाना खोला जायगा । शायद वह चुनाव का वायदा था । वह अपने वायदे को न भूलें । और खाद का कारखाना हाथरस में लगाने के लिये तुरन्त कार्यवाई करें ।

अलीगढ़ में एक इंटर कालेज है जिसको वहां के निवासी नौरंग राय ने एक लाख रुपया दिया था ।

मान्यवर, यह एक लाख रुपया देने की मंशा यह थी कि इससे वहां के विद्यार्थियों क । और पाठशाला को लाभ होगा, मगर यह रकम स्टेट बैंक में मिसलेनियस एकाउन्ट्स में जमा है । अगर इसे सेविंग बैंक एकाउन्ट्स में जमा किया गया होता तो इससे 8-10 हजार रुपये साल की ब्याज की आमदनी हो सकती थी । मैं चाहता हूं कि इस रकम को सेविंग एकाउन्ट्स में जमा करा दिया जाय । जिसे कालेज के विकास में खर्च किया जाय।

श्री धीरेंद्र सहाय--

(अगला नाम पुकारे जाने पर) जो लोग सुझाव देते हैं उनके लिये समय देना जरूरी है या जो बजट की तारीफ करते हैं.... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

जो ज्यादा इस तरह से बोलेगा उसको समय नहीं मिलेगा माननीय चौधरी साहब ने खुद यह कहा था कि जो बहुत ज्यादा दखल दे उसको बाद में समय दिया जाय । जो शांति के साथ खड़े होंगे उनको पहले समय दिया जायेगा ।

श्री राम सेवक यादव--

श्रीमन्, अगर एक घंटा समय और बढ़ा दिया जाय तो नये माननीय सदस्यों को समय मिल जायेगा।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)--

यह ठीक है, एक घंटा समय श्रीमन्, बढ़ा दे ।

श्री त्रिवेणी--

मान्यवर, माननीय वित्त मंत्री जी ने जो सन् 1974-75 का बजट पेश किया है वह प्रगतिशील है और गरीबों के हित का है.... (व्यवधान)

एक सदस्य--

गरीबों की कमर तोड़ने वाला है ।

श्री त्रिवेणी--

इसके पहले चौधरी साहब की सरकार भी रही है, और भी लोग मुख्य मंत्री रहे हैं, मगर कभी इसके पहले इतना अच्छा बजट पेश नहीं हुआ । गरीबों के लिये, रिक्शा चलाने वालों के लिये, गरीब भूमिहीनों के लिये, हरिजनों के लिए, जो प्राविधान इस बजट में किया गया है वह सराहनीय है । विरोध पक्ष के माननीय सदस्य एक तरफ तो कहते है कि गरीबों की सहायता कीजिये, विकास कीजिये, प्लानिंग बनाइये, प्रदेश का पिछड़ापन दूर कीजिये, दूसरी तरफ वे टैक्सों का विरोध करते हैं । अगर विरोध पक्ष की ही सरकार बन जाये तो वे बिना आमदनी बढ़ाये यह सब काम कैसे करेंगे । इसके लिये कोई रास्ता वे बताते तो समझ में आता (लखनऊ) जो भी माननीय सदस्य ध्यान से इस बजट की एक एक लाइन को पढ़ेगा, वह कभी इसका विरोध नहीं करेगा । आज प्रदेश में पिछड़ापन है, मैं यह मानता हूं ।

[श्री त्रिवेणी]

जितनी तरक्की होना चाहिये वह नहीं हुई है यह भी मानता हूं । अन्य सूबों के मुकाबले यह प्रदेश पिछड़ा हुआ है, यह भी मानता हूं । आपके माध्यम से मान्यवर, म अपने साथियों से पूछना चाहता हूं कि आज 25 साल–26 साल से प्रजातांत्रिक सरकार चल रही है। और क्या यह बतायें गे कि हमारे माननीय चौधरी साहब हमारे बुजुर्ग ह । [बड़ा आदर करता हूं,बड़ी रिसपेक्ट करता है । मैं चौधरी साहब के माध्यम से पूछना चाहता हूं कि वह इस सरकार में अनेकों पदों पर रहे हैं। माल मंत्री रहे हैं, कृषि मंत्री रहे हैं, परिवहन मंत्री और मुख्य मंत्री भी रहे हैं। मान्यवर, 20–22 वर्षों में माननीय चौधरी साहब सरकार में रहे। चौधरी साहब हमारे वरिष्ठों में से थे आज भी मैं उनका बड़ा आदर करता हूं इस हैसियत से कि इस प्रदेश का कल्याण किया है। और लोग कहें तो कोई और बात है पर मैं यह मानने के लिये तैयार नही हूं कि माननीय चौधरी साहब अपने मुंह से यह कहते हैं कि यह बजट खराब है यह बजट गरीबों का न उत्थान करने वाला, कल्याण करने वाला नहीं है । तो म यह कहना चाहता हूं कि चौधरी साहब भ्रम में है और उधर के बैठने वाले भ्रम में है।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)––

मैंने यह लफ्ज नहीं कहे कि बजट गरीबों का कल्याण नहीं करेगा। मैंने कहा कि पिछले साल जितने इलेक्शन्स जिन कार्यों के लिये थे, इस साल रेवेन्यू एक्सपेंडीचर कम है । उनको ज्यादा होना चाहिये ।

श्री त्रिवेणी––

श्रीमन् अगर चौधरी साहब यह कह रहे हैं तो मैं चौधरी साहब को आपके माध्यम से धन्यवाद देता हूं और मुझे बड़ी खुशी है कि उन्होंने यह कहा। मान्यवर मैं आपके माध्यम से अपने साथियों से कहना चाहता हूं जो अपने को समाजवादी कहते हैं, जो अपने को प्रगति शील कहते हैं वह यह कहें कि हमारे प्रदेश में पिछड़ा पन है और इस प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा कार्य होने चाहिये। चाहे वह नहर का कार्य हो, चाहे बिजली का कार्य हो, चाहे सड़क का कार्य हो और चाहे स्वास्थ्य का कार्य हो तो मैं कहना चाहता हूं मैं उसकी राय का कायल हूं और साथ ही जो यह बजट है इसकी आमदनी को देखते हुये यह एक बेहतरीन बजट है। अगर कोई यह कहे कि मैं इससे बेहतरीन बजट बना सकता हूं तो वह बना दे ।

अध्यक्ष महोदय, में आपके माध्यम से कहना चाहता हूं, कि जों हमारे पूर्वी जिले हूं वह बहुत गरीब हैं इसको आप भी जानते हैं और सारा सदन जानता है। जो इधर बैठे हैं वह भी जानते हैं जो उधर बैठे हैं वह भी जानते हैं कि पूर्वी उत्तर प्रदेश का जितना विकास होना चाहिये मान्यवर, अभी तक नही हो पाया है। उसका कारण हमारी प्रकृति है, वह साथ नहीं देती । कभी सूखा है तो कभी बाढ़ से पूर्वी उत्तर प्रदेश तबाह रहा है परेशान रहा है। हिन्दुस्तान में जो 22 जिले गरीब माने गये हैं उसमें से पूर्वी उत्तर प्रदेश के अधिकतर जिले हैं ।

एक बात पर जो चर्चा आयी, रिहंद डैम की श्रीमन्। रिहंद डैम के बारे मे यह कहना चाहता हूं कि नहर से नदीं जोड़ने की जो योजना चल रही थी। तो मैं आपके माध्यम से वित्त मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जहां 70–80 करोड़ रुपये इस योजना पर लगा रहे तो 5–7 करोड़ रुपये में नहर योजना जोड़ दीजिये। यह बहत आवश्यक है। अभी हमारे भाई प्रभु नारायण ने बताया कि मुगल के सराय (मुगल सराय) में जहां एक बड़ा जंक्शन है वहां एक थर्मल प्लांट की योजना स्वीकृत हुई है ।

श्री बांक लाल––

आप बुद्धि विहीन और सरस्वती विहीन लगते हैं। मुगलसराय को मुगल का सराय कह रहे हैं ।

श्री त्रिवेणी--

आप बैठ जाइये ।

श्री बांकेलाल--

सारे का सारा काम बाढ़ क्षेत्र में हो रहा है । वहां बाढ़ नहीं है । और श्रीमन् यह "मुंगल के सराय" कह रहे हैं, इनको मालूम ही नहीं है कि वह मुगल सराय है मुगल का सराय नहीं है । इसीलिये मैं इनको बुद्धि विहीन और सरस्वती विहीन कह रहा हूं ।

त्रिवेणी--

मैं अपने साथी को यह बताना चाहता हूं कि जो वर्णन मैं पूरब का कर रहा हूं .....

श्री अध्यक्ष--

माननीय बांके लाल जी जो शब्द प्रयोग में ला रहे हैं वे उन शब्दों को नही कह सकते ।

श्री त्रिवेणी--

मान्यवर, ये शब्द माननीय बांके लाल जी के मुंह में ही शोभा देते हैं क्योंकि मान्यवर, जो जिस वातावरण में होता है रहता है वह दूसरो को भी उसी प्रकार देखता है । इसके अतिरिक्त उनके बारे में और ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं ।

श्रीमन्, मेरे यहां जो दोहरीघाट का इलाका है और जहां सूर्य (घाघरा) नदी का अपार जल भंडार है, वह बहत बड़ा जलाशय है वहां एक ऐसी पंपिंग कैनाल चलाई जा रही है और उसमें पानी की कमी कभी नही हुई और वहां चाहे थर्मल प्लांट लगाकर या जल विद्युत द्वारा उसको चलावें तो आजमगढ़ बलिया, देवरिया, गोरखपुर और बस्ती इन 5 जिलो का कल्याण हो सके । मैं अपने साथी बांके लाल जी से कहूंगा कि आइये हम सब मिल कर सरकार पर जोर डाले जिसस हमारे पूर्वी जिलों का कल्याण हो सके ।

तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार ने हमारे पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिये एक पटेल कमीशन नियुक्त किया था और उसकी रिपोर्ट सरकार के सामने है । उसके माध्यम से कुछ कार्य भी शुरू हुआ पूर्वी इलाको में किन्तु उसमे सड़कों के निर्माण के लिये सिंचाई के लिये ट्यूबबेल्स वगैरह बानने के लिये, नहरों के लिये बड़े-बड़े उद्योगों के लिये उसमें खास तरीके से छूट थी, उसके अनुसार अगर कुछ थोड़ा सा काम हो जाय तो पूरब का कल्याण होगा । इन शब्दों के साथ मैं आपके माध्यम से माननीय चौधरी साहब जो हमारे बुजुर्ग हैं से निवेदन करुंगा कि वे हमारे पूर्वी जिलों के हमेशा से हिमायती रहे हैं और वे इस बजट में भी हमारे लिये हिमायत करेंगे इसके लिये चौधरी साहब का सदा आभारी रहूंगा ।

चौधरी चरण सिंह--

मान्यवर मैं अपने दोस्त को मशविरा दूंगा कि आप जिन उद्योगों को लगाना चाहते हैं उसके लिये बिहार ने सबसे ज्यादा प्रयास किया लेकिन आज वह देश में सबसे पीछे है । इसलिये अपने पूर्वी जिलों में हैवी इंडस्ट्रीज को छोड़ दो, और स्माल स्केल इंडस्ट्रीज, लघु उद्योगों को लगाने की कोशिश करो ।

श्री त्रिवेणी--

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से माननीय चौधरीसाहब से जानना चाहता हूं कि चीनी उद्योग क्या बड़ा उद्योग है ? पूरब में चीनी का उद्योग मुख्य है और बहुत से जिले ऐसे हैं जहां गन्ना आदि सूखा पड़ा दिखाई दे रहा है तो मैं बड़े उद्योग के माने हम लोग यही समझते हैं कि हम लोगों को चीनी की मिलें मिल जावें, ऐग्रीकल्चरल इम्प्लीमेंट्स का कारखाना मिल जावे जिससे हम खेती के कामों में किसानों को ज्यादा से ज्यादा फायदा पहुंचा सकें यही मेरे कहने का मतलब है ।

श्री अध्यक्ष---

अभी तक जिन दलों ने इस सदन में इस वहस में भाग लिया है उनमें सबसे कम संख्या बी0के0डी0 की है। कम्युनिस्ट मार्कसिस्ट के एक बोल चुके है, सोशलिस्ट पार्टी के ो बोल चुके हैं, संगठन कांग्रेस के दो बोल चुके हैं, उनको एक और मिलना चाहिये, और तीन बी0के0डी0 को मिलना चाहिये।

श्री धीरेन्द्र सहाय---

तो श्रीमन् हमको मौका दीजिये।

श्री अध्यक्ष---

क्यों आप जल्दी कर रहे हैं, मैं तो आपके फायदे की ही वात कर रहा हूं। 3 मिलना चाहिये भार ीय क्रांति दल को, 1 मिलना चाहि जनसंघ को। नहीं तो समय बढ़ाना पड़ेगा। या जैसा आप लोग तय करें। यदि 5-5 मिनट लें तो सब को बोलने का समय मिल जायेगा।

श्री धीरेन्द्र सहाय---

अध्यक्ष महोदय यह जो पिछले कई दिनों से बजट पर वहस चल रही है, मैं ऐसा महसूस कर रहा हूं कि इसमें चौधरी साइब में क्या कमी है और दूसरे पक्ष मे क्या कमी है इस पर बसह हो रही है। बजट कैसा है स पर कम बहस हो रही है। बजट की जो मूल बातें उसमें कही गई है कहांतक उनकी पूर्ति हो रही है इस पर कोई बहस नहीं हो रही है। खासतौर से कांग्रेस के पक्ष के लोग बराबर चौधरी साहब की आलोचना कर रहे हैं बाबत इसके कि वे इसको जस्टीफाई करें कि उनका जो बजट है वह समाजवादी है या नहीं। हमारा ख्याल है कि यह बजट न तो समाजवादी है और न ही वेलफेयर बजट कहलाया जा सकता है। मैंने जहांतक समझा है यह बजट अगर कुर्सी बजट के नाम से कहा जाय तो ज्यादा अच्छा हो।

मैंने सकी जो स्प्रिट देखी है उसमें ऐसा मालूम पड़ता है कि सरकार किसी तरीके से कुर्सी पर बनी रहे। उसके लि क्या क्या उपाय करें उसी भूमिका को निभाया गया है। मैं इस बात को सिद्ध करनें के लिये अब इस बजट की कुछ बातें आपके समक्ष रखूंगा। वैसे तो इस कांग्रेस सरकर का हमेशा से ध्येय रहा है कि जो जागरूक वर्ग है उसको हाथ में लिया जाय। और जो दरिद्र लोग है, समाज में जो दबे हैं, पिछड़े हैं उनकी कभी भी परवाह नहीं की। उनकी हमेशा अवहेलना की जाती रही। इह बजट को भी मैं वैसा ही महसूस कर रहा हूं। इसमें विशेषाधिकार मुसलमानों के लिये, हरिजनों के लिये, पर्वतीय लोगों के लिये तथा यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के लिये कुछ विशेष बातें कही गई है। लेकिन जहांतक मैं समझता कि उनको भी कोई खास फायदा इस बजट में नहीं दिया गया है। जो कुछ फायदा है वह उन सम्प्रदाय के थो लोगों के लिये उनको दिया गया है लेकिन आम जनता के लिये कोई खास फायदा नहीं है।

जहां तक उर्दू का मामला है, उस सम्बन्ध में यह कहा गया है कि आठवें दर्जे तक की शिक्षा के लिये आप उर्दू की किताबों के लिये व्यवस्था कर रहे है तथा मास्टरों का भी प्राविधान किया गया है। लेकिन इन छोटी बातों से आप मुस्लिम समुदाय जो कि अल्पसंख्यक समुदाय है, उसको खुश करके आपको जो वोट खींचने की राजनीति रही है उसमें आपको कोई खास फायदा होने वाला नहीं है। उर्दू को जहां तक दूसरी लैंग्वेज बनाने की बात है, उस बारे में कुछ नहीं कहा गया है। उर्दू को दूसरी लैंग्वेज बनाने के विषय में हमारे जनसंघ भाई भी कुछ कुछ करीब आ रहे है। एक हमारे जनसंघी साथी ने यहां तक कह दिया कि अगर उसकी स्क्रिप्ट देवनागरी रख दी जाय तो उसको खास आपत्ति नहीं होगी दूसरी लैंग्वेज मानने में। लेकिन इस विषय में भी कोई रोशनी नहीं डाली गई और मैं वह देख रहा हूं कि मुसलमानों के साथ अन्याय हो रहा है।

आपकी यह हमेशा की नीति रही है कि कुछ चन्द मुसलमानों या हरिजनों की थोड़ा फायदा पहुंचा करके पूरे समुदाय को बहका कर अपनी गोद में लेते रहे हैं। जहां तक मुसलमानों के अपने हक के बारे में है तो मुसलिम समुदाय को कोई विशेष फायदा नहीं दे सके है। मैं छोटी ही बात कहकर इसका जिक्र करना चाहता हूं। फ्राइडे की छुट्टी हुआ करती थी सारे उत्तर प्रदेश में और यह बराबर होती चली आ रही थी लेकिन हमारी कांग्रेस सरकार ने देखते देखते उस शुक्रवार की छुट्टी खत्म कर दिया। एक तरफ तो आप अल्पसंख्यकों के रक्षक कहे जाते हैं। अपने आपको हमदद कहते है लेकिन दूसरी तरफ उनके हकों की समाप्त कर रहे हैं। 2 साल पहले हमारे यहां पीलीभीत में शुक्रवार को छुट्टी होती थी वह भी समाप्त कर दी गई। यह रवैया आपका मुलमानों के प्रति रहा है फिर भी आप उनको खश करने के लिये अपने आपको उनका हमदर्द कहते हैं।

जहां तक हरिजनों की बात है, कुछ हरिजनों को मकान बनवाकर, कुएं बनवाकर खुश करने की बात इस बजट में कही गई है, उस सम्बन्ध में वही बात मैं कहूंगा जो शुरू में मैंने कही थी कि जो जागरूक वर्ग है चाहे वह हरिजन हो, मुसलमान हो, या पहाड़ी हो, उन्हीं को फायदा पहुंचा कर सारे समुदाय को खुश करने की मंशा है। लेकिन उनके उत्थान के लिये कोई मौलिक नीति बनाने की बात इसमें नहीं कही गई है। जैसा मैंने कहा जो जागरूक है वही लोग फायदा पाते हैं चाहे वह मकान का सम्बन्ध हो चाहे और कुछ। जो लोग झोपड़ी में रह रहे हैं और जिनकी दिवारे तक गिरी पड़ी है वह वही रहेगे लेकिन जिनके पास अच्छे मकान है वही केवल मकान पाते हैं। इसी वजह से कुंआ बनाने की बात है, इसी तरह से अनुदान पाने की बात है जो अपोरचुनिस्ट क्लास है उन्हीं को सारा फायदा पहुंचेगा और सारा समुदाय वंचित रहेगा उस लाभ से। आपने इसमें अस्पृश्यता के बारे में भी लिखा है लेकिन हो कुछ नहीं रहा है। जहां तक मैं समझता हूं कांग्रेस की बराबर नीति रही है कि हरिजन वर्ग को अलहदा रखा जाय और उसको अपने हित के लिए इस्तेमाल किया जाय। मैं एक सुझाव देना चाहता हूं कि अगर आपको नीयत साफ है तो कम से कम जितनी पालिटिकल पार्टीज हैं उनके एक्टिव मेम्बर्स को मजबूर करें कि सोशल फंक्शस में कम से कम हरिजन को इन्वाइंट करें। सिर्फ यह नहीं कि गांधी जयन्ती के अवसर पर थोड़ा सा नाटक कर दिया है। विधायक व मंत्री लोगों को चाहिए कि अपने यहां सोशल फंक्शन्स में संगी से परसवायें। तब तो कुछ अस्पृश्यता निवारण का काम हो सकेगा।

*श्री राजपाल (जिला मेरठ)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बजट पर अपने विचार व्यक्त करने का मौका दिया। बजट पर अपने विचार व्यक्त करने से पहले हम में से हरेक को यह देखना चाहिये कि और प्रदेश की क्या सिचुएशन चल रही है। मिसाल के तौर पर जैसा कि मौजूद है कई साल से हमारे देश में वर्षा नहीं हुई जिसका असर केवल अनाज पर ही नहीं पड़ा बल्कि जो जल के भंडार है उन पर भी पड़ा जहां से बिजली बनती है। नतीजा यह हुआ कि बिजली का उत्पादन गिर गया और इससे इंडस्ट्री और एग्रीकल्चर दोनों में कमी आयी। बदकिस्मती से सूखाग्रस्त प्रदेशों में हमारा प्रदेश भी है। दूसरी बात यह कि 1971 में हमारे देश को पाकिस्तान से युद्ध लड़ना पड़ा और इसके कारण बंगला देश से आये हुए शरणार्थियों की समस्या को सुलझाना पड़ा। उसमें काफी रुपया खर्च हुआ और उससे यहां की इकानोमी पर असर पड़ा। एक कहावत है कि मिस फरचून नेवर कम्स एलौन। इस वर्ष पाले की वजह से रबी की फसल में काफी कमी आयी। इन सब बातों को ध्यान में रख कर वित्त मंत्री ने जो बजट पेश किया है वह बहुत ही संतुलित है।

इस बजट में बहुत सी नई बातें की गयी हैं जो पहले कभी नहीं की गयी थीं मिसाल के तौर पर स्वतंत्रता सेनानी और श्रमजीवी पत्रकारों को सुविधा देने की बात है। राज्य में सभी मेडिकल

---

* वक्ता ने भषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राजपाल सिंह]

कालेजों में अनुसूचित जातियां के लिए 10 प्रतिशत सीट सुरक्षित होंगी । 32 एलोपैथिक, 51 आयर्वेदिक व यूनानी चिकित्सालय व 36 होम्योपथिक चिकित्सालय खोलने का प्रस्ताव रखा है । ग्रामीण क्षेत्रों की तरफ कभी किसी ने खयाल नहीं किया था । हमारे वित्त मंत्री जी ने 1 करोड़ 40 लाख रुपया का प्राविधान दवाओं के लिये किया है । सड़क और पुल भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं जिनकी तरफ बजट में पूरा ध्यान दिया गया है । किसी देश की उन्नति में बंकिंग सुविधाएं बहुत महत्व रखती है । इस बजट में प्रदेश के प्रत्येक ब्लाक केन्द्र और मंडी केन्द्र पर बैंक खोलन का प्रस्ताव रखा गया है । तो इससे कम से कम सुविधा मिलेगी और आसानी से उनको धन मिल सकता है ।

इस बजट में खेती पर विशेष ध्यान दिया गया है और कोयम्बटूर से प्रदेश में गन्ने का अनुसंधान खोलने का विचार है । इससे अर्ली और लेट वेराइटीज के गन्ने की खोज की जायेगी और ज्यादा दिन तक हमारी फैक्ट्रियां चल सकेंगी, जिससे किसानों और मजदूरों को भी लाभ होगा । इससे हमारी चीनी की परसेंटेज भी बढ़ जायेगी । यहीं पर मान्यवर, मैं कृषि के विकास के संबंध में एक सुझाव देना चाहता हूं, माननीय मंत्री जी को प्लानिंग और कृषि विभागों में बराबर बहस रहती है कि प्लानिंग विभाग समझता है कि मैं सुप्रीम हूं और कृषि समझता है कि मैं सुप्रीम हूं। फाइलें एक विभाग से घूमती रहती है जिससे समय और शक्ति नष्ट होती है। इसलिये यह निश्चित हो जाना चाहिये कि कौनसा विभाग सुप्रीम है। यह बड़ा आवश्यक है ।इसके अलावा दूसरा सुझाव यह है कि प्रदेश में कृषि को 3 भागों में बांटकर युद्ध स्तर पर खाद्य समस्या की चुनौती का मुकाबिला करना चाहिये । रबी की फसल तो गयी, लेकिन खरीफ की फसल का अभी से ध्यान रखना चाहिये ताकि धान की पैदावार अच्छी हो सके । उसमें एक एकड़ में काफी अच्छी परसेंटेज में धान मिलता है । उसके लिये जितनी सुविधा खाद बगैरह की हो, दी जानी चाहिये । हमारे जिले मेरठ में मक्का की खेती को काफी महत्व दिया जाता है और लोग उसमें बड़ी दिलचस्पी लेते है इस खेती में । इसलिये ऐसे लोगों की जरूर इमदाद दी जानी चाहिये ।

मान्यवर, इस बजट में सिंचाई का बहुत ध्यान रखा गया है । यह बड़ी खुशी की बात है । नये डैम्स और ट्यूबवैल्स को अच्छा स्थान दिया गया है । यहीं पर मैं इस बात की ओर भी सदन का ध्यान आकर्षित करूंगा कि माइनर्स में कटिंग्स हो जाती है जिससे पानी का काफी नुकसान होता है । यह नहीं होना चाहिये । इसके साथ ही साथ मेरा यह भी निवेदन है कि मुहकमों में इफीसियेन्सी लायी जानी चाहिये ।

एक सुझाव यह भी देना चाहता हूं जिस पर काफी गौर करने की जरूरत है । हमारी नदियां बहुत उथली हो गयी है । उनमें पानी फैलकर चलता है और फलतः बरसात में बाढ़े आती है, भूमि का कटाव होता और काफी रकबा बेकार होता है । जसे गंगा है, गंगा बीच में उथली होने के कारण बरसात में 5/6 मील में पानी फल जाता है, जिससे धन जन की हानि होती है । फारेन कन्ट्रीज में निदियों की सफाई करने का मुहकमा है । यहां अब तक इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया । मैं सदन से यह निवेदन करूंगा कि इस पर ध्यान दिया जाय । जो नदी 5, 6 मील बरसात के दिनों में फैल चलती है वह दी एक फर्लांग में चले तो बाकी जमीन खेती के काम में आ सकेगी और वह उपजाऊ भी होती है ।

शिक्षा पर काफी ध्यान दिया गया है इसीलिये पहाड़ी क्षेत्रों में विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं । यह एक सराहनीय कदम है । मेरा सुझाव यह है कि इव विश्वविद्यालयों में शिक्षा की ऐसी पद्धति अपनाई जाय जो बेकारी को दूर करे । बजट म हरिजनों के आवास के लिय, हरिजन विद्यार्थियों के कल्याण हेतु योजनाओं को स्वीकृत करके चार चांद लगा दिय गये हैं यह

कार्य बहुत ही प्रशंसनीय है । इस प्रकार यह बजट समाज के प्रत्येक वर्ग के लिये बहुत लाभदायक और विकास करने वाला है ।

अन्त में मेरा निवेदन है कि काल चक्र अत्यन्त बलवान है । जो बहुत तेज गति से घूम रहा है और तमाम संसार त्रस्त है । स्वाभाविक है कि उसका प्रभाव हमारे देश व प्रदेश पर भी पड़ रहा है और उससे समस्यायें बहु त जटिल व विषम हो गई है । उनका हल हमारे मुख्य मंत्री जी ने व वित्त मंत्री जी ने बहुत ही दक्षता, कुशलता और विवेक से इस बजट में प्रस्तुत किया है । अत. में उन्हें पुनः धन्यवाद देता हूं और इस बजट का पूर्ण रूप स समर्थन करता हूं ।

श्री शिव सम्पत्ति (जिला मिर्जापुर)--

अध्यक्ष महोदय, मेरे साथियों ने बजट पर बहुत कुछ बोल दिया है । मैं दुद्धी क्षेत्र से आया हूं । वहां की परेशानियों को मैं आपके माध्यम से सरकार तक पहुंचाना चाहता हूं। वहां पर सबसे बुरी हालत सड़को की है। ओबरा है, करोड़ों बल्ब जलते है, हर तरह के लोग रहते है लेकिन उसके पश्चिम आज तक वहां कोई सड़क नहीं है । कई स्थानों पर जाने के लिये कच्ची सड़कें तक नहीं हैं और लोग बैलगाड़ी तक नहीं देख सके हैं। वहां के रहने वालों के लिये पानी का भी प्रबन्ध नहीं है, न बन्धों का इन्तजाम है । खेती के लिये भी कोई साधन नहीं है । रिहन्द वहां बना है लेकिन दुद्धी क्षेत्र को उससे कोई फायदा नहीं हुआ । न उनको बिजली मिलती है, न पानी मिलता है । जो पानी बेकार हो जाता है उससे नहर निकल सकती थी लेकिन उस ओर ध्यान नहीं दिया गया । शिक्षा का हाल यह है कि राबर्टसगंज मिर्जापुर से शिक्षक 11 माह तक स्कूल नहीं गए और इन सब चीजों को देखने वाला वहां कोई नहीं है । सिंचाई के लिये बन्धे की व्यवस्था की जाय, पानी पीने के लिये कुंएं बनाये जायं । तीन चार ब्लाक चल रहे है लेकिन उन्होंने उसकी कोई व्यवस्था नहीं की, वह कितने शर्म की बात है अगर पीने के पानी की व्यवस्था नहीं हो सकी तो फिर खाने का क्या इन्तजाम हो सकता है ? सरकार से मेरा अनुरोध है कि मिर्जापुर का इलाका पहाड़ी इलाका है उसे पहाड़ी निगम में मिला दिया जाय। वहां पर 13 ब्लाक में सूखा सरकार द्वारा बताया गया लेकिन लोग अभी भी सूखे से पीड़ित है और गल्ले का वहां प्रबन्ध नहीं हो सका । खाने पीने के बगैर वे मर जायेंगे । इस सम्बन्ध में हमने कई बार कहा लेकिन आज तक इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। आज भी लोग पेड़ों की पत्तियां और जड़ें खाकर जीवित रहते हैं । उन्हें अनाज के दर्शन नहीं मिल रहे है, पहनने के लिये उनके पास कपड़ा तक नहीं है । सरकार ने सस्ते कपड़े की दुकान खोलने का आश्वासन दिया था लेकिन आज तक कोई सस्ते कपड़े की दकान वहां नहीं खुली है । यदि खुली हो तो सरकार बताये कि कब वहां कपड़ा गया । दवा का वहां पर बहुत अभाव है । अस्पताल नाम की वहां कोई चीज नहीं है । ओबरा के उस पार पश्चिम की ओर जो 70 गांव हैं वहां आज तक न तो अस्पताल की व्यवस्था की गई है और न स्कूल की कोई व्यवस्था है । किसी प्रकार की सुविधा वहां के इन गांवों को नहीं दी गई है । आने-जाने की सड़कों के बारे में तो मैंने पहले ही निवेदन कर दिया कि वहां के लोगों ने अभी बैलगाड़ी तक नहीं देखी है। साइकिल भी वे लोग बड़े अचरज से देखते हैं । सरकार कहती है कि हमने पिछले वर्ग को बहुत सुविधायें दी है लेकिन सरकार पिछड़े वर्ग की ओर वास्तव में ध्यान नहीं देती है । मैं सरकार से यह निवेदन करूंगा कि सिंचाई मंत्री जी वहां के किसानों से जो पैसा लेते है और कैनाल वालों को जो पैसा दिया जाता है वह किस काम आता है । यहां के लोगों के लिय बन्धे बनाये जायं ताकि पीने के पानी के साथ साथ उन्हें सिंचाई की भी थोड़ी-बहुत सुविधा मिल सके । इस कांग्रेस राज को 27 वर्ष हो गये, कोई सुविधा नहीं मिली है । इसके अलावा कुछ नहीं कहूंगा कि वहां के लोग पेड़ों की पत्तियां जड़ खा रहे हैं । उनके लिये शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध हो ।

बलवान सिंह (जिला कानपुर)—

मान्यवर, समय एक घंटा बढ़ गया है न ?

श्री अध्यक्ष—

अभी बढ़ा नहीं है ।

श्री गोविन्द सिंह (जिला अलमोड़ा)—

मान्यवर, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया है और माननीय राम सेवक जी यादव ने समय बढ़ाने का प्रस्ताव रखा है और हमें बोलने का मौका मिला है....

श्री अध्यक्ष—

अभी बिना प्रस्ताव के आप बोल रहे हैं।

श्री गोविन्द सिंह—

मान्यवर, मैं वित्तीय वर्ष 1974-75 के आय-व्ययक का समर्थन करते हुए सरकार को बधाई इस बातके लिये देता हूं कि भीषण परिस्थितियां होते हुये भी सरकार ने हमारे सामने एक आशाजनक बजट प्रस्तुत किया है जिससे सामाजिक न्याय मिलनेमें सभी वर्ग के लोगों को यह बजट सामर्थवान और सक्षम होगा । मैंने नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं के भाषणों को सुना । जिसमें यह कहा गया कि उत्पादन बढ़ाने वाली मदों में इस बजट में विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। चौधरी चरण सिंह जी एक तरफ तो यह कहते हैं कि उत्पादन बढ़ाने वाली मदों में कोई ध्यान नहीं दिया गया है और दूसरे वे यह कहते हैं कि भूमि विकास सेना के बनाने में जिसकी इस बजट में चर्चा की गयी है, जो बनरोपण में, भूमि संरक्षण में, तालाबों को गहरा करने में सहायक होगी हम ये विरोध करते हैं । उन्होंने अपने भाषण में यह भी कहा कि कर्मचारियों की वेतन वृद्धि करने से और उन्हें महंगाई भत्ता देने से महंगाई और बढ़ रही है । मैं समझता हूं कि विरोध पक्ष के लोग अगर लेवी का गेहूं वसूल करने में बाधा न डालते, होर्डिंग न करवाते अन्न की, तो आज इतनी यहंगाई और अभाव नहीं होता । विरोध पक्ष के लोगों ने विशेष आपत्ति इस बात के लिये की है कि इस बजट में पर्वतीय अंचलों की ओर विशेष ध्यान दिया गया है और खास तौर से हमारे वी० के० डी० के भाइयों ने इस बात का विरोध किया है । माननीय राम अधार राय, चौधरी चरण सिंह तथा अन्य लोगों ने आपत्ति की थी कि इस बजट में पर्वतीय अंचल के लोगों को विशेष सुविधायें दी गई हैं । ऐसी आशंका प्रगट की गई । चौधरी साहब इस बात को भूल गये कि इस पर्वतीय अंचल, जिसमें 8 जिले शामिल है, उसका क्षेत्रफल और उसकी जनसंख्या हमारे पड़ोसी प्रान्तों—हिमांचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब से कहीं ज्यादा है । चौधरी साहब इस बात के भी विरोधी हैं कि पन्त विश्वविद्यालय का हिल कैम्पस टेहरी में बनवाया जा रहा है । चौधरी साहब चाहते हैं कि या तो हर जिले में इस तरह के कैम्पस बनें या फिर वहां पर भी न बनाया जाये । उन्होंने कुमायूं और गढ़वाल विश्वविद्यालयों का इसलिये विरोध किया कि वहां पर फील्डिंग सेन्टर्स नहीं हैं । तो इस संबंध में मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय में स्थानीय छात्र ही अध्ययन नहीं करते हैं बल्कि विश्वविद्यालयों में बाहर के, दूर-दूर के भी काफी छात्र अध्ययन करते हैं । और पहाड़ों पर यदि ये विश्वविद्यालय बनते हैं, तो वहां का जो वातावरण है, जो जलवायु है, वहां उपलब्ध अध्ययन करने की जो सामग्री है, वह सारे विश्व के छात्रों को अपनी ओर खींचेगी । चौधरी साहब देखेंगे कि ये जो मैदानी हिस्से के विश्वविद्यालय हैं, वहां से भी ज्यादा अध्ययन कर्त्ता छात्र वहां पहुंचेंगे ।

हमारे राम अधार जी का कहना यह है कि यह जो बजट है वह पहाड़ों पर चढ़ रहा है और बी० के० डी० के भाई लक्ष्मण सिंह जी आदि ने भी कुछ ऐसी बातें कहीं हैं। मैं तो यह

समझता था कि मेरे जो बी0 के0 डी0 या अन्य विपक्षी दलों के भाई हैं, वह इस बात को नजर में रखत हुय कि पहाड़ों पर यातायात क साधन नहीं है, जलमार्ग नहीं है, रेल लाइनें नहीं हैं, वह केन्द्र से इस बात की वकालत करेंगे कि वहां के विकास के लिये अधिक से अधिक साधन जुटाए जाएं। यदि दार्जिलिंग में, शिमला में रेल जा सकती है तो क्या वजह है कि उत्तर प्रदश क इन पहाड़ी अंचलों में रल नहीं जा सकती है। मैं अपने भाई रामअधार जी को आपके माध्यम स यह बताना चाहता हूं कि विदेशी शासन काठगोदाम, टनकपुर, रामनगर और कोट-द्वार पर जहां पर र ल लाइन छोड़ गया है, और उस समय से अब तक वहां पर एक इंच भी रेल लाईन नहीं बढ़ी है। यदि इस बजट क द्वारा वहां पर यातायात और शिक्षा की कुछ सुविधा दी गई है तो उनको इस पर नाराज नहीं होना चाहिये। यह बजट उन्हें पहाड़ों की ओर चढ़ता नजर आ रहा है, मैं उनसे निवेदन करूंगा कि वहां की विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखत हुए, यदि पहाड़ों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया जाता है तो यह न समझें कि यह सिर्फ पहाड़ों के लिय ह, बल्कि उससे सारे प्रान्त की और सारे देश की उन्नति होने वाली है। इस दृष्टिकोण से वह इसे देखें। जहां तक रामअधार जी की बातों का प्रश्न है, यदि उनकी ओर से विरोध होता है तो समझ में आ सकता है, क्योंकि वह आजमगढ़ के रहन वाल हैं और चूंकि पर्वी जिले कुछ पिछड़े हुये हैं इसलिये उनको पर्वतीय अंचलों के विकास कार्यक्रम से कुछ रश्क हो सकती है। लकिन चौधरी साहब की जो आपत्ति है, वह मर समझ में नहीं आती है मैं समझता हूं कि चौधरी साहब यह चाहते हैं कि पर्वतों का विकास न हो, वहां पर असन्तोष व्याप्त रहे। इस प्रकार से जो प्रथकतावादी लोग हैं उनको प्रोत्साहन मिले जिससे वहां जो सेप्रेट हिल स्टेट या उत्तराचंल की मांग है वह पूरी हो सक और फिर उसस चौधरी साहब क मन में विशाल हरियाणा का जो ख्वाब है वह पूरा हो सके। यह उनका मंशा है। इसीलिय चाहत ह कि पर्वतीय अंचलों का विकास न हो। पर्वतीय अंचलों क लिये जो प्राविधान किया गया है, मैं बताना चाहूंगा, केवल ढाई सौ प्राइमरी पाठशालायें पर्वतीय अंचलों में पांच साल के लिये रखी गयी हैं। इस प्रकार से पचास प्राइमरी पाठशालायें एक साल में पड़ेती है। अल्मोड़ा में जहां 14 ब्लाक हैं वहां 6 प्राइमरी पाठशालायें एक साल में खुलेंगी। मैं समझता हूं कि कोई पर्याप्त प्राविधान प्राइमरी पाठशालाओं का नहीं है। इसलिये जो शंका आप लोगों के दिल में है वह सही नहीं है।

श्री त्रिवेनी—

अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रस्ताव है कि सदन का समय आज एक घंटा बढ़ा दिया जाय। इधर से भी और उधर से भी, लीडर आफ अपोजीशन की भी सहमति है। एक घंटा समय बढ़ा दिया जाय।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि सदन का समय एक घंटा बढ़ा दिया जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)—

आपने 15 मिनट पहले क्यों नहीं किया? यह सदन किसी नियम से चलेगा या जब जैसा चाहे वैसा चलाएंगे?

श्री अध्यक्ष—

कहां लिखा है कि 15 मिनट पहले प्रस्ताव किया जाना चाहिये। समय के भीतर समय बढ़ाने का प्रस्ताव किया जा सकता है और किया गया। 15 मिनट तो मैं बढ़ा सकता हूं। मैंने नहीं बढ़ाया। आपने बढ़ाया।

श्री गोविन्द सिंह—

अध्यक्ष महोदय, मैं अब समाप्त करने जा रहा हूं। पर्वतीय अंचलों के लिये धन तो केन्द्रीय सरकार से मिला है। इसमें प्रान्त का कोई अहसान नहीं है। इसलिये आप लोगों से मैं निवेदन करूंगा कि आप सर्वसम्मत तरीके से, पुर जोर तरीके से, इस बजट का समर्थन करें। मैं स्वयं इस बजट का समर्थन करता हूं। धन्यवाद।

*श्री बलवान सिंह (जिला कानपुर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत गौर से, खास तौर से रामायण राय जी की बातों को सुना। यह जो कहा जा रहा है कि विरोधी लोग सिर्फ विरोध कर रहे हैं ऐसी बात नहीं है। मेरा ऐसा खयाल है कि मैं एसी चीजों की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं जिसम खर्चे का सवाल नहीं। आपने बजट बनाया है। कुछ चीजें ऐसी हैं जिनमें नीति की बात थी। आप सोशलिज्म का, गरीबी हटाने का नारा देते हैं। गरीबी हटाओ या समाजवाद इस बजट में नहीं आता। मैं एक चीज की ओर आपका ध्यान दिलाऊं व्युरोक्रेट और टेक-नोक्रेट का जो झगड़ा है जैसे आप बिजली और आबपाशी में टेकनोक्रेट को तरजीह देते हैं मैं खास तौर से वित्त मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या वजह है कि आप इस यू० पी० में आप हर जगह आई० ए० एस० रखना चाहत हैं। हर दायरे में आई० ए० एस० को बिठाना चाहते हैं। यह गुलामी की चीज है। यह प्रणाली अंग्रजों की दी हुई है। विदेशों में आई० ए० एस० नहीं हैं। माननीय नारायण त्त जी तिवारी फाइनेंस मिनिस्टर हैं, उनसे मैं पहले कहना चाहता था क्या वह यू० पी० में टेकनोक्रैट्स को तरजीह देंगे, आई० ए० एस० के खिलाफ? उनके खिलाफ जो आई० ए० एस० को तरजीह दी जा रही है उसको आप हटायेंगे?

(इस समय 5 बजकर 3 मिनट पर अधिष्ठाता, श्री मुहम्मद असरार अहमद पीठासीन हुए।)

मैं यह कहना चाहता हूं कि यू० पी० इस बात में अग्रणीय रहे कि इसमें जो विभाग टेक्नोलोजी के हैं जिनमें एडमिनिस्ट्रेशन का विशेष ताल्लुक नहीं है वहां पर टक्नीकल एक्सपर्ट को रखा जाय।

दूसरी चीज यह है कि यू० पी० हर साल गरीब होता चला जा रहा है दो साल पहले गहूं की पैदावार 13 मन फी एकड़ थी जो अब 10 मन ही रह गई है। क्या आप इसकी पैदा-वार कम करके गरीबी बढ़ा रहे हैं? या घटा रहे हैं मुझे दुख है कि शिड्यूल कास्ट के एम० एल० एज० जो देख रहे हैं कि पदावार दिन प्रति दिन गिरती चली जा रही है तो गांवों में जो गरीब लोग हैं उनके ऊपर इसका क्या असर पड़ता होगा। अगर इन योजनाओं से पदावार गिर रही है तो इनको बन्द कर दिया जाय क्योंकि जैसा कि चौधरी साहब न कहा और राम सेवक जी ने कहा कि आपकी इन तीनों पंचवर्षीय योजनाओं में जो पहली योजना में आमदनी थी वह चौथी योजना में नहीं है। इधर यह हालत हो गई है कि आपने खर्चा बहुत बढ़ा दिया है। 1967 में एक ट्रक्टर का दाम 13 हजार रुपया जो आज 30 हजार रुपया हो गया है। आज एक टन खाद की कीमत 300 मन गेहूं में आ रही है। इसके ऊपर आपका यह कहना कि 76 रुपये से आपने 105 रुपये गहू क दाम कर दियें है, कोई माने नहीं रखता है। आज 135 रुपये क्विन्टल उनका खर्चा आ रहा है और आप 105 रुपये प्रति क्विन्टल के हिसाब से उनसे गेहूं लेंगे तो उनकी आमदनी कहां ले जायंगे। इससे स्पष्ट है कि आप गांवों की आमदनी शहरों में ला रहे हैं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

आज जो शिक्षा प्रणाली है। मैं समझता था कि हमारे वित्त मंत्री जी आय-व्ययक में इस पर अपन विचार व्यक्त करग। क्या आपकी इम्पलायमेंट ओरियेंटड एजूकशन है? हमारी प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति न कहा है कि हमारे देश की हालत खराब है। लेकिन हमारे मुख्य मंत्री और वित्त मत्री न इस सबंध में कुछ नहीं कहा है। कही एसी एजूकशन दुनिया म है जहां जनरल एजूकेशन और टकनीकल एजूकेशन बराबर हो। दुनिया में एक और चार का रेंशियो रहता है। हमार यहां यह होना चाहिये कि यदि एक लड़का एम० ए० म है तो चार लड़क टक्नीकल एजूकशन में होने चाहिये। लेकिन आज हालत यह है कि यदि दस लड़क जनरल एजूकशन स निकलत ह तो एक लड़का टक्नीकल एजूकेशन से निकलता है। जहां पर एम्पलायमेंट ओरियेंटेडएजूकेशन नहीं है, प्रोडक्टिव एजूकेशन नहीं है तो जो भी नीति रखत ह उसस रुपया बकार जायगा। इससे यू० पी० को कोई फायदा होन वाला नहीं है। इसलिय म यह चाहूंगा कि आज यह जो इस बात की भावना है कि विरोधी पक्ष के लोग सिर्फ विरोध क खातिर बोलते है तो मेरे खयाल से कांग्रेस के पक्ष के लोग इस विरोध पक्ष को सुनकर फायदा उठाते हैं। क्या आप सोचत हैं कि कोआपरटिव डिपार्टमेंट में आपका बजट कितना है? सीड क लिये श्रीमन् कोई ऐसा मुल्क नहीं है जहां पर को अपने काश्तकारों को सुविधा न देता हो, अच्छा बीज न देता हो। हर मुल्क अपने काश्तकारों को अच्छी बीज देना चाहता है। श्रीमान् केवल 5 फीसदी बीज इस अपने मुल्क में अच्छा है बाकी बीज अच्छा नहीं है। जब आपक पास बीज अच्छा नहीं होगा, तो फर्टिलाइजर, सिंचाई क लिये नहरों पर खर्च करना उतना उपयोगी नहीं होगा। इस प्रकार से बीज जब इस समय आ रहे हैं तो हमारे जो आने वाल अगले दो महीने हैं वह भी अच्छे नहीं होंगे। हो सकता है कि अक्तूबर, नवम्बर म एक क्रान्ति की भावना इस सूबे में आय। मैं तो यह चाहता हूं कि अगर आज का दिन खराब हो रहा है तो ऐसा बिल रख जिससे कि अगला दिन जो आने वाला है वह अच्छा हो।

मैं तो खासतौर से आपसे इरीगेशन पर बातचीत करना चाहता हूं कि आबपाशी पर कितना खच आप करत हैं। केनाल के ऊपर आपने जो यह खर्च किया है वह माइनर इरीगशन स ज्यादा खच है। श्रीमन् 138 करोड़ रुपये का आपने टस्ट टारजट रखा था पिछले साल जिसम कि 25 लाख एकड़ की आबपाशी बढ़ाने की बातचीत की गई थी जो इस पर आपन खच किया है वह आपका ज्यादा आया और टारजेट स आप नीच रह यानी यह तकलीफ की चीज ह कि आपन जितना माइनर इरीगशन पर खर्च रखा उससे जितनी आबपाशी बढ़ी तो म यह जानना चाहता ह कि यह जो 56 करोड़ रुपय माइनर इरीगशन पर किया उसमें 75 लाख रुपय आया। जो 56 करोड़ रुपय बड़ी-बड़ी कैनाल्स पर रख उसमें 30 लाख एकड़ आया। इसलिय मरा कहना है कि आप जितनी चीजें रखें वह अच्छी-अच्छी कनाल्स, इरीगेशन्स पर रख, इससे सूबे का ज्यादा फायदा होगा। दूसरी बात हम श्रीमन् यह कहना चाहत ह कि सल्स टक्स पर हमारा 32 करोड़ रुपये बाकी है और अब भी एस 10 करोड़ रुपये पड़ हुय हैं जो कि वसूल नहीं किया गया। इस लिय म जानना चाहता हूं कि यह जो रुपये हिंडल्को तथा अन्य पर बाकी हैं उनसे पया वसूल करन के लिय क्या योजना बनाई गई है? आपकी जितनी हाट्स और बाजार्स ह, य सब भी जमींदारों के कब्जे म ह और उनका पसा पुराने जमींदार लोग लत हैं। अगर यह सरकार इनको ल ले तो 10 करोड़ रुपये का फायदा होगा लकिन तमाम बाजास यू० पी० में जमींदारों क पास हैं। इन बाजारों तथा हाटों को ल लेन स सरकार का 35–40 करोड़ रुपये का फायदा होगा। इसक अलावा जो प्राइवेट बसों को चलान क लिय परमिट दिये जाते हैं, उससे गवनमेंट, का नुकसान होता है। अगर इन प्राइवेट बसों को चलान के लिये परमिट न दिये जायं और तो उससे सरकार का काफी फायदा होगा। इन शब्दों क साथ जो मैंने सुझाव दिये ह, यह एस सुझाव हैं जिन पर अमल करन स यू० पी० का फायदा होग।

*श्री सच्चिदानन्द (जिला उन्नाव)--

आदरणीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे 1974-75 के बजट पर बोलन का अवसर दिया । आपक माध्यम से मैं अपन माननीय मुख्य मंत्री एवं वित्त मंत्री को भी बधाई देना चाहता हूं कि जिन्होंन सदन में एक एसा बजट प्रस्तुत किया जिसमें सिंचाई सुविधा, कृषि उत्पादन, छोटे कृषकों के लिये विशेष सुविधायें देने का प्राविधान किया गया है । इसके अलावा उन्होंने इसमें छोटे उद्योगों, छोटी सिंचाई, योजनाओं का भी समावेश किया है । ये ऐसी बातें है जिनमें सरकार की कथनी और करनी के लिये जो आवाज माननीया इन्दिरा जी ने उठायी थी, उसको बल मिलेगा और जो गरीबों का स्वप्न था, वह इस बजट क द्वारा पूरा हो सकेगा ।

इस सम्बन्ध में मेरा इस सरकार से सुझाव है कि वे हर जिले में जिला स्तर पर एक मूल्यांकन समिति का निर्माण करें जो योजनाओं का मूल्यांकन करे कि वास्तव में जो दूसरे विभागों में कार्य होने वाले हैं वे उन योजनाओं को पूरा करा रहे हैं अथवा नहीं । अधिकारियों की तनज्जुली और तरक्की योजनाओं की सफलताओं पर मुनहसिर होनी चाहिये। यदि उनके अन्दर यह भावना पैदा हो गयी तो जितने अधिकारी जिल म होंगे काम करना आरम्भ कर देंगे ।

मेरा इस बजट अधिवेशन के समय यह सुझाव है आपके द्वारा यहां पर मौजूद वित्त मंत्री जी से जो उद्योग मंत्री भी है कि वह उद्योग अधिकारियों को ऐसे निदश दें कि प्रत्येक जनपद में न्याय पंचायत स्तर पर कम से कम एक उद्योग की स्थापना वर्ष के अन्त तक निश्चित रूप से हो जाय । यदि ऐसे निर्देश दिय जाते हैं तो इससे बड़ा लाभ होगा और जैसा विरोध पक्ष और हमारा शासन भी चाहता है, हर जनपद उद्योगों से लहलहा उठगा ।

इस अबसर पर मैं बधाई देना चाहूंगा अपने वित्त मंत्री को उन्होंने समाजवाद की दिशा एक नया कदम उठाया है । जो बडे-बड़े होटल है उन पर उन्होंने 3 और 5 परसेंट का शुल्क लगाया है । इन होटलों में बड़े-बड़े लोग जो लाखों का व्यापार करते है और बड़े-बड़े अधिकारी बैठते हैं । लेकिन यह टैक्स इतना कम है कि कहीं उनमें बैठने वाले बड़े-बड़े लोग यह न समझ बठें कि यह भी प्रशासन को एक टिप दिया जा रहा है । इसलिये मेरा सुझाव है कि यह 3 परसेन्ट और 5 परसेन्ट का टैक्स बढ़ा कर कम से कम 15 परसेंट और 25 परसेंट कर दिया जाय । जो 50 रुपये होटल में बैठ कर खर्च कर सकता है वह साढे 7 रुपये भी आसानी से दे सकता है और जो 100 रुपये होटल में ठहर कर दे सकता है वह 25 रुपये भी आसानी से दे सकता है । ऐसा करने से अभी जो 6 लाख की आमदनी इससे सरकार को होने वाली है वह 25-30 लाख रुपये हो जायेगी । इसलिये मेरा खयाल है कि प्रशासन को इस तरफ ध्यान देना चाहिये और 3 परसेंट और 5 परसेंट क बजाय 15 परसेंट और 25 परसेंट टक्स कर देना चाहिये ।

इसी प्रकार मनोरंजन का जो कर लगाया गया है उस सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि जो 1 रुपये पर 5 परसेंट बढोत्तरी का प्राविधान है वह न बढाया जाय और जो 1 रुपये से अधिक पर 10 परसेंट की बढोत्तरी की गयी है उसकी जगह पर 20 परसेंट की बढोत्तरी कर दी जाय तो अच्छा होगा क्योंकि 1 रुपय का टिकट लकर केवल रिक्शा वाले और झल्ली वाले ही सिनमा देखते है लेकिन 1 रुपय से ज्यादा का टिकट बड़े आदमी ही खरीदत है । इससे सरकार की आय में कोई कमी नहीं होगी ।

इसके अलावा मैं बधाई देना चाहता हूं आवश्यक वस्तु निगम की स्थापना पर । लेकिन इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव है । यह केवल शहरी क्षेत्रों के लिये ही न हो बल्कि इससे वह तमाम गरीब लोग भी फायदा उठा सकें जिनको सस्ती चीजें मोहय्या नहीं हो पाती है । इसलिये-

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मेरा सुझाव है कि 5 मील के रेडियस पर ऐसे उपकेन्द्र बनाये जांय जहां आवश्यक वस्तुओं की खरीद और बिक्री, दोनों चीजें ग्रामीण कर सके चाहे गल्ला बेचना हो और चाहे उर्वरक या जीवन की दूसरी आवश्यक वस्तुयें खरीदनी हों । इससे ग्रामीण जीवन में एक नयी लहर पैदा होंगी शहरों के साथ-साथ गांवों को भी देखना आवश्यक है ।

हरिजनों की सुविधाओं के लिये शासन ने जो योजना चला रखी है उसमें अभी तक कुछ त्रुटि जरूर रही है । लेकिन वर्तमान बजट में उस त्रुटि का निदान किया गया है । हमारे सार्वजनिक निर्माण मंत्री के नेतृत्व में एक समिति बनायी गयी है जो केरल जायगी और यह देखेगी कि हरिजनों को केवल जमीन न दी जाय बल्कि उसकी जगह पर उनको बने बनाये मकान दिये जायं । और शायद यह अधिक उत्तम व्यवस्था होगी कि केरल सरकार ने जो व्यवस्था अपनायी है वही यहां भी चालू की जाय । इस बजट से ऐसा संकेत मिलता है कि हमारे प्रदेश में भी केरल जैसी व्यवस्था शुरू होने वाली है ।

छात्रों को अधिकाधिक सुविधायें देने का भी इस बजट में प्राविधान है । लघु उद्योग के सिलसिले में भी ध्यान दिया गया है । जहां टक्नीकल सहायता देने के लिये एक कमे ो क निर्माण की बात कही गयी है, वहीं रा-मैटीरियल वितरण में जो त्रुटियां है उनको दूर करना बहुत आवश्यक है । बड़ी-बड़ी फैक्ट्री वाल रा-मैटीरियल का गलत तरीके से इस्तेमाल करते है । साथ ही साथ जो इन्सपेक्टर और इन्डस्ट्री अफिसर्स इसके लिये अपनी रिकमन्डेशन देते हैं, व भी गलत तरीके से देते है। मेरा सुझाव है कि जो इन्सपेक्टर्स और आफिसस गलत सिफारिश करें उनको ंड मिलना चाहिये ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि उत्पादन बढ़े । चाहे विरोध पक्ष के लोग हो, अथवा इस पक्ष के लोग हों, सभी चाहते है, कि प्रदेश की उन्नति हो । यह तभी सम्भव है जब कि उत्पादन बढ़े । उत्पादन बढाने से ही देश का कल्याण हो सकता है । इसके लिये मेरा एक सुझाव है । उत्पादन में श्रम और पूंजी का बड़ा महत्व है । दोनों चीजें बराबर की है । दोनों का बराबर का महत्व है । श्रमिकों को भी फैक्ट्री के एडमिनिस्ट्रेशन में मौका मिलना चाहिये । मिल मालिक और श्रमिक दोनों को ही मिलकर एडमिनिस्ट्रेशन करना चाहिये । साथ ही पब्लिक सेक्टर के उद्योगों में जो मुनाफा हो उसका आधा हिस्सा श्रमिकों को मिलना चाहिये । उनसे बोनस में भले ही आप कटौती कर लें, पर जब आप लाभ में आधा हिस्सा उनको देंगे, तो वे अधिक मेहनत से काम करेंगे और इस तरह से उत्पादन भी बढ़ेगा । उनको काम अधिक करन का इन्सेन्टिव मिलेगा । इन शब्दों के साथ मैं इस बजट का समर्थन करता हूं ।

(श्री मूलचन्द का नाम पुकारे जाने पर) ।

श्री भाभी (जिला आजमगढ़)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं 3 दिन से लगातार खड़ा हो रहा हूं । पचासों बार खड़ा होने के बाद भी मुझे अवसर अपने विचार प्रकट करने का नहीं मिला । मुझे आपके प्रति बहुत दुख है । मैं आपके झूठ बोलने के नाते बहुत परेशान हुआ । मैं समझता था कि आपने ईमानदारी से नाम दिये होंगे । आपने कल मुझसे कहा था कि मेरा तीसरा नाम है । लेकिन अध्यक्ष जी से बाद में पता चला कि मेरा नम्बर 11वां था । आज भी आपने कहा कि मेरा नम्बर तीसरा है । फिर भी मेरा नम्बर नहीं आया । जिनका नम्बर नहीं था उनको बोलने का अवसर दिया गया ।

मुझे आप बता दें कि मुझे बोलने का अवसर आप देंगे या नहीं । यदि मुझे बोलने का अवसर आप दें तभी मैं यहां बैठ सकता हूं, समय आप चाहे जब दें, यदि मुझे समय नहीं देना चाहते तो मैं सदन से जाना चाहता हूं ।

श्री अधिष्ठाता--

अभी थोड़ी देर आप और इन्तजार कीजिये ।

श्री मूलचन्द (जिला मुजफ्फरनगर)--

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। अधिष्ठाता महोदय, मैं भी कई रोज से बराबर खड़ा हो रहा था, लेकिन आज मुझे बोलने का अवसर प्राप्त हुआ । इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं ।

मान्यवर, मैंने इस बजट को देखा तथा अन्य सूबों के बजटों को भी देखा है, मगर उत्तर प्रदेश का बजट एक अजीबों गरीब है । इसके अन्दर, सबसे पहली बात तो मुझे यह कहना है, कि इस सरकार का अभी पूरा मंत्री मंडल नहीं बना है । यह बजट सेशन के बाद बनाया जायेगा । जो भी सदस्य सबसे ज्यादा चौधरी साहब की बुराई करेगा, विरोध पक्ष की बुराई करेगा, उसी को उसके कार्य को देख कर राज्य मंत्री, उप मंत्री, आदि का पद दिया जायेगा । इस बात का बाद को निरीक्षण किया जायेगा कि किसने चौधरी साहब की सबसे ज्यादा बुराई की है । जो सबसे ज्यादा बुराई करेगा उसी को चान्स दिया जायेगा ।

अब मैं दूसरी ओर आता हूं । सबसे पहले शिक्षा में लेता हूं । शिक्षा में आप देखें कि आज जो शिक्षा का सत्यानाश हो रहा है उसकी ओर बजट में कुछ नही दिखलाया गया । आप देख रहे है कि शिक्षा की ओर पूरा ध्यान न देने से आज देश के अन्दर कितना बड़ा इंडिसिप्लिन है । चारों तरफ त्राहि-त्राहि मची है और यहां तक कि उन गुरुओं की मर्यादा जो पुराने जमाने में थी आज उनकी कोई मर्यादा नहीं रही है । बजट इस प्रकार बनाये जाते है कि जो असल चीज है देश के लिये उसकी तरफ बिलकल ध्यान नहीं दिया जाता है । इंडिसिप्लिन का होना केवल यह इंडिकेशन करता है कि विद्यार्थी को एजूकेशन का मतलब जो आल-राउन्ड डेवलपमेंट है, वह नहीं दी जाती है और न बजट के अन्दर उसका ऐसा माध्यम रखा गया है । मैं एक सुझाव पेश करता हूं कि प्रत्येक स्कूल के अन्दर एक वोकेशनल टीचर रहना चाहिये और वह गायडेंस दे कि विद्यार्थी किस प्रकार अपनी स्टडी करें और किस माध्यम से चलकर वह देश की सेवा कर सकता है । इसलिये बजट को इस प्रकार बनाया जाना चाहिये कि उसके अन्दर प्रत्येक विद्यालय में एक अध्यापक ऐसा हो जो वोकेशनल गायडेंस दे जिससे बच्चे का आल-राउन्ड डेवलपमेंट होता रहे और पुश करता रहे जिससे देश के अन्दर इंडिसिप्लिन नहीं रहेगा।

दूसरी ओर मैं आता हूं कि परीक्षाओं के अन्दर किसी भी अध्यापक की कोई सेफ्टी नही है । दिन-दहाडे एग्जामिनेशंस में छात्र नकल करते है और छुरा अपनी मेज के ऊपर रख लेते है । यदि कोई अध्यापक उनको रोकता है तो उसे छुरा दिखलाया जाता है और आप पेपर्स में पढ़ते है कि अध्यापकों की हत्यायें कर दी जाती है । लेकिन इस ओर हमारे बजट में कोई ध्यान नहीं दिया है । मेरा सुझाव है कि परीक्षायें इस प्रकार संचालित की जांय ताकि हत्यायें न हों और देश के अन्दर इंडिसिप्लिन न हो ।

इसके अतिरिक्त जो आपका पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट है उसकी ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूं और कुछ सुझाव पेश करता हूं । कुछ योजनायें इस प्रकार की रखी गयी है जिनकी देश के अन्दर जरूरत नहीं है, लेकिन चूंकि वहां तो उस जगह का कोई मंत्री है या दूसरा कोई इम्पार्टेंट व्यक्ति है तो उसी आधार पर वहां के लिये रुपया स्वीकृत कर दिया जाता है ।

एग्जाम्पिल के लिये मुजफ्फरनगर-बिजनौर को मिलाने वाला कोई पुल नहीं है, लेकिन उस पुल को बनाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है । उससे पहले मुजफ्फरनगर के अन्दर एक पुल बनवा दिया है जिसकी कोई आवश्यकता नही थी । इसलिये इस पर विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जहां पर योजना बनायी जाय वह प्रैक्टिकली पब्लिक के यूज की है या नही है ।

इसके अतिरिक्त मैं सहकारिता के ऊपर कुछ आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि सहकारिता के अन्दर जितना भ्रष्टाचार व्यापक है इससे ज्यादा मैं और दूसरे विभाग के अन्दर नहीं समझता हूं । सहकारिता के अन्दर बजट में दिया हुआ है कि सदस्य संख्या वर्ष 73–74 की 85 लाख थी । जो बढ़कर 74–75 में 91 लाख हो जायगी, लेकिन उसके ऊपर कभी ख्याल किया है कि इसके अन्दर संख्या तो बढ़ रही है लेकिन भ्रष्टाचार कितना बढ़ रहा है ? आप देखते हैं, सोसाइटीज के अन्दर जो यूनिट है, उसके अन्दर जो कर्ज दिया जाता है लोगों के अंगूठे लगवा लिये जाते हैं और उस पर डाइरेक्टर भी शिनाख्त कर देते हैं । और इस प्रकार से जो गरीब लोग ठगे जाते हैं और उनकी सुनवायी नहीं होती है । साथ-साथ उनको डिग्री दी जाती है और डिग्री के बाद यदि कोई अपील की जाती है कि तो उसके अन्दर कह दिया जाता है कि सोसाइटी जो है वह आटोनामस बाडी है, इसलिये उनकी अपील नहीं मानी जाती है । इस प्रकार से जो गरीब लोग हैं वे और गरीब बनते चले जाते हैं । जिनको कर्ज की जरूरत होती है उनको कर्ज न देकर के जिनको कर्ज की जरूरत नहीं होती है उनको कर्ज में फांस कर उन पर मुसीबत बरपा की जाती है । अतः मेरा वित्त मंत्री जी से अनुरोध है कि वह इस प्रकार का बजट के अन्दर संशोधन करें जिससे उन्हें डाइरेक्ट पेमेंट हो जाया करे और जो बेईमानियां जो भ्रष्टाचार व्यापक रूप से चल रहा है उ को बन्द किया जाय और उसके सम्बन्ध में भ्रष्टाचार की फाइलें ए0डी0ओ0, सहकारिता के यहां जो खुली हुयी हैं उनका जल्दी से जल्दी निपटारा किया जाय ताकि भ्रष्टाचार आगे न पनपे । इसके अतिरिक्त मैंने जब इस बजट की स्टडी की तो मैंने देखा कि इसमें आनरेरी मैजिस्ट्रेट जो है वह फिर से एप्वाइन्ट किये जा रहे हैं । आप देखें इन लोगों का भ्रष्टाचार पहले देखा गया था इसी की वजह से आनरेरी मैजिस्ट्रेट जो थे बन्द किये गये थे लेकिन फिर, जो है उन्हें चालू किया रहा है और आप समझ सकते हैं कि इनके ऊपर बड़ा भारी खर्च आयेगा । मैं समझता हूं कि इसमें संशोधन किया जाय और देश का जो बहुत सा रुपया बरबाद होने जा रहा है उसे बचाया जाय ।

इसके अतिरिक्त एग्रीकल्चर के अन्दर में थोड़ा सुझाव देना चाहता हूं कि एग्रो ट्रेनिंग सेन्टर पर छात्र पढ़ते है उनको 2 प्रकार की सहायता मिलती है । एक सेन्ट्रल गवर्नमेंट देती है और एक प्रांविशियल गवर्नमेंट देती है । सेंट्रल गवर्नमेंट 250 रुपये स्कालरशिप देती है और आपकी स्टेट गवर्नमेंट 200 रुपये स्कालरशिप देती है सेंट्रल गवर्नमेंट 5 प्रतिशत इन्टरेस्ट लेती है क्योंकि 99 प्रतिशत में 6 प्रतिशत छूट दी जाती है और स्टेट गवर्नमेंट 11 प्रतिशत इन्टरेस्ट लेती है । तो आप इसको देखिये और इस पर विचार करके इसके अन्दर जो डिफरेंस है वह डिफरेंस घटा कर बिल के अन्दर इस प्रकार का संशोधन रखा जाय कि सेंट्रल और प्रांविशियल दोनों समान होनी चाहिये ।

एक बात और कहना चाहता हूं कि भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है आप देखें पहले जो पुलिस के गवाह होते थे उनको कुछ रेमूनरेशन प्रति दिन कुछ रुपया निर्धारित किया गया था और अब उसमें बढ़ोत्तरी कर दी गयी है । लेकिन देख यह रहे हैं कि जो गवाह गवाही देने जाते है उनको बैठा दिया जाता है और कुछ नहीं दिया जाता है । तो मैं अनुरोध करता हूं कि इसमें तब्दीली की जाय ?

श्री अधिष्ठाता—

अब आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री देव बहादुर सिंह (जिला नैनीताल)—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, श्रीमन् मैं बडा आभारी हूं कि आपने मुझे कुछ समय दिया जिससे कि मैं बजट पर कुछ कह सकूं । मैं यह जो 1974–75 का बजट प्रस्तुत किया गया है उसका समर्थन करता हूं । श्रीमन् देखा जाय तो इसमें इस वर्ष केवल 18 करोड़ 30 रुपये का घाटा है । जबकि साढ़े 4 प्रतिशत बिक्री कर को जो गेहूं पर लगा था अगर माफ न किया गया होता तो यह घाटा 14 करोड़ 80 लाख रुपये का ही होता ।

[श्री देव बहादुर सिंह]

हम यह देखते हैं कि जो घाटे का बजट प्रस्तुत किया उसके बारे में उसके विरोध में, बहुत सी बातें कही जाती हैं और उनमें एक मुख्य बात यह होती है कि जो परिणाम उसका होता है उससे मुद्रास्फीति होती है और उसके पश्चात वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं, परेशानियां होती हैं और उसका परिमार्जन तभी सम्भव है जब उसी अनुपात से उत्पादन भी बढ़ाया जाय । हम इस बजट को देखें तो हमें ऐसा लगता है कि उत्पादन के लिये भी जो धनराशि निर्धारित की गयी है अगर उसका उचित उपयोग हो तो निश्चित है कि जितना घाटा है वह पूरा होगा और मुद्रास्फूर्ति भी सम्भवतः नहीं होगी । आज हम अखबारों में पढ़ते है कि हमारी केन्द्रीय सरकार भी चाहती है कि घाटे का बजट न प्रस्तुत किया जावे और केन्द्र में भी और यहां भी इस तरह के प्रयास किये जा रहे हैं । और इसके लिये मैं वित्तमंत्री जी को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता कि पिछले वर्ष जो लगभग 28 करोड़ का घाटा था वह अब 18 करोड़ का ही रह गया है । यह एक बड़ी भारी बात है और यह जो वित्तीय नियम का पालन किया है उसके लिये मैं उनको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं ।

श्रीमन्, हम यदि बजट को देखें तो छोटे से छोटे लोगों के लिये भी इसमें व्यवस्था की गयी है हरिजनों के लिये इसमें व्यवस्था की गयी है, उनके छात्र और छात्राओं के लियेव्यवस्था की गयी है, रिक्शा चालक हैं उनके लिये इसमें व्यवस्था है, उनके आवास के लिये व्यवस्था है यानी समाज के जितने निशक्त भी वर्ग हैं उन सभी के लिये इसमें प्रयास किया गया है, उनकी माली हालत हम कुछ सुधार सकें, इसके लिये इसमें प्रयास है । आज की जो परिस्थितियां है उनमें इससे अच्छा संतुलित बजट प्रस्तुत करना सम्भव नहीं था, मैं तो यह कह रहा हूं कि विपक्ष में जो लोग बैठे हुये हैं जो हमारे साथी उधर है वह भी इधर बठे होते तो वे भी इन शब्दों में ही बजट का समर्थन करते जिन शब्दों में आज हम इसका समर्थन कर रहे हैं ।

एक बात और इस बजट में बहुत खूबियां हैं और इसमें कुछ ऐसी महत्व की बातें हैं जिसके लिये हम इसकी प्रशंसा करते हैं । इसमें यह प्रयास किया गया है कि प्रदेश का जो सबसे पिछड़ा क्षेत्र है उसका विकास कैसे हो इस ओर सबसे पहले निगाह गयी है । पर्वतीय प्रदेश कितने पिछड़े हैं यह किसको नहीं ज्ञात है । नैनीताल का भाग पिछड़ा भाग नहीं है और न बद्रीनाथ और केदारनाथ जहां हम जाते हैं वह पिछाड़ा भाग ही, कहा जा सकता है, पिछड़ा भाग देखना है तो वहां गांवों में जाइए, आप वहां की गरीबी को देखकर कराह उठेंगे, वहां सड़कें ऐसी हैं कि दो-दो दिन के बाद लोग अपने घरों में नहीं पहुंच सकते हैं, चिकित्सालय की व्यवस्था नहीं है, पढ़ने के लिए शिक्षालय नहीं है, पीने के लिए पानी लाने उपलब्ध नहीं है, घरों में पानी लाने के लिए मां बहनों को 8–8 घंटे लगते हैं डिग्गी से पानी लाने के लिए । सरकार ने इस वर्ष इस ओर प्रयास किया है और सरकार का ध्यान इस ओर गया है तो इसके लिए सरकार हमारी प्रशंसा का पात्र है न कि उसमें विपक्ष में कोई बात कहनी चाहिए । मैं वित्त मन्त्री को इसके लिए धन्यवाद देता हूं कि उनको निगाह और हमारी सरकार की निगाह सबसे पहली बार उस पिछड़े हुए क्षेत्र की ओर गयी है जहां इससे पहले किसी की निगाह नहीं गयी थी ।

मुझे एक बात यह भी कहनी है कि इस बजट के द्वारा बहुत से कर लगाये गये हैं और मुझे वे सब ठीक लगते हैं और मैं उन सबका समर्थन करता हूं । सन् 1967 में जो सरकार थी उसनें किसी भावुकता में बहकर सवा छः एकड़ तक की मालगुजारी माफ की थी । गांवों में जाकर आप पूछिये । क्या कभी किसी किसान ने कहा कि हमारी मालगुजारी माफ की जावे ? कभी नहीं कहा । इसके विपरीत जो हमारे देहातों के रहने वाले हैं जिनके पास थोड़ी सी भी खेती है उन्होंने सरकार को मालगुजारी देना चाहा है और उनको आशंका थी कि उनके मालगुजारी न देने से उनकी भूमि उनसे छिन न जावे ।

श्री राम सेवक यादव--

आप इसी तरह से शराब की दूकानों की आमदनी जो सरकार की होती है उसके लिए भी कहेंगे ।

श्री देव बहादुर सिंह--

जब शराब की बातें होगी तो आप कहियेगा इस बात को अभी तो भूमिकर की बात हो रही है और मैं वही बात कह रहा हूं जिसे आपके नेता कह चुके हैं अगर आपस में आपस में द्वन्द्व हो तो बात दूसरी है लेकिन आपके नेता जी जो बातें पहले कह चुके हैं कि किसान ने कभी नहीं कहा कि हमारी मालगुजारी माफ करो वही मैं कह रहा हूं कि उसने सदा कहा कि उसके बदले में हमें सस्ती खाद दो, बिजली दो, जितना पानी चाहिए वह दो, कृषि यन्त्र दो और कीटाणु नाशक दवाइयां दो, जो नये किस्म के बीज निकले हैं जिसके कारण हरित क्रांति हमारे देश और प्रदेश में आयी है उसके लिए पूरी व्यवस्था करो । मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूं जो मालगजारी माफ की गयी है उसे आप वापस ले लें और उन पर मालगुजारी पहले की भांति हो उसके बदले में उन्हें खाद दें, बिजली दें और कृषि की जितनी और सुविधायें हैं वह सब उनको अधिक से अधिक उपलब्ध करायें ।

एक बात मैं बिजली के बारे में कहना चाहता हूं देहातों में जहां ट्यूबवेल लगे हैं प्रति हार्स पावर 3 रु0 की दर से किसानों से निम्नतम शुल्क किया जाता है । ऐसी बात नहीं होनी चाहिए । वहां सरकार की तरफ से यह प्रबन्ध होना चाहिए कि तुमको सरकार की ओर से अनिवार्य यूनिट बिजली मिलेगी । आज तक एक तरफा समझौता देखा है ? दोनों तरफ से समझौता होना चाहिए । किसानों से ऐसा समझौता होना चाहिए कि वह जितनी अतिरिक्त बिजली का इस्तेमाल करेगा उसको अतिरिक्त बिजली का पैसा देना पड़ेगा । हम तो चाहेंगे कि विद्युत् परिषद् से अनिवार्य बिजली जितने जितने हार्स पावर के हिसाब से मिलती है उस हिसाब से कुछ यूनिट प्रति वर्ष के लिए निर्धारित कर दी जाय और किसानों को जो 3 रु0 प्रति हार्स पावर का चार्ज है उसमें कटौती करके किसानों को सप्लाई की जाय । इस सुझाव पर सरकार विचार करे ।

दूसरी बात पर्वतीय अंचलों में बनों से लीसा उत्पादन जो होता है और उससे रेजिन पैदा होता है उस पर साढ़े सात प्रतिशत जो टैक्स रखा गया है उसको माफ कर दिया जाना चाहिए । लीसा इस प्रदेश में तथा हिमांचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर में भी पैदा होता है । हिमांचल प्रदेश तथा जम्मू काश्मीर प्रदेशों में लीसा पर कोई टैक्स नहीं लगता है । मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि इस टैक्स को माफ कर दिया जाय जिससे इसका मार्केट बढ़ सके । अब मैं नैतीताल तथा कुमायूं में तराई के वनों के सम्बन्ध में कुछ कहूंगा जिनसे हमारा बड़ा संबंध है । आप नैनीताल की तराई में जाकर देखें कि 9 जलाशय बने हैं । जहां हजारों आदमी निकाले गये और अब सरकार प्रयास करती है कि उन्हें पुनर्वासित करे । इसके लिए उन्हें भूमि दी जाय । परन्तु वन विभाग उन कटे हुए मैदानों में फिर से प्लान्ट लगा रहे हैं जिससे उन गरीबों को भूमि नहीं मिल पा रही है । इसलिए वन विभाग जो रुढ़िवादी रवैया अपनाए हुए हैं उसको बदले और गरीबों को उस भूमि को रहने एवं खेती करने के लिए दे । इन शब्दों के साथ जो हमारे वित्त मन्त्री जी ने बजट प्रस्तुत किया है उसका मैं समर्थन करता हूं ।

*श्री भाभी--

अधिष्ठाता महोदय वित्त मन्त्री जी द्वारा जो यह बजट प्रस्तुत किया गया है वह सामन्तवादी और पूंजीवादी बजट है । इसमें समाजवाद बिल्कुल नहीं है । श्रीमन् इस बजट से किसी की भी आवश्यकता जो इन्सान की खेती हैं पूरे प्रदेश में उन आवश्यकताओं

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री भामी]

को पूरा करने वाला बजट नहीं है। श्रीमन्, सबको मालूम है कि हर इन्सान को 5 चीजों की आवश्यकता होती है। सबसे पहली आवश्यकता इन्सान की होती है भोजन की, दूसरी कपड़े की, तीसरी रहने के लिए मकान की, चौथी बीमार पड़ने पर दवा की और पांचवीं आवश्यकता होती है बच्चों की पढ़ाई व लिखाई की। यह पांच आवश्यकतायें जो हैं वह इस बजट से हल होने वाली नहीं हैं। फिर सोचना पड़ेगा कि अधिष्ठाता महोदय आखिर यह जो पांच जरूरत की चीजें हैं ये पूरी कैसे होती हैं तो उसके लिए आमदनी की जरूरत होती है। फिर सोचना पड़ेगा कि आमदनी कैसे होती है। आमदनी का सबसे बड़ा जरिया खेती, दूसरा जरिया नौकरी और तीसरा जरिया उद्योग धंधे होते हैं। फिर सोचना पड़ेगा कि श्रीमन् 26-27 सालों में यह सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार के राज्य में जिनके पास ज्यादा जमीन थी, जो भूमिहीन लोगों के अधिकार को दबाये बैठे हैं, वह आज भी हैं। भूमिहीनों, हरिजनों की जमीन रखने वाले लोग 27 सालों में ज्यों के त्यों बने हुए हैं। मेरा सुझाव यह है कि जिनके पास ज्यादा जमीन है उनकी जमीन भूमिहीनों और हरिजनों को दी जाय। उसी तरह से नौकरियों के सिलसिले में मैं कहना चाहता हूं कि जिनके ज्यादा तनख्वाह है उनकी तनख्वाह तो बढ़ाई जा रही है लेकिन जो कम तनख्वाह वाले छोटे कर्मचारी हैं उनकी तनख्वाह कम है, उनको कोई परवाह नहीं की जा रही है। कैसे आमदनी में समानता आयेगी, कैसे घटाव और बढ़ाव में फर्क मिटेगा।

इसी तरह से श्रीमन् जो मिल मालिक हैं बड़े रोजगार वाले हैं, बड़े उद्योगपति हैं वह छोटे उद्योग धंधों वाले लोगों को मार रहे हैं। गांव में जब हम लोग जाते हैं तो लोहार का धंधा गया, बढ़ई का धंधा गया, जितने छोटे देहाती उद्योग धंधे हैं हथ करघे का उद्योग धंधा है और भी छोटे-छोटे उद्योग धंधे हैं जिनसे लोग अंग्रेजों के जमाने से लोग चलाकर अपना पेट भरते थे, लेकिन हाय रे सरकार, स्वराज्य आने के बाद छोटे उद्योग धंधे वालों की आमदनी बिल्कुल मर गई और पूंजीपति और बड़े उद्योग धंधे वाले उद्योगपतियों की आमदनी आज जमीन से आसमान छू रही है। यही नहीं इसी तरह से जो बड़े अफसर हैं बड़े मिनिस्टर हैं बड़े लोग हैं उनकी आमदनी ज्यादा है लेकिन आज भी चौकीदार बेचारा गांव का, सोचने की बात है, महीने में दो-तीन बार थाने में पहरा दे, गांवों में रोजाना रात भर पहरा दे---जिस पर रक्षा का भार है, उसकी तनख्वाह 8 रुपए। बड़े दुख की बात है। जो गांव का रक्षा करने वाला है रक्षक है चौकीदार है उससे आप चाहते हैं वह 8 रुपया महीना पर गांव की रक्षा करे, क्या वह कर सकेगा।

डा0 लोहिया कहा करते थे कि छोटे कर्मचारी की तनख्वाह कम से कम 150 रुपए होनी चाहिए, इससे कम नहीं होती चाहिए और बड़े बड़े अफसरों की तनख्वाह ज्यादा से ज्यादा 1500 रुपए। यानी 1---10 का फर्क रहना चाहिए इससे ज्यादा नहीं। यही नहीं डा0 लोहिया बराबर कहा करते थे कि जो लोग भूमिहीन हैं, कम जमीन वाले हैं, ज्यादा जमीन वालों को कम जमीन करनी होगी और निकली हुई जमीन भूमिहीनों में बांटनी होगी। मैंने इसी सदन में अपने 1969-74 के जीवन काल में जब मैं विधायक रहा, सुझाव दिया था कि जमीन की सीमा साढ़े 12 एकड़ होनी चाहिए, यही नहीं मैंने यह भी कहा था कि आपने जो सबसे छोटी जोत एक एकड़ मानी है तो एक एकड़ से लेकर और जितनी सीमा आपने बांधी है प्रति एकड़ के हिसाब से दो-दो बिस्वा के हिसाब से जमीन ले ली जाय।

(इस समय 5 बजकर 50 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

ताकि हर गांव में कुछ जमीन निकल आये जिससे हरिजन बेचारे का मकान बन सके, भूमिहीन को कुछ जमीन दी जा सके लेकिन वाह रे सरकार जब जमीन सब लोग बेच चुके, सारी जमीनों का इन्तजाम भाई भतीजे, रिश्तेदार, यहां तक कि अपने हाथी, घोड़े के नाम से जमीन

कर चुके तब सरकार के सामने सीमा बांधने की बात आयी। हमने सोचा था कि सीमा बंधेगी तो पहले से प्रतिबन्ध लगाया जायगा लेकिन वह रे सरकार, वाह रे पूंजीवादी तत्व के लोगों सीमा इस तरह से बंधी कि कुछ जमीन नहीं निकली।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि पार्लियामेंट के चुनाव में जिस पार्टी की सरकार है उसकी तरफ से कहा गया था कि हमारी हुकूमत बनेगी तो हम गरीबी, बेकारी मिटायेंगे और समाजवाद लायेंगे लेकिन मिटाने और कम करने की बात कौन कहे गरीबी और बेकारी और बढ़ी है। गरीब ने सोचा था कि इस पार्टी की सरकार बनेगी तो हमारी गरीबी और बेकारी मिटेगी लेकिन जैसे लाट्री बेचने वाला कहता है कि एक रुपया की लाट्री खरीदो तो तुमको 50 हजार रुपया मिल जायगा वैसे ही गरीब ने लाट्री खरीदी लेकिन लाट्री पल्ले पड़ी पूंजीपति के। गरीब तो और गरीब हुआ और पूंजीपति की आमदनी और बढ़ी। मैं बताना चाहता हूं कि पार्लियामेंट के चुनाव में 6 करोड़ कई लाख वोट सत्तारूढ़ दल को मिले, 8 करोड़ कई लाख वोट विरोधी दल को मिले थे। 13 करोड़ कई लाख लोग वोट देने ही नहीं आये। 1/5 के बहुमत से आप क्यों घमंड करते हैं?

इसी तरह से विधान सभा में 32 परसेंट वोट सत्तारूढ़ कांग्रेस को मिले और वह भी जैसा कि मानना पड़ेगा आप चाहे न माने लेकिन हम महसूस करते हैं कि बड़ी बेईमानी और चोरी हुई। 68 तिशत वोट विरोधी दलों को मिले। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से बतलाना चाहता हू चाहे इधर के बैठने वाले लोग हों या उधर के बैठने वाले लोग हों कि 60-61 में एक आदमी की औसत आमदनी जो बजट में दिखाई गई है 246 रुपया थी। 73-74 में 273 रुपया। यानी 27 रु0 की बढ़ोत्तरी। लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि आजमगढ़ में एक आदमी की औसत आमदती 178 रुपया है। यही नहीं आप दूसरे देशों की बात करते हैं। मैं अपने देश भारतवर्ष, हिन्दुस्तान की बात कहता हूं कि आजमगढ़ के एक आदमी की औसत आमदती 178 रुपया है लेकिन बम्बई और कलकत्ता में एक आदमी की औसत आमदनी डेढ़ हजार रुपया है। आप दूसरे देशों की तुलना करते हैं। मैं कहता हूं पहले अपने देश से तुलना करें। हमारे पूर्वी जिलों के लोग, आजमगढ़,गाजीपुर, गोरखपुर, बलिया, देवरिया और बस्ती के लोग कब तक बरदाश्त करेंगे। मान्यवर, बंगला देश और पाकिस्तान की लड़ाई आमदनी की ना-बराबरी पर हुई। बंगला देश की प्रति व्यक्ति आमदनी 350 रुपए थी और पाकिस्तान की 700 रुपए थी। दुगना का फर्क था। यहां हमारे यहां 10 गुना का फर्क है। कैसे काम चलेगा। मैं आज सरकारी दल के लोगों से पूछना चाहता हूं कि वह अपने यहां घर पर लोगों से पूछें कि भरपेट भोजन मिल रहा है कि नहीं। मान्यवर, इस तरह काम नहीं चलेगा। कमजोर को पीछे धकेल रहे हैं और जो आगे बढ़ रहे हैं, उनको और पीछे से हाथ लगाकर बढ़ा रहे हैं। केवल योजनाओं की डींग हांककर काम नहीं चलने वाला।

मान्यवर, इस प्रदेश में प्रशासन के नाम पर कोई चीज नहीं रह गयी है। भ्रष्टाचार चोरी, डकैती, कत्ल, ब्लैकमार्केटिंग, रिश्वतखोरी, जिनको नहीं होना चाहिए, उनकी बढ़ोत्तरी हो रही है आज इस देश और प्रदेश में और जिन चीजों की आवश्यकता है, वे इस बजट से पूरी होने वाली नहीं हैं। देहात के लोग कहते हैं—»»

"समुन्दर में पानी बरसता रहे, रेता विचारा तरसता रहे"

इस देश और प्रदेश के गरीब आज भोजन के लिए तरस रहे हैं, मकान के लिए तरस रहे हैं, दवा के लिए तरस रहे हैं, बच्चे पढ़ाई के लिए तरस रहे हैं। मैं कहता हूं कि सबके बच्चे बराबर हैं। सभी के बच्चों को पढ़ाई का मौका मिलना चाहिए चाहे मसलमान हों, चाहे बड़े हों, चाहे छोटे। बच्चों का क्या कसूर? आपको शिक्षा निःशुल्क देना

[श्री भार्गव]

चाहिए। अगर नि:शुल्क न कर सकें तो कम से कम हाई स्कूल-इन्टर तक नि:शुल्क कर दें।

लगान के बारे में मान्यवर निवेदन है कि अलाभकर जोत पर लगान माफ होना चाहिए इन शब्दों के साथ मैं जो 1974-75 का बजट पेश करता हुआ है, उसका विरोध करता हूं।

नियम 51 के अन्तर्गत सूचनाएं

श्री अध्यक्ष--

बाबूलाल शर्मा और कमलेश्वर प्रसाद वर्मा का नियम 51 में स्वीकार कर लिया है। शेष अस्वीकृत हैं।

श्री रामसेवक यादव (जिला बाराबंकी)--

नियम 56 में अपने सुबह कहा था....

श्री अध्यक्ष--

आ जायेगा तो दे देंगे। आप भेज दें।

अब हम उठते हैं और सोमवार को 11.00 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 5 बजकर 59 मिनट पर सोमवार 24 जून, 1974 के 11 बजे दिन तक के लिए स्थगित हो गया।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
21 जून, 1974।

नत्थी "क"

(देखिए तारांकित प्रश्न सं0 5 का उत्तर पीछे पृष्ठ 951 पर।)

गोरखपुर जिले में उपलवृष्टि से 50 प्रतिशत या उससे अधिक क्षतिवाले गांवों की सूची

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र मुन्डेरा तहसील सदर

1—जगदीशपुर
2—केशोपट्टी केवलाचक
3—विलारी
4—सरया
5—अयोध्याचक
6—बघाड़ा
7—गोविन्दगंज
8—केवला डावर
9—सथरी
10—फुलवरिया
11—बसहिया
12—खैराबाद
13—बसडीला
14—टोलाटारी
15—अहिरौली
16—टेंडनापार

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र पिपराइच तहसील सदर

17—कोनी
18—मठिया
19—भटमांवा
20—महापार

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र, लक्ष्मीपुर तहसील फरेंदा

1—धौरहरा
2—धरगववा उर्फ गनवरिया
3—फरेंदा
4—कुनसेरवा
5—महुअवा
6—हथिहवा
7—आराजी सरकार उर्फ जोत फरेंदा
8—कुनसेरी उर्फ विशनपुरा
9—सोनीपिपरी
10—गनेशपुर
11—सूर्यपुरा
12—वरनहवा
13—सिसवा उर्फ सोरिया
14—सिसवनिया उर्फ शीशमहल
15—सिरसिया खास
16—चकदहा
17—जमुहानी
18—पुरुषोत्तमपुर
19—सिरसिया मझरकी
20—हरलालगढ़
21—बैकुंठपुर
22—महदेईया
23—जारा
24—रतनपुर
25—कोहडवक
26—परसाशुमाली
27—जगरनाथपुर
28—पूरैनिहा
29—त्रिलोकपुर
30—पोखरभिण्डा
31—सुकरौली
32—लक्ष्मीनगर
33—नौनिया
34—आराजी सरकार उर्फ केवटलिया
35—विशुनपुरा
36—गंगवलिया
37—परसा
38—श्यामकाट
39—जुगौली
40—असुरौला
41—परसा मलिक
42—कोहरागढ़ी
43—शिवपुरी
44—बसनी
45—तरैनी
46—पिपरहिया
47—सगरहवा
48—जिगौना
49—दोगहरा
50—गनघपुर

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र लक्ष्मीपुर सदर फरेंदा

51—सेमरहनी
52—भगवतनगर परसिया
53—उबितपुर
54—बैकुंठनगर
55—फरेंदा बुजुर्ग
56—पकड़डीहा राजा
57—बाजार डीह
58—बनकटा
59—बनकटी
60—सेखुई
61—परसावेनी
62—लेजार महदेवा
63—रतनपुर उर्फ भरथीपुर
64—औडवलिया
65—चौतरवा
66—परसिया खुर्द
67—परासखांड़
68—महुअवा उर्फ महुई
69—पिपरा
70—बरगदवा
71—सिंहपुर अयोध्या
72—पिपरा बल्ली

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र महाराजगंज तहसील महराजगंज

1—सिंहपुर
2—सिसवा
3—बड़हरा
4—बरवाफहीम
5—सरायखुटहा
6—पकड़ी
7—सेन्दुरिया
8—भागाटार
9—परसाचक गोवरही
10—अमसहा
11—पिपराकत्थान
12—मोरवन
13—सोनवल
14—परसामोर
15—खजरिया
16—नन्दामार
17—पकड़िया खुर्द
18—केवलापुर कलां
19—मोगीरिया राजा
20—बड़हरामोर
21—पतेहुगवा
22—लेबवा
23—रामपुरमोर
24—मोहनपुर
25—रम्हौली
26—कोंध
27—बंजनाथपुर खुर्द
28—खुटहा
29—मुड़िला

30—गोपी
31—बलुआ
32—चकबेलन्डा
33—मधुवनी
34—बसवार
35—पिपरा
36—मठिया
37—खोष्टा
38—पिपरिया गुरु गोविन्द राम
39—लक्ष्मीपुर एकडंगा
40—नन्दना
41—विश्वनाथपुर उर्फ पड़वनियां
42—पकड़ी सिसवा
43—विशुनपुर भड़ेडर
44—गोपाला
45—मुड़ेरा खुर्द
46—बसंतपुर खुर
47—बौलिया बाबू
48—मथनियां
49—परषोत्तमपुर
50—सोनबरसा
52—हरिद्वार पुर
53—मुजहना बुजुर्ग
54—सिसवनियां
55—पिपरानारायन
56—मानिकराय
57—मिश्रौलिया
58—पड़रीखुर्द

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र महराजगंज, तहसील सिसवा

59—वरवाकृपाल
60—मोखन
61—डढ़िया
62—जैश्री
63—आमूतालाव
64—रामपुर
65—वैदौली
66—करवली
67—चन्दा
68—निचलौल
69—बनकटा
70—हर्रेडीहा
71—कलनही खुर्द
72—कलनही कलां
73—औरहिया
74—कठया
75—वजही
76—कुड़िया
77—पिपरपाती
78—सेयरा
79—ठूठीवारी
80—भरवलिया
81—लक्ष्मीपुर कलां
82—रामनगर
83—किशुनपुर
84—सोबड़ा
85—वोदना
86—पिपरपाती
87—कटखीर
88—मैरी
89—बकुडिहा
90—लोहरौली
91—नौवाबारी
92—नौनिया
93—तुरकहिया
94—अहिरौली
95—मझगांवा
96—कड़जा
97—करदह
98—गड़ौरा
99—गड़ौरी
100—चटिया
101—रमपुरवा
102—निपनिया
103—खसरहा
104—शीतलापुर
105—रेंगहिया
106—घमउर
107—लक्ष्मीपुर खुर्द
108—हरखीड़ा
109—देउरवा
110—आराजी आलमसिंह
111—वसुली
112—बड़हरी
113—बड़हरा वरगहा
114—वरवासालिकराम
115—पिपरिया
116—मेहदिया
117—शेषपुर
118—मटियरिया
119—मध वलिया
120—रानीपुर
121—अहिरौली
122—मझौवा
123—मुड़ेरी
124—भगुरहा
125—वेलासपुर
126—बन्दी
127—बसडीला
128—होरतापुर
129—फटकदौनता
130—सोफड़ा
131—बड़हरा महन्थ
132—खड़ुरी
133—गौरा
134—बरवाकला
135—वरियारपुर
136—वरवाडिगम्बुर
137—पड़री उर्फ मीरगंज
138—रतनपुर
139—मुड़ेरी
140—रामपुर कलां
141—लक्ष्मीपुर कोर्ट
142—खजुरिया
143—आराजी बैरिया

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र पनियरा तहसील महराजगंज

144—रुद्रपुर
145—खजुरिया
146—हसखोरी
147—बहमपुर
148—पिपरादगाह
149—खैंचा
150—ओसानी
151—मिठौरा
152—कमताखुर्द
153—चुनवटिया
154—मठुअवा
155—कमत बुजुर्ग
156—रामपुर बोदरिया
157—दमड़ीगीर
158—जे० बाकी तुलड़ा नं० 11
159—चन्दनचाफी
160—नेवासपोखर

विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र श्यामदउरवा, तहसील महराजगंज

161—बभनौली
162—बेहलिया
163—अहिरौली
164—विशुनपुरघाट
165—पिपरिया करंजहा
166—बैरिया
167—सिरसिया
168—पुरना खण्डी चौरा
169—किशुनपुर
170—गनेशपुर
171—पचरुखियया
172—डेरवा
173—रुद्रपुर
174—तरकुलवा
175—गंगराई
176—बलुआ
177—विशुनपुरा खुर्द
178—बेलवा बुजुर्ग
179—बरगदही
180—गोपाला
181—सेमरहिया
182—सेमरा चन्दौली
183—छपिया
184—सोहसा बासगर
185—चौपरिया
186—बनकटिया
187—परसा बुजुर्ग
188—मिर्जापुर पकड़ी
189—जमुनिया
190—सिसवा मुण्डी
191—बरियारपुर
192—लक्ष्मीपुर
193—पिपरौती
194—हरखा
195—हरखी
196—पकड़ियार बिशुनपुर
197—धरमौली
198—इमिलिया
199—पिपरा ब्रह्मन उर्फ बारोगांव
200—महावनखोर उर्फ बड़हरा
201—अहिरौली
202—परतावल
203—घनगढा
204—लखिमा
205—घनहा
206—रामपुर
207—मोहउद्दीनपुर
208—माधोपुर
209—लक्ष्मीपुर देउरवा
210—विशुनपुरा
211—बैरिया
212—उस्का

नत्थी "ख"

(देखिये तारांकित प्रश्न 10 का उत्तर पीछे पृष्ठ 961 पर)

तालिका

1—श्री कैलाश चन्द्र सारस्वत
2—श्री मंगल राम
3—श्री रामेश्वर तिवारी
4—श्री जगदीश सिंह
5—श्री सुरेन्द्र नाथ मिश्रा
6—श्री राज किशोर शर्मा
7—श्री राजेन्द्र सिंह तोमर
8—श्री बृजबिहारी लाल श्रीवास्तव
9—श्री महेश नारायण मिश्रा
10—श्री राम शंकर शुक्ला
11—श्री श्याम किशोर निगम
12—श्री नरेन्द्र चन्द्र जोशी
13—श्री केदार सिंह आर्य
14—श्री राम चन्द्र सिंह यादव
15—श्री अविनाश चन्द्र सिंह
16—श्री लक्ष्मी नारायण श्रीवास्तव
17—श्री सुभाष चन्द्र रस्तोगी
18—श्री सत्य मान सिंह
19—श्री बंशीधर
20—श्री देवराज राम
21—श्री ओम प्रकाश खरे
22—श्री खजान सिंह केन
23—श्री राधेश्याम गुप्ता
24—नरेन्द्र बहादर श्रीवास्तव
25—श्री मोहन सिंह कहेरिया
26—श्री ज्वाला राम मुकेश
27—श्री बाब राम
28—श्री प्रयाग नारायण शुक्ला
29—श्री जोख राम
30—श्री ज्वाला प्रसाद
31—श्री उदय नारायण सचान
32—श्री सुरेन्द्र कुमार तिवारी
33—श्री कृष्ण कान्ति पाठक
34—श्री धर्म सिंह कश्यप
35—श्री जनार्दन प्रसाद तिवारी
36—श्री लक्ष्मण प्रसाद त्रिपाठी
37—श्री मिश्री प्रसाद सिंह
38—श्री दान बहादुर सिंह
39—श्री राम कृष्ण शर्मा
40—श्री रामजी
41—श्री वंश बहादुर सिंह

विधान सभा के द्वितीय सत्र 1974 के 2रे शुक्रवार के लिए निर्धारित श्री शिव सम्पति राम के तारांकित प्रश्न संख्या 10 के उत्तर में सन्दर्भित

द्वितीय तालिका

1—श्री कैलाश चन्द्र सारस्वत
2—श्री मंगल राम
3—श्री रामेश्वर तिवारी
4—श्री जगदीश सिंह
5—श्री सरेन्द्र नाथ मिश्रा
6—श्री राज किशोर शर्मा
7—श्री राजेन्द्र सिंह तोमर
8—श्री धर्म सिंह कश्यप
9—श्री जनार्दन प्रसाद तिवारी
10—श्री लक्ष्मण प्रसाद त्रिपाठी
11—श्री मिश्री प्रसाद सिंह
12—श्री दान बहादुर सिंह
13—श्री राम कृष्ण शर्मा
14—श्री राम जी
15—श्री वंश बहादुर सिंह
16—श्री बृज बिहारी लाल श्रीवास्तव
17—श्री महेश नारायण मिश्रा
18—श्री रमा शंकर शुक्ला
19—श्री श्याम किशोर निगम
20—श्री नरेन्द्र चन्द्र जोशी
21—श्री केदार सिंह आर्य
22—श्री राम चन्द्र सिंह यादव
23—श्री अविनाश चन्द्र सिंह
24—श्री लक्ष्मी नारायण श्रीवास्तव
25—श्री सुभाष चन्द्र रस्तोगी
26—श्री सत्य मान सिंह
27—श्री बंशीधर
28—श्री देवराज राम
29—श्री ओम प्रकाश खरे
30—श्री खजान सिंह केन

31—श्री राधेश्याम गुप्ता
32—श्री नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव
33—श्री मोहन सिंह कहेरिया
34—श्री ज्वाला राम मुकेश
35—श्री बाबू राम
36—श्री प्रयाग नारायण शुक्ला
37—श्री जोखूराम
38—श्री ज्वाला प्रसाद
39—श्री उदय नारायन सचान
40—श्री सुरेन्द्र कुमार तिवारी
41—श्री कृष्ण कान्त पाठक

विधान सभा सचिवालय

नत्थी "ग"

(देखिये अतारांकित प्रश्न सं0 4 का उत्तर पीछे पृष्ठ 968 पर)

ग्राम रामनगर गूलर घट्टी में अग्निकाण्ड से प्रभावित व्यक्तियों की सूची

1—श्री शेर मोहम्मद पुत्र इस्माईल सा0 रामनगर (गूलरघट्टी)।
2—श्री रफीक अहमद पुत्र चन्दा ,,
3—श्री हमीदन बेवा छिन्ना ,,
4—श्री मुबारक पुत्र अब्दुल अजीज ,,
5—श्री रफीक अहमद पुत्र मोहम्मद यामीन
6—मोहम्मद हनीफ पुत्र मो0 हमीद ,,
7—श्री यामीन पुत्र वृद्धा ,,
8—श्री मुश्ताक हुसेन पुत्र मो0 इस्माईल। ,,
9—श्री अलदिया पुत्र नूर बख्श ,,
10—श्री इब्राहीम पुत्र अल्लादिया ,,
11—श्री अब्दुल रहीम पुत्र मोहम्मद इस्माईल। ,,
12—श्री मोहम्मद रशीद पुत्र लाल मोहम्मद ,,
13—श्री साबिर पुत्र शेर मोहम्मद ,,
14—श्री मोहम्मद मद्दीक पुत्र अलीबख्श। ,,
15—श्री बाबू ड्राइवर पुत्र मोहम्मद उमर ,,
16—श्री अब्दुल रहमान पुत्र अब्दुल्ला रामनगर (गूलरघट्टी)
17—श्री इकबाल पुत्र रफीक ,,
18—श्री इस्माईल पुत्र नूरबख्श ,,
19—श्री अब्दुला पुत्र नूरबख्श ,,
20—श्री नूर हसन टीचर पुत्र इस्माईल ,,
21—श्री अमीर हुसैन पुत्र अब्दुल हमीद ,,
22—श्री रफीक अहमद पुत्र अब्दुल रहमान ,,
23—श्री अब्दुल रहमान पुत्र न्यादर ,,
24—श्री मो0 सिद्दीक पुत्र अल्लाबख्श ,,
25—श्री अब्दुल रशीद पुत्र अब्दुल्ला ,,
26—श्री बुन्दू पुत्र नन्हें ,,
27—श्री अबरार पुत्र अब्दुल रसीद ,,
28—श्री मेंहदी हसन पुत्र नूरबख्श ,,
29—श्री अब्दुल रज्जाक पुत्र अल्लदिया ,,
30—श्री अब्दुल रहीम पुत्र अल्लादिया ,,
31—श्री मुबारक पुत्र नूरबख्श ,,
32—युसूफ पुत्र नूर बख्श ,,
33—शफीक अहमद पुत्र अब्दुल हमीद ,,

नत्थी "घ"

(देखिये अतारांकित प्रश्न 5 का उत्तर पीछे पृष्ठ 968 पर)

माह मार्च तथा अप्रैल, 1974 में जिला बस्ती के विकास खण्ड मेंहदावल, सेमरियांवा तथा बघौली में अग्निकांडी का विवरण

नाम ब्लाक	क्रम-सं0	नाम ग्राम	जन जो प्रभावित हुए	क्षति की धनराशि	अनुदान की धनराशि जो वितरित हुआ
1	2	3	4	5	6
मेंहदावल विकास खण्ड	1	बाधनगर उर्फ बखिरा	3	1,040	150
	2	जगदीशपुर	2	3,266	100
	3	मुरापाली	2	3,700	..
	4	कम्हरिया	2	1,852	120
सेमरियांवा विकास खण्ड।	1	जगदीशपुर उर्फ लटुरादेवा।	3	3,600	100
	2	तिलेंजा	1	550	..
	3	घिसवा दाखिली	1	550	..
	4	छपिया छितौना	1	900	50
	5	बुद्धानगर	2	2,870	..
	6	तिलजा	5	3,105	250
	7	असनहरा	2	1,500	..
	8	तिलजा	1	240	..
	9	किनौना कुरिखिया	1	325	50
	10	रमवापुर	1	572	40
	11	काठगंगा	1	1,350	..
	12	सेमरियांवा	40	39,716	2,300
	13	सेथबलिया मुठहरा	2	2,325	80
	14	बसांवा	3	7,050	120
बघौली विकास खण्ड	1	जंगलउन	1	515	..
	2	जंगल खुर्द	1	1,350	50
	3	उजरौरी खुर्द	1	2,750	40
	4	शाहपुर	1	1,570	..
	5	बालूशासन	1	1,700	40
	6	बरहटा	1	1,700	50
	7	सतौहा	1	1,900	50
	8	बंधवा	1	1,100	40
	9	जंगलउन	1	1,680	40
		योग ..	82	89,576	3,670

नत्थी "ङ"

(देखिये नत्थी पीछे पृष्ठ 974 पर)

उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) (संशोधन) विधयक, 1974

उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) अधिनियम, 1972 का अग्रेतर संशोधन करने के लिये

विधेयक

भारत गणराज्य के पच्चीसवें वर्ष मे निम्नलिखित अधिनियम बनाया जाता है :--

संक्षिप्त नाम तथा प्रारम्भ

1--(1) यह अधिनियम उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) (संशोधन) अधिनियम, 1974 कहलायेगा ।

(2) यह 1 अप्रैल , 1974 से प्रवृत्त समझा जायगा ।

उत्तर प्रदेश अधिनियम संख्या 13, 1972 की धारा 3 का संशोधन

2--उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) अधिनियम, 1972, जिसे आगे मूल अधिनियम कहा गया है, की धारा 3 में--

(1) खण्ड (ग) में उसके प्रतिबन्धात्मक खण्ड के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिबन्धात्मक खण्ड रख दिया जाय, अर्थात्--

"प्रतिबन्ध यह है कि इस खण्ड की किसी बात से यह न समझा जायगा कि इससे जिला मजिस्ट्रेट की धारा 33 के अधीन परिवाद करने, या उसे करने के लिये प्राधिकृत करने की अपनी शक्ति को प्रतिनिहित करने की शक्ति प्राप्त है"

(2) खंड (ङ) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड रख दिया जाय, अर्थात्--

"(ङ) "नियत प्राधिकारी" का तात्पर्य किसी ऐसे अधिकारी से है जिसे मुन्सिफ या प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट अथवा कार्यपालिका मजिस्ट्रेट के रूप में कम से कम तीन वर्ष का अनुभव हो और जो इस अधिनियम क अधीन नियत प्राधिकारी के सभी या किन्हीं शक्तियों, कृत्यों और कर्तव्यों का प्रयोग, सम्पादन तथा पालन करने के लिय राज्य सरकार क सामान्य या विशेष आदेश द्वारा प्राधिकृत हो, और भिन्न-भिन्न क्षेत्रों अथवा मामलों या मामलों के वर्गों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न अधिकारियों को इस प्रकार प्राधिकृत किया जा सकता है ।"

संक्रमणकालीन उपबन्ध

3--इस अधिनियम द्वारा मूल अधिनियम का संशोधन होने पर भी, मूल अधिनियम में यथापरिभाषित नियत प्राधिकारी, जैसा वह इस अधिनियम के प्रारम्भ होने के पूर्व था, के समक्ष संस्थित या उसको अन्तरित, अथवा मूल अधिनियम की धारा 3 के खण्ड (ङ) के अधीन जिला मजिस्ट्रेट द्वारा ऐसे प्राधिकारी से वापस मंगाया गया, और 1 अप्रैल, 1974 के ठीक पूर्व ऐसे प्राधिकारी या जिला मैजिस्ट्रेट के समक्ष विचाराधीन, प्रत्येक आवेदन पत्र या कार्यवाही, यथास्थिति, ऐसे प्राधिकारी या जिला मैजिस्ट्रेट द्वारा सुनवाई की जाती रहेगी और निर्णीत की जायगी ।

उद्देश्य और कारण

उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराये तथा बेदखली का विनियमन) अधिनियम, 1972 की धारा 3 के खण्ड (ङ) के अधीन जिला मजिस्ट्रेट उक्त अधिनियम के प्रयोजनार्थ किसी प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट को नियत प्राधिकारी के रूप में प्राधिकृत करने के लिये सशक्त था। उस प्राविधान के अधीन कार्यपालिका मजिस्ट्रेटों को नियत प्राधिकारी नियुक्त किया गया था। 1 अप्रैल, 1974 से दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 के प्रारम्भ होने पर, कार्यपालिका मैजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट नहीं रहे हैं। अतएव, उक्त अधिनियम की धारा 3 के खण्ड (ङ) के उपबन्धों में संशोधन किया जा रहा है ताकि राज्य सरकार द्वारा नियत प्राधिकारी की शक्तियां किसी ऐसे अधिकारी को प्रदत्त की जा सके जिसे मुंन्सिफ या प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट या कार्यपालिका मजिस्ट्रेट के रूप में कम से कम तीन वर्ष का अनुभव हो।

तदनुसार यह विधेयक पुरःस्थापित किया जाता है।

राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी,
खाद्य एवं रसद मंत्री।

पी० एस० यू० पी०—इ० पी० 71 वि० सभा—1974—(1129)—835.